सत्यमेव जयते

नगर सौरभ

अंक: 15 वर्ष 2024-25

भारत

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), फरीदाबाद

नराकास (का.), फरीदाबाद में राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियां

संदेश

एन.एच.पी.सी
NHPC
एक नवरत्न कंपनी

अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक
एनएचपीसी लिमिटेड
एवं
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय),
फरीदाबाद

'भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति की संवाहिका और पहचान का आधार होती है।'

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि **'नगर सौरभ'** के 15वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अवसर पर मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई देता हूँ। यह पत्रिका केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता, रचनात्मकता और सामूहिक प्रयासों का जीवंत प्रतीक है।

किसी भी राष्ट्र की भाषा उसकी संस्कृति, परंपरा और साहित्यिक चेतना को संजोने का कार्य करती है। यह गर्व का विषय है कि भारत जैसे विविध भाषाओं वाले देश में हिंदी न केवल जनमानस की अभिव्यक्ति का माध्यम है बल्कि राष्ट्र की आत्मा भी है। हिंदी की सरल, सहज और समावेशी प्रकृति उसे विशेष बनाती है और यही कारण है कि आज वह शिक्षा, प्रशासन, शोध, मीडिया, तकनीक और संचार के हर क्षेत्र में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल युग में भी हिंदी का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है और यह हर्ष का विषय है कि राजभाषा हिंदी, परंपरा के साथ-साथ आधुनिकता की ओर भी समान रूप से अग्रसर है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), फरीदाबाद के अंतर्गत सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा वर्ष भर की गई राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियों, आयोजनों, कार्यशालाओं और प्रतियोगिताओं का समग्र प्रतिबिंब इस अंक में देखने को मिलता है। यह देखकर प्रसन्नता होती है कि सभी कार्यालयों ने साहित्यिक एवं तकनीकी रचनाओं के माध्यम से इस अंक को समृद्ध किया है।

'नगर सौरभ' न केवल हिंदी के प्रचार-प्रसार का माध्यम है, बल्कि यह एक ऐसा सांस्कृतिक पुल है जो विभिन्न कार्यालयों, रचनाकारों और पाठकों को एक साझा मंच प्रदान करता है। मैं इस अवसर पर सभी सदस्य कार्यालयों, रचनाकारों तथा संपादक मंडल को हृदय से धन्यवाद एवं बधाई देता हूँ, जिनके परिश्रम और समर्पण से यह अंक संभव हो पाया है।

आइए, हम सभी यह संकल्प लें कि हिंदी को केवल राजभाषा के रूप में नहीं बल्कि राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक गौरव और आत्मीय संवाद के सशक्त माध्यम के रूप में और भी समृद्ध और सशक्त बनाएं।

शुभकामनाओं सहित,

राज कुमार चौधरी

(राज कुमार चौधरी)

संदेश

एनएचपीसी NHPC
एक नवरत्न कंपनी

निदेशक (कार्मिक)
एनएचपीसी लिमिटेड
फरीदाबाद

किसी भी देश की भाषा वहां की सांस्कृतिक आत्मा, साहित्यिक विरासत और सामाजिक चेतना की वाहिका होती है। भारत जैसे विविधता से परिपूर्ण राष्ट्र में भाषाओं का सह-अस्तित्व हमारी बहुलतावादी परंपरा का प्रमाण है। यह देखकर गर्व होता है कि भारत की पावन भूमि पर अनेक भाषाएं और बोलियां न केवल सह-अस्तित्व में हैं बल्कि सदियों से पारस्परिक रूप से समृद्ध भी होती आ रही हैं।

हिंदी इन भाषाओं में एक ऐसी शक्ति है जो सरलता, सहजता और सर्वसमावेशिता के गुणों के कारण जन-जन से जुड़ने की क्षमता रखती है। यही कारण है कि आज शिक्षा, प्रशासन, साहित्य, मीडिया, विज्ञान, तकनीक और डिजिटल संवाद जैसे विविध क्षेत्रों में हिंदी का प्रभाव और प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है।

आज के सूचना-प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया के युग में हिंदी की उपस्थिति और विस्तार विशेष रूप से उत्साहजनक है। हिंदी ब्लॉग्स, पॉडकास्ट, यूट्यूब चैनल, तकनीकी शब्दावली और डिजिटल पाठ्य सामग्री के माध्यम से यह भाषा नवाचार और परंपरा दोनों को साथ लेकर चल रही है। यह बदलाव केवल भाषिक नहीं, सांस्कृतिक परिवर्तन का भी संकेत है।

इस सकारात्मक परिवर्तन में हमारी नराकास के सदस्य कार्यालयों की भूमिका भी अत्यंत सराहनीय है। हमारे कार्मिक हिंदी की मूल भावना, सांस्कृतिक जड़ों और सामाजिक जिम्मेदारी को साथ लेकर आगे बढ़ रहे हैं।

'नगर सौरभ' का यह 15वां अंक इन्हीं विचारों और प्रयासों को समर्पित है - जहां साहित्य, भाषा, तकनीक और भावनाएं एक साथ मिलकर एक सुंदर हिंदी यात्रा का निर्माण करती हैं। मैं आशा करता हूँ कि **'नगर सौरभ'** पत्रिका का यह अंक पाठकों में हिंदी के प्रति और अधिक जागरूकता एवं स्नेह का संचार करेगा।

शुभकामनाओं सहित,

(उत्तम लाल)

संपादकीय.....

एनएचपीसी NHPC
एक नवरत्न कंपनी

महाप्रबंधक (जनसंपर्क)- राजभाषा
एवं
सदस्य सचिव,
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), फरीदाबाद

सम्माननीय साथियों एवं प्रिय पाठकों,

'शब्दों की सुरभि, भावनाओं का उत्सव-नगर सौरभ'

जब विचार और अभिव्यक्ति हिंदी के सुरों में गुंथकर शब्दों का रूप लेते हैं, तो एक अनूठी सौंधी महक वातावरण में फैल जाती है। यही महक 'नगर सौरभ' के 15वें अंक के रूप में आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

'नगर सौरभ' पत्रिका का 15वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। मेरे लिए यह व्यक्तिगत रूप से अत्यंत गौरव एवं भावनात्मक क्षण है क्योंकि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), फरीदाबाद के सदस्य सचिव के रूप में दायित्व ग्रहण करने के उपरांत, नगर सौरभ के संपादक के रूप में आपसे संवाद करने का अवसर पहली बार प्राप्त हुआ है।

'नगर सौरभ' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि नराकास (का.), फरीदाबाद के सभी सदस्य कार्यालयों के बीच राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठा, रचनात्मकता और सामूहिक सहभागिता का प्रतीक है। इस अंक में सदस्य कार्यालयों से प्राप्त विविध विधाओं की रचनाएं- कविता, आलेख, लघु कथाएं, तकनीकी लेख आदि-हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और उसकी सांस्कृतिक गरिमा को उजागर करती हैं।

एनएचपीसी लिमिटेड द्वारा अध्यक्षता प्राप्त इस समिति ने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग को बढ़ाने के लिए सदैव अभिनव प्रयास किए हैं। जहां एक ओर सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों के लिए हिंदी कार्यशालाओं के माध्यम से राजभाषा नीति एवं संवैधानिक प्रावधानों की जानकारी, यूनिकोड, हिंदी ई-टूल्स आदि के प्रशिक्षण से हर स्तर पर कार्मिकों को सशक्त किया गया है, वहीं दूसरी ओर हिंदी प्रतियोगिताओं, हिंदी संगोष्ठियों, प्रोत्साहन योजनाओं एवं राजभाषा शील्ड पुरस्कारों के माध्यम से सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों की रचनात्मक ऊर्जा को सम्मानित व प्रेरित भी किया गया है। इसी वर्ष हिंदी संगोष्ठी एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह का आयोजन, हिंदी भाषा के प्रति समर्पण के महत्वपूर्ण साक्ष्य हैं। इन्हीं प्रयासों का विस्तार 'नगर सौरभ' के इस अंक में भी परिलक्षित होता है।

इस अंक की हर रचना इस विचारधारा का प्रतिबिंब है कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं बल्कि हमारी आत्मा का स्वर है। पत्रिका के प्रकाशन तथा राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रेरणास्रोत अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक, एनएचपीसी और हमारा सदैव मार्गदर्शन करने वाले निदेशक(कार्मिक), एनएचपीसी महोदय का मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। इस सुंदर प्रयास के लिए मैं सभी सदस्य कार्यालयों, रचनाकारों, सहयोगियों एवं संपादकीय टीम को भी धन्यवाद देता हूँ जिनके अमूल्य सहयोग से यह अंक संभव हो सका।

'नगर सौरभ' पत्रिका को और अधिक बेहतर बनाने के लिए हमें आपके बहुमूल्य सुझावों तथा प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी। आशा है कि हम सभी साथ मिलकर इस नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को देश की उत्कृष्ट नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के शीर्ष पायदान पर ले जाने में सफल होंगे।

(संजीव कुमार)

नगर सौरभ

अंक: 15 वर्ष 2024-25

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय)
फरीदाबाद
एनएचपीसी लिमिटेड

मुख्य संरक्षक
श्री राज कुमार चौधरी
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक, एनएचपीसी लिमिटेड
तथा
अध्यक्ष, नराकास (का.), फरीदाबाद

संरक्षक
श्री उत्तम लाल
निदेशक (कार्मिक), एनएचपीसी लिमिटेड

परामर्शदाता
श्री नवीन कुमार जैन
कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन)
एनएचपीसी लिमिटेड

संपादक
श्री संजीव कुमार
महाप्रबंधक (जनसंपर्क)–राजभाषा
एवं सदस्य सचिव, नराकास (का.) फरीदाबाद

उप संपादक
जितेन्द्र प्रताप सिंह
प्रबंधक (राजभाषा)

पत्राचार का पता
राजभाषा विभाग
एनएचपीसी लिमिटेड
सेक्टर–33, फरीदाबाद, हरियाणा–121003
ई–मेल: narakas.faridabad@nhpc.nic.in

'नगर सौरभ' पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार हैं। नराकास (का.) फरीदाबाद या एनएचपीसी लिमिटेड प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की ऐतिहासिकता	5
भारतीय संस्कृति और सभ्यता को व्यक्त करती हिंदी	9
अज्ञेय असीम है	11
एकांत	14
भारतीय संविधान- सामाजिक आर्थिक दर्शन	17
भगवद गीता का उत्तर	18
सकारात्मक सोच - एक अद्भुत शक्ति	20
वी-पावर-एसएआर 100 प्रशिक्षण शृंखला में भागीदारी	21
मखाना की उत्पत्ति	23
हरित ऊर्जा और नवीकरणीय ऊर्जा	26
नराकास प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण की झलकियां	28
राजभाषा शील्ड पुरस्कार विजेता कार्यालय	30
नराकास (का.), फरीदाबाद की गतिविधियां	32
हस्तलिपि - अंतर्मन की अभिव्यक्ति	35
ग्राउण्ड पेनीट्रेटिंग राडार (जीपीआर) एक त्वरित भूभौतिकीय अन्वेषण विकल्प	37
क्रिप्टोकरेंसी	41
एनएचपीसी लिमिटेड के गुणवत्ता आश्वासन एवं निरीक्षण विभाग की पहल	45
नराकास (का.), फरीदाबाद के सदस्य कार्यालयों का विवरण	47
नराकास (का.), फरीदाबाद के सदस्य कार्यालयों में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन-रिपोर्ट	51
कविताएं	56

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की ऐतिहासिकता

वाचस्पति पाण्डेय, महाप्रबंधक (भूविज्ञान)
एनएचपीसी लिमिटेड, फरीदाबाद

श्री राम की कथा एक मिथक है या इतिहास, यह प्रश्न सदियों से जनमानस को उद्वेलित करता रहा है। एक तरफ लोगों की अगाध आस्था है जो श्री रामचंद्र को देश व काल की परिधि से परे मानते हैं, तो दूसरी तरफ पाश्चात्य शिक्षा में पले-बढ़े प्रगतिशील जिज्ञासु, जो हर चीज को तर्क की कसौटी पर परखना चाहते हैं। श्री राम का चरित्र इतना विशाल है कि उनके ऊपर विश्व की अनेक भाषाओं में विपुल साहित्य का सृजन हुआ है। इस विपुल साहित्य के शीर्ष में आदिकवि वाल्मीकि रचित 'रामायण' एवं गोस्वामी तुलसीदास जी की कृति 'रामचरितमानस' है। पहली कृति संस्कृत भाषा में तो दूसरी लोकभाषा अवधी में है। यह माना जाता है कि महर्षि वाल्मीकि रामचन्द्र जी के समकालीन थे।

राम को भारतीय इतिहास में आदर्श नायक का गौरव हासिल है। हमारे राष्ट्रीय वाङ्मय में राम का एक विशेष अस्तित्व है। आज जब सभी चीजों को वैज्ञानिकता की कसौटी पर परखने की परंपरा चल रही है तो यह प्रश्न बहुत ही प्रासंगिक है कि श्री राम एक काल्पनिक पात्र हैं या एक इतिहास पुरुष हैं। कल्पना और यथार्थ के बीच के रहस्य को सुलझाने के लिए वैज्ञानिक तर्कों का सहारा लेना सामान्य समयोचित जिज्ञासा का अंग है। इसे अलग-अलग समय पर विद्वानों ने अपनी-अपनी समझ के अनुसार सुलझाने का प्रयास किया है। यहां पर हम एक प्रयास करेंगे यह समझने का कि वाल्मीकि रामायण में वर्णित श्री राम कथा का क्या कोई भौतिक या भौगोलिक महत्त्व भी है या यह केवल एक साहित्यिक काल्पनिक कथा है।

श्री राम की ऐतिहासिकता को सिद्ध करने के लिए सांस्कृतिक साक्ष्यों में भौगोलिक, साहित्यिक और लोककथात्मक साक्ष्यों की भूमिका अहम है। जहां तक सांस्कृतिक साक्ष्यों में भौगोलिक तथ्यों की बात है तो श्री राम की कथा में नेपाल से भारत होकर लंका पर्यंत स्थानों का वर्णन आता है और आज भी उनके वजूद जनमानस में मान्यता प्राप्त हैं। आज भी मिथिला की हर वैवाहिक कथा जनक नंदिनी सीता के इर्दगिर्द घूमती है तो वहीं भारत के हर विवाह गीत में सीता और राम का जिक्र होता है। भारत के दक्षिणी छोर पर रामेश्वरम का ज्योतिर्लिंग अभी भी अपनी उसी आभा के साथ श्रद्धा पाता रहा है। साहित्यिक साक्ष्यों में यदि देखें तो देश व विश्व की अशेष भाषाओं में रामकथा का उल्लेख हुआ है एवं रामायण का अनुवाद हुआ है। भारतीय साहित्य में रामकथा का सबसे प्रामाणिक स्वरूप महर्षि वाल्मीकि की रामायण है। इसके उपरांत अवधी में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रंथ है। यद्यपि उनकी कथाओं में थोड़ी-बहुत भिन्नता पाई जाती है, परंतु मोटा-मोटी कथा समरूप है। राम कथा का नियमित मंचन सिंगापुर, मलेशिया, इंडोनेशिया, थायलैंड आदि अनेक देशों में होता रहा है। अत: साहित्यिक/भौगोलिक रूप से रामकथा को झुठलाना असंभव है। इसी तरह यदि लोककथाओं की बात करें तो भारत एवं विश्व के एक बड़े भूभाग में रामकथा पर आधारित लोक कथाएं प्रचलित हैं।

प्राचीन भारतीय साहित्य पर उंगली उठाने वाले नवप्रगतिशील विद्वानों का एक सबसे बड़ा तर्क रहा है कि इनमें कहीं भी लेखन की तिथि, नाम आदि वर्णित नहीं हैं। भारतीय साहित्य में पठन-पाठन व लेखन आदि को ज्ञान की उपासना माना गया है जिस पर किसी का एकाधिकार नहीं हो सकता। इस विनम्रता के कारण ही प्राचीन ग्रंथकारों ने अपना नाम व तिथि

लिखना उचित नहीं समझा। यही कारण है कि 'रामायण' जैसे ग्रंथ में महर्षि वाल्मीकि या 'रामचरितमानस' जैसे ग्रंथ में गोस्वामी तुलसीदास ने तिथियां नहीं लिखी। परंतु इसका मतलब यह नहीं कि इन ग्रंथकारों को काल का भान नहीं था। विशेषकर वाल्मीकि रामायण में श्री रामकथा के दौरान घटित घटनाओं का जो वर्णन है वह अति सूक्ष्म व गूढ़ है। इन्हें समझने के लिए संस्कृत भाषा व साहित्य एवं ज्योतिष का ज्ञान आवश्यक है। महर्षि वाल्मीकि ने उस समय की प्रमुख घटनाओं के समय की आकाशीय पिंडों की अवस्थिति का रामायण के श्लोकों में वर्णन किया है। प्रथमदृष्ट्या पाठकों ने इसे साहित्यिक अलंकार समझा। परंतु कुछ विद्वानों ने उनको समुचित संदर्भ में देखा व समझने का प्रयास किया। इन श्लोकों में समाहित ग्रह-विवरण को यदि अच्छे से समझ लिया जाए तो उसकी सहायता से हम रामायण काल की घटनाओं का काल निर्धारण कर सकते हैं। इस आलेख में यह बताने का प्रयास किया जाएगा कि रामायण के श्लोकों में किस प्रकार से उस समय का बोध भी समाहित है? इस विषय में श्रीमान पुष्कर भटनागर जी ने कई शोध किए तथा अपनी खोजों को "Dating the Era of Lord Ram" नामक एक पुस्तक में संकलित किया है। यहां लेखक ने मुख्यत: इसी पुस्तक से प्राप्त सूचना को समाहित किया है।

श्री वाल्मीकिय रामायण में वर्णित घटनाओं के खगोलीय काल- निर्धारण में विद्वानों ने विशेष खगोलीय संयोगों यथा सूर्यग्रहण, चंद्रग्रहण, पूर्णिमा, अमावस्या आदि का उपयोग किया है। इस क्रम में कुछ विशेष घटनाएँ यथा राम का जन्म, विवाह, वनवास, खर दूषण वध, सीता हरण, हनुमान जी का लंकागमन, रावणादि असुरों का वध, श्री राम का राजतिलक आदि का विशेष महत्त्व है। महर्षि वाल्मीकि ने अपने श्लोकों में इन घटनाओं के समय ग्रहों व नक्षत्रों की खगोलीय अवस्थिति का सूक्ष्म वर्णन किया है। यदि इन सूक्ष्म खगोलीय संयोगों को हम विश्लेषित कर लें तो उस समय का काल निर्धारण किया जा सकेगा। आधुनिक काल में संगणकों की मदद से ज्योतिषीय गणना के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई है, जिससे आज के आकाशीय पिंडों की गति के ज्ञान के आधार पर हजारों साल पहले की आकाशमंडल की ग्रहीय अवस्था का आकलन संभव है। इसके लिए एक सर्वसुलभ सॉफ्टवेयर है 'प्लेनेटेरियम'। वाल्मीकिय रामायण में श्लोकों में समाहित ग्रहीय अवस्थिति को जब हम प्लेनेटेरियम सॉफ्टवेयर में डालते हैं तो कुछ तिथियां प्राप्त होती हैं। जो जानकारी देती है:

श्री राम का जन्म:

रामायण में श्री रामचंद्र और उनके भाइयों के जन्म के बारे में बड़ी ही बारीकी से उस समय की ग्रह अवस्थिति बालकाण्ड के अठारहवें सर्ग के श्लोक संख्या 8-10 के बीच वर्णन है। संदर्भित श्लोकों का मूलपाठ निम्नवत् है:

ततो यज्ञे समाप्ते तु ऋतूनां षट् समत्ययु: ।
ततश्च द्वादशे मासे चैत्रे नावमिके तिथौ ।। १-१८-८

नक्षत्रेऽदितिदैवत्ये स्वोच्चसंस्थेषु पंचसु ।
ग्रहेषु कर्कटे लग्ने वाक्पताविंदुना सह । १-१८-९

प्रोद्यमाने जगन्नाथं सर्वलोकनमस्कृतम् ।
कौसल्याजनयद्रामं सर्वलक्षणसंयुतम् ।। १-१८-१०

अर्थात श्री राम का जन्म चैत्र मास के शुक्लपक्ष की नवमी तिथि को हुआ तथा उस समय पुनर्वसु नक्षत्र थी तथा सूर्य, मंगल, शनि, बृहस्पति एवं शुक्र क्रमश: अपने उच्च स्थान मेष, मकर, तुला, कर्क एवं मीन राशियों में थे। लग्न (Ascendent) में कर्क तथा गुरु एवं चंद्रमा एक साथ थे। ये सभी ग्रह अवस्थितियां एक अद्वितीय ज्योतिषीय संरचना की ओर इंगित करते है। प्लेनेटेरियम सॉफ्टवेयर की सहायता से जब इसको देखने का प्रयत्न करते हैं तो जो पहली स्थिति बनती है जिसमें सभी ग्रह उपर्युक्त स्थितियों में है तथा अयोध्या के अक्षांश एवं देशांतर से दृश्यमान हैं वो तिथि है- 10 जनवरी 5114 ईसापूर्व। जब लग्न को भी मिला देते हैं तो जो समय बनता है वह है अपराह्न 12:30 बजे का। अर्थात जो आम धारणा है कि श्री राम का जन्म दिन में दोपहर को हुआ वह भी सही है। आज जब रामनवमी मार्च-अप्रैल के महीने में पड़ती है तो यह प्रश्न उठता है कि तब राम का जन्म जनवरी में कैसे हुआ। इस संबंध में यह स्पष्ट किया जाता है कि सूर्य के अपने अक्षीय पुरस्सरण (Añial

Precession) के कारण सूर्य के गति पर आधारित मासों का समय धीरे-धीरे बदलता रहा है।

राम का वनगमन:

वाल्मीकिय रामायण में आए विविध प्रसंगों को सुमेलित करने से यह सिद्ध होता है कि श्री राम का राज्याभिषेक उनके 25वें जन्मदिन को प्रस्तावित था। राम के जन्मदिन में 25 वर्ष जोड़ने से तथा चैत्र मास के शुक्लपक्ष की नवमी तिथि को मिलाकर प्लेनेटेरियम सॉफ्टवेयर में डालने से राम के राज्याभिषेक की तिथि 5 जनवरी 5089 ईसापूर्व बनती है। उस दिन की ग्रह दशा व अन्य वर्णन अयोध्याकाण्ड के तृतीय सर्ग के श्लोक-4, चतुर्थ सर्ग के श्लोक-18 आदि में मिलता है:

चैत्रः श्रीमानयं मासः पुण्यः पुष्पितकाननः ।
यौवराज्याय रामस्य सर्वमेवोपकल्प्यताम् ।। २-३-४

"यह चैत्र का भव्य मास है जिसमें जंगल फूल से भरे हुए हैं। राम के राज्याभिषेक हेतु सारी तैयारियां कर दी जाएं।"

अवष्टब्धं च मे राम नक्षत्रं दारुणैर्ग्रहैः ।
आवेदयन्ति दैवज्ञावः सूर्याङ्गारकराहुभिः ।। २-४-१८

"हे राम ! ज्योतिषी मुझे सूचित कर रहे हैं कि सूर्य, मंगल तथा राहु जैसे भयानक ग्रह मेरे जन्म नक्षत्र को घेरे हुए हैं।"

श्री राम व खर-दूषण युद्धः

रामायण में वर्णित ग्रहीय स्थितियों को कोई ये कहकर झुठला सकता है कि इस प्रकार के वर्णन किसी ने बाद में कर दिए होंगे। ऐसे कुतर्कों पर तब विराम लग जाता है आप देखेंगे कि ये खगोलीय वर्णन कितने सटीक हैं। उदाहरण के लिए हम राम व खर-दूषण के बीच हुए युद्ध को लेते हैं, जिसमें महर्षि वाल्मीकि ने उस समय के एक खंड-सूर्यग्रहण का जिक्र किया है। यह वर्णन अरण्य कांड के सर्ग 23 के श्लोक संख्या-1 में इस प्रकार मिलता है:

तत् प्रयातम् बलम् घोरम् अशिवम् शोणित उदकम् ।
अभ्यवर्षत् महा मेघः तुमुलो गर्दभ अरुणः ।। ३-२३-१

जब खर भगवान श्री राम के साथ युद्ध करने के लिए निकला उस समय एक रक्तिम वर्णी संध्या क्षितिज पर उतर रही थी। श्लोक 3 में लिखा है कि सूर्य एक गहरे रंग की तश्तरी से ढका हुआ था, जिसके किनारे लाल रंग के थे।

श्यामम् रुधिर पर्यन्तम् बभूव परिवेषणम् ।
अलात चक्र प्रतिमम् प्रतिगृह्य दिवाकरम् ।। ३-२३-३

श्लोक 9 में लिखते हैं कि यद्यपि दिन का समय था तथापि संध्या-सा प्रतीत होने लगा।

क्षतज आर्द्र सवर्णाभा संध्या कालम् विना बभौ ।
खरम् च अभिमुखम् नेदुः तदा घोरा मृगाः खगाः ।। ३-२३-९

श्लोक 12 में स्पष्ट लिखते हैं कि सूर्य राहु से ग्रस लिए गए जिसके चलते उनका तेज नष्ट हो गया।

जग्राह सूर्यम् स्वर्भानुः अपर्वणि महाग्रहः ।
प्रवाति मारुतः शीघ्रम् निष्प्रभो अभूत् दिवाकरः ।। ३-२३-१२

यह वर्णन निश्चित रूप से एक सूर्यग्रहण का है। प्लेनेटेरियम सॉफ्टवेयर में इस वर्णन को सत्यापित किया जा सकता है। इस के लिए पहले हमें राम एवं खर-दूषण युद्ध का अनुमानित काल निर्धारण करना पड़ेगा एवं देखना होगा कि क्या उस अवधि के आसपास कोई सूर्यग्रहण पड़ता है। वनवास के उस खंड में श्री रामचन्द्रजी सीता और लक्ष्मण के साथ पंचवटी में रहते थे जो वर्तमान में महाराष्ट्र के नासिक में पड़ता है। इसके साथ जब अरण्यकाण्ड सर्ग 25 श्लोक-5 को देखते है जो निम्नवत है:

स तेषाम् यातुधानानाम् मध्ये रथः गतः खरः ।
बभूव मध्ये ताराणाम् लोहितांग इव उदितः ।। ३-२५-५

सेना के बीच खर आकाश में ग्रहों के बीच मंगल की तरह दिख रहा था। इसका मतलब यदि हम ये निकालें कि उस समय आकाश में सभी ग्रह दृश्यमान थे एवं मंगल उनके बीच था तो इससे दिन के समय का अंदाजा लगाया जा सकता है जो कि खर के अरण्यकाण्ड सर्ग 29 श्लोक-23 पर दिए गए बयान से मेल खाता है, वो कहता है:

कामम् बहु अपि वक्तव्यम् त्वयि वक्ष्यामि न तु अहम् ।
अस्तम् प्राप्नोति सविता युद्ध विघ्नः ततो भवेत् ।। ३-२९-२३

मैं अपने पराक्रम के बारे में वैसे तो बहुत कुछ बताना चाहता हूँ परंतु ऐसा करने में सूर्यास्त हो जाएगा जिससे युद्ध में व्यवधान आ जाएगा (और मैं तुझे आज मार नहीं पाऊंगा। मतलब कि यह समय सूर्यास्त से पहले का है। इन सभी को जब 7 अक्तूबर 5077 ईसापूर्व के दिन लगने वाले सूर्यग्रहण के साथ देखते हैं तो ज्ञात होता है कि पंचवटी में यह सूर्यग्रहण अपने अधिकतम प्रभाव में दिन में 3.10 बजे अपराह्न को होता है। यह खर के वक्तव्य से मेल भी खाता है। मतलब कि राम-खर दूषण युद्ध दिनांक 7 अक्तूबर 5077 ईसापूर्व के दिन होता है।

इसी प्रकार श्री रामचंद्र जी के जीवन की अन्य महत्त्वपूर्ण घटनाओं की भी तिथियां निकली गई हैं जो निम्नवत् हैं:

घटना	तिथि
बाली का वध	3 अप्रैल 5076 ईसापूर्व
हनुमान की लंका में सीताजी से भेंट	12 सितंबर 5076 ईसापूर्व
हनुमान के लंका से लौटने की तिथि	14 सितंबर 5076 ईसापूर्व
हनुमान के राम से मिलने व वानर सेना के साथ लंका की ओर प्रस्थान की तिथि	19 सितंबर 5076 ईसापूर्व
रावण का वध	04 दिसंबर 5076 ईसापूर्व
श्री राम के लंका से लौटकर भारद्वाज आश्रम पहुंचने की तिथि	29 दिसंबर 5076 ईसापूर्व
राम और भरत की भेंट	30 दिसंबर 5076 ईसापूर्व

उपर्युक्त वर्णन से यह सिद्ध होता है कि वाल्मीकि रामायण में वर्णित कथाएं बिना सिर-पैर की मनगढ़ंत कहानियां नहीं हैं, अपितु इसके रचयिता महर्षि वाल्मीकि एक उच्च कोटि के विद्वान संत हैं जिन्हें खगोलीय ज्योतिष की बहुत ही अच्छी समझ थी। इसी आधार पर उन्होने अपने काव्य की घटनाओं के वर्णन में काल-बोध का सूक्ष्म व गूढ़ निरूपण किया है। श्री राम के वास्तविक पुरुष होने के और भी बहुत सारे पुरातात्विक प्रमाण उपलब्ध हैं। उदाहरणस्वरूप दूरसंवेदी उपग्रहों द्वारा ली गई राम द्वारा बनाए हुए भारत व लंका के बीच रामसेतु की तस्वीरें। आज भले ही यह सेतु पानी के अंदर जलमग्न है परंतु इसके अस्तित्व की पुष्टि अमेरिका की विश्वविख्यात अंतरिक्ष संस्था नासा भी करती है। भूवैज्ञानिक शोधों से यह सिद्ध हो चुका है कि विगत सात हजार साल में समुद्र का जल स्तर लगभग 9-10 फीट बढ़ा है जिससे कि इस सेतु के जलमग्न होने की पुष्टि होती है।

यह आलेख जिज्ञासु पाठकों को इस दिशा में और अध्ययन कर और गूढ़ विशेषताओं को जानने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास मात्र है। पुष्कर भटनागर जी का अपनी पुस्तक में दिया हुआ यह शोधपरक ज्ञान निश्चय ही इस विषय में फैलाई गई भ्रांतियों के निवारण में सहायक होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

संदर्भ :

- नूतन पुरातन - श्री राम और रामायण की ऐतिहासिकता। https://harshad30.wordpress.com/2017/03/08/श्रीराम-और-रामायण-की-ऐतिह/
- श्रीकांत मिश्र कान्त- श्री राम मिथ या इतिहास। https://readerblogs.navbharattimes.indiatimes.com/trishakant/र-म-म-थ-य-इत-ह-स-श-व-न-द-र-क-म-र-म-श-र/
- भारतीय इतिहास का विकृतिकरण - https://eksachchai.blogspot.com/2017/08/blog-post_53-html
- कविता भट्ट- ramayan: ऐतिहासिकता एवं चरित्र चित्रण। http://gadyakosh.org/gk/रामायण:_ऐतिहासिकता_एवं_चरित्र_चित्रण_/_कविता_भट्ट।
- अज्ञात - ऐतिहासिकता की कसौटी पर रामायण और महाभारत। http://prapanchmanch.blogspot.com/2015/05@blog-post_21-html
- वाल्मीकि रामायण - https://www.valmikiramayan.net/

भारतीय संस्कृति और सभ्यता को व्यक्त करती हिंदी

नयन कुमार वर्मा, सहायक प्रबंधक (यांत्रिक)
एनएचपीसी लिमिटेड, फरीदाबाद

प्रस्तावना- हिंदी भारतीय संस्कृति और सभ्यता का अभिन्न हिस्सा है। वस्तुत: संस्कृति और सभ्यता भाषा के विकास का मूलाधार होती है और फिर यही भाषा संस्कृति और सभ्यता का संरक्षण एवं संवर्धन करती है। इसलिए भाषा का संस्कृति और सभ्यता से परस्पर गहरा नाता होता है। भारतीय संस्कृति बहुत प्राचीन एवं सनातन है और संस्कृत इसकी मूल भाषा है।

भारत जिस प्रकार विविधताओं में एकता वाला देश है, इसकी भाषा के रूप में हिंदी भी ठीक वैसी ही है। संस्कृत से जन्मी इस भाषा में कुछ खड़ी, कुछ राजस्थानी, कुछ अवधी, कुछ ब्रज, कुछ भोजपुरी सहित और भी अनेक भारतीय भाषाओं के साथ कुछ फारसी, उर्दू और अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषाओं का महासंगम है। इस अर्थ में हिंदी भारतीय संस्कृति और सभ्यता के विविधवर्णी स्वरूप की सच्ची प्रतिनिधि है। भारतीय समाज की सांस्कृतिक पहचान का आधार हिंदी में ही सन्निहित है। हिंदी ही एक प्राणतत्व के रूप में भारतीय संस्कृति और सभ्यता को काल के निर्बाध प्रवाह में सनातन से ही सतत जीवंत और गतिशील रखती, व्यक्त करती आ रही है।

विषय-विस्तार- भारतीय संस्कृति और सभ्यता व्यक्त करती हिंदी - हिंदी शब्द फारसी का होकर भी कभी हमें फारसी सा नही लगा। हिंदी सबको साथ लेकर चलने वाली भाषा है। इसकी उत्पत्ति हिंदे शब्द से हुई है, जिसका अर्थ भारत है, इस प्रकार हिंदी का अर्थ है- 'भारतीय'। यही कारण है कि अमीर-खुसरो के 'हिंदवी' शब्द को धारण किए हुए भारत की गोद में झूलने का जो सुख हिंदी को मिला है, वह किसी और भाषा को नहीं मिला। इसका कारण यह है कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं अपितु भारतीयता की परिचायक है, सच्चे अर्थो में भारतीय भाषा है।

हिंदी हिंदवी के शैशवास्था से गुजरते हुए, प्राकृत की अपभ्रंश भाषा के बाल्यकाल में खेलते हुए आगे चलकर कबीर के अक्खड़पन में डूबती है, तो कभी जायसी के प्रेममार्ग पर चलकर पद्मावत बन बैठती है, तो कभी सुर के सुख-सागर में डुबकी लगाने के पश्चात, तुलसी के मानस के रूप में घर-घर पूजी जाती है। हिंदी को केवल एक भाषा मानना सबसे बड़ी भूल है, हिंदी भारत की अमूल्य धरोहर है, भारत के लोगों के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

मूल से ही हिंदी भारतीय समाज में विचारों के विनिमय का सशक्त माध्यम रही है। काल, देश, भौगोलिक स्थिति, पर्यावरण एवं जैव विविधता से इसका गहरा रिश्ता रहा है। यह भारतीय संस्कृति को समृद्ध बनाती है, लोगों के कार्य-कलापों को संभव बनाती है और समाज में व्यवहार को गति देती है। इसीलिए इसको जगत के व्यवहार का मूल कहा गया है। हिंदी भाषा, इसकी लिपि और भारतीय संस्कृति और सभ्यता का गहरा संबंध है।

भारतीय चिंतन धारा में संस्कृति को पूर्णता का पर्याय माना गया है। संस्कृत केवल कल्चर ही नहीं अपितु कल्चर से कहीं अधिक व्यापक और तर्कसंगत है। सही पूछा जाए तो हिंदी भारतीय संस्कृति और सभ्यता की समर्थ संवाहिका है। संस्कृत यदि चितंन की मूर्त रूप है तो हिंदी उसका माध्यम है।

संस्कृति की अभिव्यक्ति जनसाधारण की भाषा में होती है और हिंदी जनसाधारण की भाषा है। इस भाषा के तहत जनसाधारण के जीवन के सभी रंग-रूप, राग-रागिनी, हर्ष-उल्लास, द्वेष-विद्वेष, भाव-विचार, वेदना का मूर्त-अमूर्त, सजीव एवं जीवंत चित्रण मिलता है। हिंदी में ही संस्कृत

और सभ्यता के सभी अवयव एवं तत्व अंतरनिहित हैं। अत: संस्कृत के जितने भी वैविध्य और विराट रूप हैं वो सभी हिंदी भाषा और साहित्य में समाहित हैं- जैसे - राष्ट्रीय गौरव और अस्मिता की संस्कृति, खान-पान सौंदर्य मूलक संस्कृति, रीति-रिवाज परंपरा वस्त्र-परिधान वेशभूषा संस्कृति, बाल रूप के सभी वैविध्य पक्ष की संस्कृति, पर्यटन संस्कृति, देशाटन संस्कार, राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय विनिमय संस्कृति, आत्मचेतस से विस्वचेतस की ओर उन्मुख संस्कृति, लोकरंजन लोकमंगल की संस्कृति, समन्वय-समाहार की संस्कृति आदि। इसके अलावा भारतीय संस्कृति की अभिव्यक्ति लोकनाट्य, लोकनृत्य, लोकगीत, लोकसंगीत, लोकसंस्कृत, धर्म और अध्यात्म मे भी होती है। भारत में शासन-प्रशासन, व्यापार वाणिज्य, सामाजिक व्यवहार आदि का भी लोकजन की भाषा हिंदी से ही उद्‌भव हुआ है।

आज विश्व के सभी राष्ट्रों में भारत, की इस संस्कृति एवं संस्कारों का विशेष रूप से रीति-रिवाज परंपरा यथा होली, दीपावली, छठ, वस्त्रपरिधान- साड़ी, खान-पान-समोसा-जलेबी का तथा व्यापार-वाणिज्य शब्दावली में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। आज हिन्दी दुनिया के तमाम देशों के लोगों के लिए भारत को जानने और उससे अनुराग का अहम साधन बन चुकी है। दुनिया के विभिन्न हिस्सों में भारत के प्रति रूचि की जड़ें गहरी व पुरानी हैं, जिन्हें हिंदी का आधार मिल रहा है। कर्म-काण्ड-ज्योतिष, धर्म तथा अध्यात्म, देशज ज्ञान-विज्ञान, प्राकृतिक चिकित्सा, योग और आयुर्वेद सहित विविध क्षेत्रों में भारतीय संस्कृति और सभ्यता का प्रसार हिंदी के माध्यम से ही हो रहा है।

हिंदी का अपना गौरवमयी एवं समृद्ध अतीत रहा है। यह एक कालजयी एवं सार्वभौमिक भाषा रही है क्योकि इसमें लचीलापन, स्वीकार करने का गजब का साहस, समन्वय एवं समाहार की अद्‌भुत क्षमता के साथ-साथ मौलिकता, सृजनशीलता, सरसता, सरलता, सहजता और वैज्ञानिकता है। इस अनूठेपन के कारण हिंदी अपने मूल से ही अनेकानेक देशज और विदेशज शब्दो जैसे तत्सम-तद्‌भव, फारसी, अरबी, हिब्रू, लैटिन, अंग्रेजी, फ्रेंच, रशियन, पुर्तगाली, डेनिश, चीनी और नित्य नए-नए शब्दावलियों को अपने में समाहित करती चली आ रही रही है।

हिंदी भाषा विभिन्न संस्कृति एवं संस्कारों को आत्मसात कर उत्तरोतर समृद्ध और प्रतिष्ठित होती चली गई। फलत: यह बोली और साहित्य के सोपानिक क्रमों को पार करते हुए अपनी भौगोलिक सीमा का अतिक्रमण कर अंतरराज्यीय, राष्ट्रीय और फिर अंतरराष्ट्रीय भाषा बन गई है।

हिंदी भाषा में वेग-प्रवणता, भाव-प्रवणता, गत्यात्मकता, लय-ताल, नाद-ध्वनि आदि का गजब मिश्रण है। हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसकी बिंदी भी बोलती है, तभी तो विश्व की सभी भाषाओं के बीच आज हिंदी महारानी की तरह है, परिणामत: भारत के शास्त्रीय संगीत ने अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है।

कोविड जैसी आपदा में जहां पूरे विश्व में लोग एक- दूसरे का अभिवादन करने से भय खाने लगे थे, भारतीय संस्कृति और सभ्यता की पहचान हिंदी मे ही लोग नमस्ते कहने का साहस कर पाते थे।

हिंदी भारत की भूमि से नहीं बल्कि उसके नागरिकों की भावनाओं और संस्कृति से जुड़ी हुई है। यह भारत की संस्कृति और सभ्यता को मजबूती से प्रतिष्ठित करती आ रही है, व्यक्त करती आ रही है।

निष्कर्ष- भारतीय संस्कृति और सभ्यता को हिंदी व्यक्त करने में पूर्णतया सक्षम है जिसे रेखांकित करते हुए 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल' ने लिखा है कि हिंदी वही भाषा है जिसकी धारा कभी संस्कृत के रूप में बहती थी, फिर प्राकृत और अपभ्रंश के रूप मे हजारों वर्षों से लगातार बहती चली आ रही है। यह वही भाषा है जिसमें पूरे उत्तरीय भारत के बीच चन्द्र और जगनिक ने वीरवा की उमंग उठाई, कबीर, सूर, तुलसी और रसखान ने भक्ति की धारा बहाई, बिहारी, देव और जायसी ने श्रृंगार रस की वर्षा की और भारतेंदु ने आधुनिक युग का आभास दिया।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि वैदिक काल से भारतवर्ष को एक सूत्र मे पिरोए रखने वाली हिंदी समग्र भारतीय संस्कृति और सभ्यता को बखूबी व्यक्त कर रही है।

अज्ञेय असीम है

नमिता श्रीवास्तव, उप निदेशक (राजभाषा)
वनस्पति संरक्षण, संगरोध व संग्रह निदेशालय, फरीदाबाद

पहाड़ नहीं कांपता,
न पेड़, न तराई,
कांपती है ढाल पर के घर से
नीचे झील पर झरी
दिए की लौ की
नन्हीं परछाईं

इन पंक्तियों के रचयिता, अपने समय के प्रसिद्ध प्रयोगवादी एवं नई कविता के जनक आदरणीय सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी और प्रखर कवि होने के साथ-साथ एक उम्दा फोटोग्राफर भी थे और यायावरी तो शायद उनको सौभाग्य से ही मिली थी।

अज्ञेय अपने समय के सबसे चर्चित कवि, कथाकार, निबंधकार, पत्रकार, संपादक, यायावर और अध्यापक रहे हैं। इनका जन्म 7 मार्च 1911 को उत्तर प्रदेश के कसया (आधुनिक कुशीनगर) में हुआ। बचपन लखनऊ, कश्मीर, बिहार और मद्रास में बीता। बीएससी करके अंग्रेजी में एमए किया। सच्चिदानंद जी ने घर पर ही भाषा, साहित्य, इतिहास और विज्ञान की प्रारंभिक शिक्षा आरंभ की। मैट्रिक की प्राइवेट परीक्षा पंजाब से उत्तीर्ण की। इसके बाद 2 वर्ष मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज में एवं 3 वर्ष लाहौर में संस्थागत शिक्षा पाई।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन को 'अज्ञेय' नाम मुंशी प्रेमचंद से मिला था। इसका जिक्र स्वयं अज्ञेय ने अपने एक साक्षात्कार में किया है। इस साक्षात्कार के अनुसार सच्चिदानंद ने जैनेंद्र कुमार के पास अपनी रचनाएं प्रकाशन के लिए भेजीं। जैनेंद्र जी ने वे रचनाएं प्रेमचंद जी को भेज दी। इन कहानियों में से दो राजनीतिक कहानियां प्रेमचंद जी द्वारा स्वीकार कर ली गई। कारावास से भेजी गई इन कहानियों के लेखक का नाम उजागर करना उपयुक्त नहीं था। इसलिए निर्णय लिया गया कि लेखक के नाम की जगह अज्ञेय (अर्थात अज्ञात) नाम का उपयोग किया जाए। जबकि अज्ञेय को यह उपनाम पसंद नहीं था हालांकि उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया था। वह कविताओं और कहानियों का प्रकाशन अज्ञेय नाम से कराते रहे जबकि लेख, विचार, आलोचना आदि के लिए उन्होंने अपने मूल नाम अर्थात सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन का ही उपयोग किया।

अज्ञेय, प्रयोगवाद एवं नई कविता को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने वाले कवि हैं। अनेक जापानी हाइकु कविताओं को अज्ञेय ने अनुदित किया है। अज्ञेय के प्रतीकों में पुराने प्रतीकों के नूतन अर्थ भी मिलते हैं। अज्ञेय की प्रतीकों में विविधता है। उनके प्रतीक नए भाव बोध से आपूरित हैं। अज्ञेय ने प्रगतिवाद से असंतुष्ट होकर 'व्यक्ति स्वतंत्रता सिद्धांत' की स्थापना का अभियान यानी प्रयोगवाद चलाया। प्रयोगवाद की शुरुआत अज्ञेय के संपादन में वर्ष 1943 में 'तार सप्तक' से हुई। 'तार सप्तक' में विविध विचारधारा रखने वाले सात कवियों को एक साथ लिया गया तथा उन्हें 'राहों के अन्वेषी' की संज्ञा प्रदान की गई। अज्ञेय को कविता में प्रयोगवाद का प्रवर्तक कहा जाता है। अज्ञेय को नई कविता धारा का भी पथ प्रदर्शक माना गया है। उनके संपादन में प्रकाशित 'दूसरा सप्तक' और 'तीसरा सप्तक' में नई कविता के प्रमुख कवि शामिल हैं।

अज्ञेय को अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार भी प्राप्त हुए। 1964 में 'आंगन के पार द्वार' पर उन्हें साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ । 1978 में 'कितनी नावों में कितनी बार' शीर्षक काव्य ग्रंथ पर भारतीय ज्ञानपीठ का सर्वोच्च पुरस्कार मिला।

अज्ञेय की कविताओं में अगर हम काव्यगत विशेषताएं देखें तो हम पाएंगे कि अज्ञेय की कविताओं में प्रेम अभिव्यक्ति ज्यादा गहरी और मनोवैज्ञानिक धरातल पर हुई है किंतु आवेश इन शैली में की गई है जैसे-

भर बेला नदी तट की
घटिया का नाथ नाथ
चोट खाकर जाग उठा
सोया हुआ अवसाद
नहीं मुझको नहीं
अपने दर्द का अभियान
मानता हूं मैं परिचय
पर आ जाए है तुम्हारी याद

अज्ञेय के प्रेम प्रदर्शन में किसी प्रकार की बनावट अथवा दुराव नहीं मिलता। जीवन की इस नैसर्गिक मांगों को सर्वथा सहज रीति से व्यक्त होने देना चाहते हैं। वे अपने प्रेम को व्यक्त करने के लिए नए उपमान की तलाश करते हैं-

अगर मैं तुमको
ललाती सांझ के नभ की
अकेली तारीका
अब नहीं कहता
या शरद के भोर की
निहार-नहाई कुंई टटकी
कली चंपे की वगैरा
तो नहीं कारण कि
मेरा हृदय उथला
या कि सूना है
या कि
मेरा प्यार मैला है
बल्कि केवल यही
ये उपमान मैले हो गए हैं
देवता इन प्रतीकों के
कर गए हैं कूच

अज्ञेय ने यदि कहीं पुराने उपमानों का प्रयोग किया भी है तो संदर्भ बदलकर उनका बासीपन दूर किया है। अज्ञेय की कविताओं में विद्रोह के स्वर भी साफ दिखाई देते हैं। राजनीतिक संबंध के कारण उन्होंने कारावास की काफी यात्राएं भी झेली है। उसके लिए उनकी विद्रोह की भावना प्रारंभिक कृतियों में बड़े दर्प के साथ व्यंजित हुई हैं। 'हरी घास पर क्षण भर' में उनकी प्रसिद्ध कविता है। 'बावरा अहेरी' और 'दीप अकेला जलते रहे' में अज्ञेय की दृढ़ता, कर्तव्यनिष्ठा और सामाजिकता के दर्शन होते हैं-

प्रकृति का सजीव चित्रण

अज्ञेय के काव्य में प्रकृति का सजीव अंकन हुआ है। यहां भी उनका दृष्टिकोण रोमानी नहीं यथार्थवादी ही है। जिस चांदनी के सौंदर्य की महिमा अनेक कवियों ने अनेक रूपों में की है, वहीं अज्ञेय चांदनी में भी यथार्थ को खोज लेते हैं। वस्तुत: आज के नागरिक कवि के लिए प्रकृति के निरपेक्ष सत्ता पर मुक्त होना सहज नहीं रह गया है। एक तो वह जीवन के व्यस्त क्षणों में प्रकृति के पास जाने का अवकाश ही कब निकाल पाता है और जब प्रकृति के नयनभिराम दृश्य के सामने खड़ा होता है तब वहां भी उसके अवचेतन संस्कार और मानसिक संघर्ष उभरे बिना नहीं रहते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि अज्ञेय की काव्य रचना में आज के समय का सजीव चित्रण मिलता है।

अज्ञेय की काव्य भाषा

अज्ञेय की भाषा प्रतीकात्मक है। उन्होंने भांति-भांति के प्रयोग से उसकी व्यंजकता बढ़ाने का प्रयास किया है। इस कार्य के लिए प्रतीक पद्धति का आश्रय सबसे उपयुक्त साधन है। कवि की 'इत्यालम' तक की काव्य भाषा तत्सम प्रधान है और उसका तेवर छायावादी क्योंकि काव्य भाषा का चरम निखार 'आंगन के पार द्वार' में दिखाई पड़ता है जहां भाषा

ऊपर से बिल्कुल सीधी और अलंकृत होती हुई भी भीतर से अत्यधिक संकेत निहित और मर्मस्पर्शी है।

अज्ञेय की छंद योजना

छंद योजना की अगर बात करें तो अज्ञेय की छंद योजना में भी नवीनता है। चांद उनके काव्य में मात्र ढांचा नहीं भाव के उन्मेष का माध्यम है। कहीं-कहीं कवि ने लोकगीतों को भी आत्मसात किया है। निराला और पंथ के बाद हिंदी कविता में सबसे अधिक छंद प्रयोग अज्ञेय ने किए हैं। इस प्रकार अज्ञेय नई कविता के यशस्वी पुरोधा हैं और उनका काव्य हिंदी कविता का नवीनतम मानचित्र है।

अज्ञेय का रचना संसार इतना परिपक्व है, इतना समृद्ध है कि सबका अगर उदाहरण देने चलें तो कई पृष्ठ ऐसे ही भर जाएंगे। अज्ञेय ने अनेक कविता संग्रह, कहानी संग्रह, उपन्यास, यात्रा वृतांत, निबंध संग्रह, आलोचना, संस्मरण इत्यादि की रचना की है। उनके प्रमुख कविता संग्रहों में 'हरी घास पर क्षण भर', 'बावराअहेरी', 'क्योंकि मैं उसे जानता हूँ', 'आंगन के पार द्वार' इत्यादि; कहानी संग्रह-'विपथगा', 'परंपरा', 'कोठरी की बात' इत्यादि; उपन्यास - 'शेखर एक जीवनी', 'नदी के द्वीप' इत्यादि; यात्रा वृतांत- 'क्या यायावर रहेगा याद' इत्यादि; निबंध संग्रह - 'त्रिशंकु', 'आधुनिक साहित्य' इत्यादि; आलोचना - 'आत्मपरक आत्मा ने पद आत्मनेपद', इत्यादि; संस्मरण- 'स्मृति लेखा' आदि हैं।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का निधन नई दिल्ली में 4 अप्रैल 1987 को हुआ। खास बात यह है कि अज्ञेय को आज भी उतनी ही शिद्दत के साथ याद किया जाता है जितना उनके समय में उनको याद किया जाता था। अज्ञेय जी की रचनाएं आज भी वर्तमान समय के परिपेक्ष्य में उतनी ही सजीव हैं, उतनी ही तार्किक हैं और उतनी ही समकालीन है जितनी वह अपने समय में थीं। यही अज्ञेय की कुशलता, दूर दृष्टि और परिपक्वता का प्रमाण है। मार्च के महीने में जन्मे अज्ञेय होली के रंगों की तरह ही विविध रंगों से भरपूर थे। आज हम उनको याद करके मानो एक युग को याद कर रहे हैं। अज्ञेय की रचनाओं को समझना वास्तव में एक परिपक्व और सूक्ष्म विवेचना करने वाले को ही आसान लग सकता है। उनकी रचनाओं में छिपे गूढ़ अर्थो, भावार्थों और व्यंग को समझना आसान नहीं है। अज्ञेय उस युग के कवि होते हुए भी इस युग में उतने ही लोकप्रिय हैं, सार्थक हैं, प्रसिद्ध हैं और आज भी उन्हें उतने ही मान-सम्मान से देखा, पढ़ा और समझा जाता है।

एकांत

रोहित सक्सेना, उप महाप्रबंधक (विद्युत)
एनएचपीसी लिमिटेड,फरीदाबाद

मौन या एकांत हर मनुष्य के लिए जरूरी है। इसी एकांत में व्यक्ति स्वयं के साथ होता है और अपने कार्यों पर चिंतन करता है। स्वयं को साधने और खुद से मिलने का जरिया है 'एकांत'। सोच की दिशा सकारात्मक हो तो एकांत से जीवन की संजीवनी निकाल सकते हैं।

एकांत क्या है? यह अन्य मनुष्यों से दूर एक शांत जगह है, जहां हम अपने बारे में सोच सकते हैं, किसी निर्णय पर विचार कर सकते हैं, अपने विचारों को सुन सकते हैं। हम अक्सर काम के तनाव या विषाक्त लोगों से बचने या आराम करने के लिए एकांत की इच्छा रखते हैं। हम कई जगहों पर एकांत पा सकते हैं, जिसमें शयनकक्ष की गोपनीयता, देर रात खाली सड़क पर टहलना, शांत जंगलों के बीच पैदल यात्रा करना, मेपल के पेड़ों के साथ शांतिपूर्ण पार्क में एक बेंच पर बैठना शामिल है। हममें से अधिकांश को संतुलित जीवन जीने के लिए एकांत की आवश्यकता होती है, जिसमें हम संतुष्टि महसूस करते हैं, कल्याण का अनुभव करते हैं। यह एक बुनियादी मानवीय आवश्यकता है। पर फिर भी, बहुत अधिक अकेलापन अवसाद का कारण बन सकता है, जिसके परिणामस्वरूप निराशा हो सकती है और गंभीर स्वास्थ्य परिणाम भी हो सकते हैं। जब कभी अकेलेपन या एकांत की बात होती है, उसे जाने-अनजाने भय से जोड़ दिया जाता है। आमतौर पर माना जाता है कि एकांत डराने वाला होता है, जबकि यह तो स्वयं पर स्वामित्व अर्जित करने का भाव है। अपने साथ समय बिताने से बडा कोई आनंद नहीं। अपने भीतर झांकने की सुखद अनुभूति के आगे कोई और भाव ठहरता ही कहां है? खुद से मिलने का आनंद बेजोड़ है। एक अनूठा सा भाव, जो आज के दौर में कहीं खो गया है।

हम जानते हैं कि जीवन से जुड़े सुंदर पहलू कभी भीड़ का विषय नहीं रहे। प्रेम, स्वाध्याय और आत्मावलोकन जैसी आत्मिक स्तर पर उत्कृष्ट बनाने वाली सभी बातें एकांत से जुड़ी हैं। व्यक्तित्व के आंतरिक और बाह्य परिष्कार के लिए एकांत जरूरी है। हमारी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में भी एकांत साधना के महत्व को रेखांकित किया गया है, क्योंकि हमारे यहां आध्यात्मिक स्तर पर आत्मिक शांति को सर्वोपरि माना गया है, जिसके लिए सार्थक चिंतन की जरूरत होती है। चिंतन की दिशा हमारे दृष्टिकोण को दिशा देती है, जीवन से जुडी चिंताओं व चुनौतियों से उपजी दुविधाओं से पार पाने की शक्ति देती है। एकांत का महत्व आज के समय में ज्यादा है क्योंकि जीवन के हर पहलू पर काफी कुछ अनचाहा भी होता है। भीड़ ने हमारे भीतर कब्जा जमा लिया है। परिस्थितियां ऐसी हैं कि हमारा खुद पर ही अधिकार नहीं। अपना स्वामित्व पाने का एकमात्र मार्ग एकांत ही है।

अकेलापन

दूसरी ओर, अकेलापन एक नकारात्मक स्थिति है, किसी ऐसे व्यक्ति की तीव्र आवश्यकता है जो चला गया है, जैसे कोई पूर्व प्रेमी, या सबसे अच्छा दोस्त जो दूर चला गया हो। यह मानवीय संपर्क और सामाजिक संपर्क की आवश्यकता है। अकेलापन निराशा की भावना है, जो सामाजिक अलगाव के कारण होती है। जिस व्यक्ति के पति या पत्नी की मृत्यु हो गई हो, वह शोक प्रक्रिया के दौरान दर्दनाक अकेलेपन का अनुभव करता है। बुजुर्गों को अक्सर अकेलेपन का दर्द महसूस होता है। वास्तव में, जो कोई भी जीवन की मुख्य धारा, जैसे स्कूल, काम, चर्च, परिवार, दोस्तों से अलग हो जाता है, वह अकेलापन महसूस करता है। अकेलेपन के विपरीत, अकेलापन कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे कोई व्यक्ति अनुभव करना चाहता है। यह उन पर दुर्भाग्य, कठिनाई, हानि, किसी प्रियजन की मृत्यु द्वारा लगाया जाता है।

किसी बाहरी व्यक्ति को एकांत और अकेलापन एक जैसा प्रतीत होता है। उन दोनों की विशेषता एकांतवास है। फिर भी, एकांत अकेलापन नहीं है। यह अकेले होने की एक सकारात्मक स्थिति है, लेकिन अकेलापन नहीं। व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों, स्वयं से जुड़ा हुआ है। उदाहरण के लिए, गहन अध्ययन, ध्यान, प्रार्थना के लिए एकांत की आवश्यकता होती है। आपको एक शांत जगह पर एकांत मिलता है, जहां आप जीवन के अनुभव या स्थिति के बारे में चिंतन या विचार करने में सक्षम होते हैं। उदाहरण के लिए, केवल अपने विचारों के साथ जंगल में अकेले घूमना, या एक शांत समुद्र तट पर चलना या अपने साथ में एक किताब के साथ अकेले बैठना अक्सर ऐसे तरीके हैं जिनसे लोग एकांत का आनंद लेते हैं। एकांत लोगों को उनकी ऊर्जा को रिचार्ज करने, उनके दिमाग से अव्यवस्था दूर करने, उनके विचारों या आंतरिक आत्म को सुनने में मदद करता है। एकांत ढूंढना और अनुभव करना एक व्यक्तिगत पसंद है।

एक के बाद अंत

न शब्द-न शोर। एकांत का सुख वही समझ सकता है जो अपने साथ समय बिताता है। एकांत का अर्थ ही है एक के बाद अंत यानी अकेला। यह वह समय होता है, जब स्वयं को साधने का मार्ग तलाशा जाता है। कोशिश की जाती है मुझको मैं से मिलवाने की। यह मार्ग स्वयं तक ले जाता है। कभी एकांत के पल आत्मावलोकन का अवसर देते हैं तो कभी इस आपाधापी के बीच आत्ममूल्यांकन की दिशा में भी ले जाते हैं। यही वो अनमोल पल होते हैं, जिनसे हमारे विचारों को ईंधन मिलता है। अपने भीतर झांकने के प्रयास में हमारी अपने प्रति आस्था बढ़ती है। नई आशाएं जन्म लेती हैं, वैचारिक सक्रियता पनपती है, अपना मूल्यांकन करने की सोच जाग्रत और पोषित होती है क्योंकि जब हम अकेले होते हैं तो हमारी गति बाह्य न होकर आंतरिक होती है, जो जीवन ऊर्जा को दिशा देती है।

आत्म-सुधार की प्रक्रिया

आत्म-सुधार की प्रक्रिया का पहला चरण एकांत ही है। जो सामाजिक ही नहीं व्यक्तिगत जीवन में भी गुण, कर्म और स्वभाव संबंधी कई बातों के आत्म-निरीक्षण का मौका देता है। यह चिंतन-मनन करते हुए परिशोधन का मार्ग प्रशस्त

करता है। यह प्रक्रिया हमें एक कार्यपद्धति निश्चित करने को प्रेरित करती है ताकि भीतर झांकने का अवसर मिले। एकांत विगत जीवन से सीख लेते हुए वर्तमान और भविष्य के लिए नए पाठ पढ़ाता है। हमारी क्षमताओं व योग्यताओं को आधार देता है। सोच के दायरे को विस्तार देकर सह-अस्तित्व की भावना को पोषित करता है। खुद के भीतर झांकने मात्र से बंधुत्व और सहभागिता की सोच को बल मिलता है। इसके कारण न केवल हमारी आध्यात्मिक उन्नति होती है, बल्कि हम सही अर्थों में समाजनिष्ठ भी बनते हैं। एकांत हमें अंतर्मुखी और आत्मकेंद्रित बनाता है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हमारे अंतर्मन में परिवर्तन की पृष्ठभूमि बनाने के लिए वातावरण तैयार करने में सहायक है। यह जरूरी भी है क्योंकि जीवन में हर पड़ाव पर हमारी सोच और व्यवहार में कई बदलाव अपेक्षित होते हैं। इतना ही नहीं, मन जब तक बहिर्मुखी रहता है, अनगिनत जाल-जंजाल बुनते हुए सांसारिक असमंजस में ही उलझ कर रह जाता है। इन सबमें अपनी ऊर्जा गंवाना मानसिक संतुलन और दृढ़ता के लिए तो घातक है ही, यह हमें नकारात्मकता की ओर भी धकेलता है।

मजबूरी नहीं, जरूरत

एकांत को कई बार अवसाद से भी जोडकर देखा जाता है, पर सच्चाई यह है कि हद से ज्यादा संवाद भी मानसिक पीड़ा के सिवा कुछ नहीं देता। मौजूदा दौर में यही तो हो रहा है। वस्तुएं हों या विचार, जरूरत से ज्यादा दाखिल हो गए हैं हमारे जीवन में। आज की तेज रफ्तार जिंदगी में हम चाहकर भी अकेले नहीं रह पाते। भले ही इंसानों की भीड़ हमारे आसपास न हो, मगर कुछ न कुछ तो हमें घेरे ही रहता है, जो अपने भीतर झांकने का मौका ही नहीं देता। हरदम लोगों से घिरे रहने या हर समय दूसरों से संपर्क में बने रहने के कारण सोचने-विचारने का समय ही नहीं मिलता। हालांकि इस अजब-गजब सी व्यस्तता में भी हर इंसान स्वयं को नितांत अकेला पाता है, मगर इस तरह का खालीपन आत्मचिंतन की राह नहीं सुझाता आत्मचिंतन के लिए आत्म केंद्रित होना जरूरी है। मनुष्यों ही नहीं, बेवजह के विचारों की भीड़ भी इसमें बाधक बनती है। कुछ अनसुलझे प्रश्नों का उत्तर खोजने और नए प्रश्नों के जन्म की वैचारिक प्रक्रिया को निरंतर बनाए रखने के लिए भी एकांत अनिवार्य है। प्रकृति के करीब जाने और जीवन के प्रति आस्था बनाए रखने में भी एकांत की अहम भूमिका है। खुद को जानने, पहचानने और समझने की अनुभूति देने वाला सार्थक एकांत जीवन की जरूरत है। आविष्कारक निकोला टेस्ला के मुताबिक एकांत में हमारा मन केंद्रित और स्पष्ट हो जाता है। निजता के क्षणों में मौलिकता उर्वर हो जाती है। अकेले रहें और विचारों को जन्म लेते देखें। एकांत मन को पोषित और विचारों को समृद्ध करता है क्योंकि जब हमारे आसपास कोई नहीं रहता तो हमारे अपने विचार हमारे पास रहते हैं। स्वयं की भीतरी अभिव्यक्ति मुखर होती है। यही एकांत का सबसे सुंदर और सुखद पहलू है।

इसीलिए एकांत, जिंदगी का जरूरी हिस्सा बने, कभी मजबूरी में चुनी गई राह न बने। सोच की दिशा सकारात्मक हो तो एकांत से जीवन की संजीवनी निकाल सकते हैं। ■■■

भारतीय संविधान- सामाजिक आर्थिक दर्शन

अंशुमन श्रीवास्तव, विपणन अधिकारी, विपणन एवं
निरीक्षण निदेशालय, फरीदाबाद

आधुनिक समय में राज्य की अवधारणा में आमूल-चूल परिवर्तन आया है। राज्य के कार्यों के व्यक्तिवादी दृष्टिकोण और हस्तक्षेप सिद्धान्त को अस्वीकार कर दिया गया है। कल्याणकारी राज्य की अवधारणा उभरी है और इसे व्यापक मान्यता मिली है। प्रत्येक राज्य एक कल्याणकारी राज्य बनने की ओर अग्रसर है। जनता का सामाजिक-आर्थिक विकास के अपने उद्देश्य को स्पष्ट रूप में रेखांकित किया था।

जनता की सामाजिक-आर्थिक मुक्ति राष्ट्रीय आंदोलन की आधार-शिलाओ में से एक थी। कराची कांग्रेस के प्रस्ताव में स्पष्ट रूप से कहा गया है- जनता के शोषण को समाप्त करने के लिए, राजनीतिक स्वतंत्रता में भूखे लाखों लोगो के लिए वास्तविक आर्थिक स्वतंत्रता शामिल होनी चाहिए। इसमें मौलिक अधिकार और आर्थिक कार्यक्रम के शीर्षक शामिल हैं। कई कल्याणकारी योजनाएं तथा नीतियां और एक आर्थिक कार्यक्रम भी इसमें औद्योगिक श्रमिकों के लिए जीवन निर्वाह, मजदूरी, श्रम के सीमित होते काम की स्थिति बीमारी और बेराजगारी को शीर्ष पर रखकर प्राथमिकता दी गई। महिलाओं की सुरक्षा और विशेष रूप से प्रसूति अवधि के दौरान छुट्टी के लिए पर्याप्त प्रावधान किया गया।

भारत के संविधान का विस्तृत सामाजिक-आर्थिक दर्शन है, जो संविधान के भागों में दृष्टिगोचर होता है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में भारत को सम्प्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य कहा गया है जिसका अर्थ है कि भारत की सम्पूर्ण शक्ति इसके राज्यों में निहित है और जब तक नागरिक ही स्वतंत्र और बेहतर जीवन प्राप्त नहीं करेंगे तब तक भारत के संविधान का सामाजिक-आर्थिक दर्शन पूर्णता को प्राप्त नहीं करेगा।

संविधान की प्रस्तावना ही सामाजिक और आर्थिक उददेश्यों का प्रतीक है। यह अपने सभी नागरिकों को सुरक्षा प्रदान करने की बात करता है। जहां वर्तमान समाज के सामाजिक - आर्थिक न्याय की बात होती है तो इसका भी मार्गदर्शन हमारा संविधान देता है, जिसमें देश के समस्त नागरिकों को प्रस्तावना में निहित सामाजिक आर्थिक समानता महत्वपूर्ण है। परन्तु विषय यह है कि क्या प्रस्तावना की सम्पूर्ण विषय वस्तु को ईमानदारीपूर्वक नागरिको के संदर्भ में लागू किया जा रहा है अथवा नहीं। इसी संदर्भ में डॉ० अंबेडकर का कथन याद आता है कि-

'अगर मुझे लगता है कि संविधान का दुरुपयोग हो रहा है, तो मैं इसे जलाने वाला पहला व्यक्ति होऊंगा।'

वर्तमान समय में डॉ. अंबेडकर की शंका कुछ हद तक सत्य प्रतीत हो रही है। जहां आज देश 1 अरब 50 करोड़ के अप्रत्याशित जनसंख्या के आंकडे को पार कर गया है परंतु इसी अनुपात में नागरिकों के सामाजिक-आर्थिक विकास में तेजी नहीं आई है। यह भावना कि सामाजिक-आर्थिक न्याय के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता का देश की जनता के लिए कोई महत्व नही होगा, संविधान की प्रस्तावना में अपनी अभिव्यक्ति पाई। दूसरे शब्दों में, संविधान की प्रस्तावना में और अधि कांश महत्वपूर्ण लेख इस तथ्य पर जोर देते हैं कि भारत की जनता के लिए तथा राजनीतिक स्वतंत्रता के अर्थ के लिए यह आवश्यक है कि सामाजिक-आर्थिक न्याय प्राप्त किया जाए।

सामाजिक-आर्थिक न्याय और समानता के संदर्भ में संविधान सभा में सदस्यों के मध्य मतभेद रहे कि किस तरह से नागरिकों के मध्य से सामाजिक-आर्थिक असमानता का निदान किया जाए। इसी क्रम में डॉ० भीमराव अंबेडकर की सहभागिता महत्वपूर्ण रही जिन्होंने समाज के सबसे कमजोर वर्गों को केंद्रित किया और संविधान के प्रारूप में विभिन्न प्रावधानों को स्थापित करके समाजिक-आर्थिक न्याय और समानता को स्थापित करने का प्रथम प्रयास किया।

भगवद गीता का उत्तर

संजीव कुमार, महाप्रबंधक (जनसंर्पक)- राजभाषा
एनएचपीसी लिमिटेड, फरीदाबाद

कोई आपसे बुरी तरह से पेश आए तो क्या आपको फिर भी उस पर दया दिखानी चाहिए?

जीवन चुनौतियों से भरा हुआ है और एक सबसे कठिन चुनौती उन लोगों का सामना करना है जिन्होंने हमारे साथ गलत किया हो। चाहे वह कोई दोस्त हो, जिसने आपका विश्वास तोड़ा हो, कोई सहयोगी, जिसने आपके काम का श्रेय लिया हो, या कोई परिवारिक सदस्य, जिसने आपको निराश किया हो। यह स्वाभाविक है कि आप चोटिल महसूस करें और कभी-कभी गुस्सा भी आए। सवाल यह उठता है कि क्या आपको फिर भी उनके साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए? या बदला लेना चाहिए, गुस्सा पालना चाहिए, या बस उन्हें अपनी जिन्दगी से बाहर कर देना चाहिए? भगवद् गीता, जो हिंदू दर्शन में एक अत्यंत आदरणीय शास्त्र है, इस दुविधा पर गहरी समझ प्रदान करती है।

अपना धर्म समझना: धार्मिकता के साथ प्रतिक्रिया देना - विनम्र होना

भगवद् गीता, जो कुरुक्षेत्र के युद्ध भूमि पर भगवान श्री कृष्ण और अर्जुन के बीच संवाद है, धर्म के सिद्धांत पर बल देती है- अर्थात अपने नैतिक कर्तव्य की ओर अग्रसर होना सीखाती है जब हमें अन्याय या बुरे व्यवहार का सामना करना पड़ता है, तो कृष्ण यह नहीं कहते कि हमें चुपचाप सहन करना चाहिए या अंधे प्रतिशोध का पालन करना चाहिए। इसके बजाय, वह यह सिखाते हैं कि प्रत्येक कार्य को हमारे धर्म के अनुसार होना चाहिए। इसका मतलब है कि हमें न्याय संगत, उचित और अपने मूल्यों के अनुरूप प्रतिक्रिया करनी चाहिए। यदि किसी ने आप के साथ गलत किया है, तो अच्छा व्यवहार करना यह नहीं है कि आप उन्हें अपने ऊपर हावी होने का मौका दें। इसका मतलब है समझदारी और अविरलता के साथ प्रतिक्रिया देना। आपको उनके स्तर तक नहीं गिरना है, लेकिन आपको अपनी भावनाओं को दबाना भी नहीं है। भाव यह है कि हम जागरूकता के साथ कार्य करें और गुस्से से अपने निर्णय को प्रभावित न होने दें।

कर्म योग की शक्ति: बिना आसक्ति के कार्य

भगवद् गीता की एक केंद्रीय शिक्षा है कर्म योग - निस्वार्थ कर्म का मार्ग। कृष्ण अर्जुन को यह सलाह देते हैं कि वह अपने कर्तव्यों को बिना किसी परिणाम की आशा के करें। यह सिद्धांत हम दूसरों के साथ अपने व्यवहार पर भी लागू कर सकते हैं, भले ही वे हमें आहत करें। जब कोई हमारे साथ गलत तरीके से पेश आता है, तो हमारे पास एक विकल्प होता है। आप दयालुता से प्रतिक्रिया कर सकते हैं, यह नहीं कि वे इसके लायक हैं, बल्कि इसलिए कि यह आपके उच्चतम आत्म के साथ मेल खाता है। इसका मतलब यह नहीं है कि उनके गलत काम को नजर अंदाज किया जाए बल्कि इसका अर्थ यह है कि आप अपनी मानसिक शांति बनाए रखें। यदि आपकी प्रतिक्रिया गुस्से या बदला लेने

से प्रेरित है तो आप नकारात्मकता में उलझ जाते हैं। लेकिन यदि आप स्पष्टता और करुणा के साथ प्रतिक्रिया करते हैं तो आप स्थिति से ऊपर उठ जाते हैं।

माफी और कमजोरी

कई लोग माफी को कमजोरी मानते हैं। हालांकि, भगवद् गीता यह सिखाती है कि असली ताकत आत्म-नियंत्रण और आंतरिक शांति में है। अगर आप कड़वाहट को पकड़ कर रखते हैं, तो आप अतीत से जुड़ जाते हैं, जबकि माफी आपको स्वतंत्र करती है। कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि जो व्यक्ति अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखता है और अपने कर्तव्यों में अडिग रहता है, वही असली बलशाली है। किसी को माफ कर देने का मतलब यह नहीं है कि आप उनके कर्मों को माफ कर रहे हैं। इसका मतलब यह है कि आप कड़वाहट का बोझ अपने ऊपर नहीं रखने का निर्णय लेते हैं। आप सीमाएं निर्धारित कर सकते हैं, न्याय सुनिश्चित कर सकते हैं और फिर भी एक दयालु हृदय बनाए रख सकते हैं। माफी की क्षमता आंतरिक ताकत का प्रतीक है, कमजोरी नहीं।

वैराग्य: एक उच्च दृष्टिकोण - आत्म प्रेम

गीता में वैराग्य का भी उल्लेख है, यानि मानसिक अवकाश। इसका अर्थ यह नहीं है कि जीवन से बाहर निकल जाएं, बल्कि इसका अर्थ यह है कि आप भावनात्मक संतुलन बनाए रखें। जब लोग हमें नुकसान पहुंचाते हैं तो यह हमें गहरे तौर पर प्रभावित करता है क्योंकि हम उनके अनुमोदन या मान्यता से जुड़े होते हैं। वैराग्य का अभ्यास करके, हम बाहरी मान्यता की आवश्यकता से मुक्त हो जाते हैं और अपने अंदर शांति पाते हैं। अगर कोई आपको अपमानित करता है, तो तुरंत प्रतिक्रिया देने की बजाय, एक कदम पीछे हटें और देखें। यह क्यों चोट पहुंचाता है? क्या इसलिए कि उनके शब्दों में सत्य है या इसलिए कि आप उनकी स्वीकृति चाहते हैं? कृष्ण सिखाते हैं कि जो ज्ञानी हैं, वे प्रशंसा और निंदा दोनों को समान रूप से देखते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि हम अपनी भावनाओं को दबाते हैं, बल्कि इसका अर्थ है कि हम छोटे -मोटे झगड़ों से ऊपर उठकर जीवन जीते हैं।

हिंदी

हिंदी भाषा सबसे प्यारी, दिखती है यह अजब निराली।
स्वर और व्यंजन ताना-बाना, हमने इनको अपना माना।
राजभाषा का दर्जा देकर, हमें देश का गर्व बढ़ाना।।

हिंदी भाषा सबसे प्यारी, दिखती है यह अजब निराली।
आओ हम मिलकर जाने, हिंदी को अपना माने।
शब्दों में है मिठास, कर दे सबको दिल के पास।।

हिंदी भाषा सबसे प्यारी, दिखती है यह अजब निराली।
पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण, हिंदी के स्वर में ही बोलें।
आओ हम सब हिंदी बोलें, शब्दों की परिभाषा खोलें।।

हिंदी भाषा सबसे प्यारी, दिखती है यह अजब निराली।
चीन कर रहा सिर्फ चीनी में काम, हम भी बढ़ाएं देश का मान।
राष्ट्रभाषा से हमें है प्यार, फिर क्यों इतना सोच-विचार।।

हिंदी भाषा सबसे प्यारी दिखती है यह अजब निराली।

भारती मिधोरे, पुस्तकालय सूचना सहायक
आरएलआई, फरीदाबाद

सकारात्मक सोच – एक अद्भुत शक्ति

मीनाक्षी कालरा, निजी सचिव
एनएचपीसी लिमिटेड, फरीदाबाद

सकारात्मक सोच का अर्थ:- यह एक ऐसी धारणा है जो हमें जीवन को संवेदना के साथ देखने के लिए प्रेरित करती है। सकारात्मक सोच का अर्थ है कि हर परिस्थिति में संभावनाओं को देखना एवं समाधान खोजना। यह व्यक्ति को अवसरों को पहचानने तथा उन्हे शक्ति देती है जिससे लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफलता मिलती है। सकारात्मकता हमारे मन को पॉजिटिव बनाती है, तथा हमें दिव्यता का अनुभव कराती है क्योंकि सकारात्मकता ही निर्मलता की निशानी है और मन की निर्मलता ही परम सुख है।

सकारात्मक सोच का हमारे जीवन में महत्व

जीवन, हमेशा चलते रहने वाले प्रवाह की तरह है, जहां ढेर सारी खुशियों के बीच में दु:ख भी आते हैं। बहुत सारी खुशियों के बाद, दु:ख भी उतना ही आता है और यही चक्कर फिर से चालू होता है। यह एक कभी ना खत्म होने वाला चक्र है। इन उतार-चढ़ावों के बीच हमारी सोच ही वह नौका है जो हमे जीवन रूपी समुद्र में आगे बढ़ाती है। सकारात्मक दृष्टिकोण, इस भयावह उतार-चढ़ाव वाले चक्र से निकलने की चाबी है।

जब हम किसी भी परिस्थिति में जीवन को सर्वोपरि समझते हैं और छोटी-छोटी बातों में खुशियाँ ढूंढते हैं तो हमारी जीवनशैली और दृष्टिकोण बदलता है। जिससे सफलता के रास्ते खुलते हैं।

सकारात्मक सोच के फायदे

- सकारात्मक सोच से मन में उमंग और उत्साह से भर उठता है।
- सकारात्मक सोच से जीवन में तनाव कम होता है।
- सकारात्मक सोच से व्यक्ति की कार्यक्षमता बढ़ती है।
- सकारात्मक सोच से व्यक्ति का व्यक्तित्व बेहतर बनाने में लाभकारी है।

जीवन में सकारात्मक सोच विकसित करने के उपाए

जीवन की विभिन्न परिस्थितियाँ जैसे सुख-दुख, सफलता-विफलता, हार-जीत आदि एक ही सिक्के के दो पहलू हैं इन्ही से जीवन को गति मिलती है। गतिमान जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में घबराना नही चाहिए। सफलता के लिए प्रयत्नशील रहने के साथ-साथ असफलता को भी स्वीकार करने की मानसिकता विकसित करनी चाहिए। सकारात्मक सोच विकसित करने के उपाए लिए निम्न उपाए लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं:

- दूसरों को बदलने की कोशिश न करें।
- व्यर्थ की बातों पर ध्यान न दें।
- असफलता से घबराएं नहीं।
- दूसरों से अपेक्षाएं न रखें।
- सकारात्मक दृष्टिकोण से आगे बढ़ें।
- हर समस्या का समाधान संभव है यही सोच रखें।
- कोई भी परिस्थिति या कठिनाई जीवन से बड़ी नही हो सकती।
- अधिक से अधिक अच्छा सोचें, दूसरों की सराहना करें जो देंगे वही दौगुना हो कर आपके पास वापिस आएगा।
- ईश्वर के प्रति आस्था एवं समर्पण का भाव रखना चाहिए जिससे एक अलग आत्मविश्वास पैदा होता है।

सकारात्मक लोग अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित रखते हैं और उसे पाने के तरीके खोजते रहते हैं। वे अपने लक्ष्यों के बारे में स्पष्ट होते हैं और उन्हें पूरा विश्वास होता है कि वे उसे पा ही लेंगे। जीवन से क्या लेना है, इस पर ध्यान केंद्रित करते हुए वास्तविकता की ओर बढ़ने की योजना बनानी चाहिए। असफलता जीवन का एक हिस्सा है और इसे लेकर निराशा नहीं होनी चाहिए। इसके बजाय, हमें यह याद रखना चाहिए कि हर परिस्थिति से कुछ सकारात्मक सीख मिल सकती है और इसलिए अपनी तुलना दूसरों से नहीं करनी चाहिए। ध्यान रखना चाहिए कि हर व्यक्ति अद्वितीय है और हर किसी के पास अपनी एक विशेष कहानी है।

यात्रा-वृत्तांत

वी-पावर-एसएआर 100 प्रशिक्षण शृंखला में भागीदारी

भावना चौधरी, उप निदेशक
एनपीटीआई कॉरपोरेट कार्यालय, फरीदाबाद

विश्व बैंक तथा आस्ट्रेलियाई विदेश मामलों और व्यापार विभाग (डीएफएटी) के वित्त पोषण से वी-पावर-एसएआर100 प्रशिक्षण कार्यक्रम का दक्षिण एशिया के बैंकॉक (थाईलैंड) में 4 से 8 मार्च 2024 तक पैलेडियम इंटरनेशनल के माध्यम से आयोजन किया गया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए दक्षिण एशिया के 7 देशों अर्थात् भूटान, बांग्लादेश, मालदीव, पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल एवं भारत से कुल 100 महिलाओं को प्रशिक्षण के लिए चुना गया। सौभाग्य से अधिकतर विद्युत क्षेत्र से जुड़ी 32 भारतीय विद्युत पेशेवरों में, मेरा नाम भी शामिल था।

इस कार्यक्रम के नियमित आयोजन से पूर्व हाइब्रिड मोड में 8 महीनों में 10 मॉड्यूल में नामित प्रतिभागियों को सामूहिक रूप से अपने कार्य-स्थलों पर ही प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

हाइब्रिड मोड में चले इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में हमारी महानिदेशक डॉ. तृप्ता ठाकुर ने अध्यापिका एवं भारतीय समन्वयक की भूमिका अदा की। इस अवधि में 15-16 फरवरी 2024 को भारत की ओर से प्रतिनिधित्व करने वाली 32 कार्यपालक महिलाओं ने एनपीटीआई के कॉरपोरेट कार्यालय में इस शृंखला के प्रशिक्षण के लिए शिरकत की। इन दो दिनों में भारतीय विद्युत क्षेत्र की 32 उत्साही अनुभवी महिला व्यावसायिकों ने हमारे एनपीटीआई की महानिदेशक डॉ. तृप्ता ठाकुर और प्रधान निदेशक डॉ. मंजू के साथ तत्कालीन माननीय केंद्रीय विद्युत और नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री आर.के. सिंह जी से भी एक शिष्टाचार मुलाकात की। इस अवसर पर उनके साथ श्री पंकज अग्रवाल, सचिव, विद्युत मंत्रालय एवं वी-पावर विश्व बैंक भागीदारी समन्वयक सुश्री तनुश्री भौमिक सहित मंत्रालय के सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/संगठनों के कई सीएमडी भी उपस्थित थे।

इस मुलाकात में तत्कालीन केंद्रीय मंत्री ने सभी महिला व्यावसायिकों से प्रशिक्षण के संबंध में गहराई से बातचीत करते हुए उन्हें अपनी महत्वाकांक्षाएं ऊंची रखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि मैं कार्य-स्थल को जेंडर के आधार पर नहीं, बल्कि क्षमता के आधार पर देखता हूँ। अर्थात् आप में क्षमता है तो एक दिन आप किसी भी संगठन या उपक्रम के शीर्ष पर अवश्य पहुंच जाएंगी।

लगभग 8 महीने के ऑनलाइन प्रशिक्षण के उपरांत सभी सरकारी औपचारिक क्लीयरेंस के बाद 2 मार्च 2024 को नई दिल्ली के अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से मैंने कैपस्टोन-बैंकॉक, थाइलैंड के लिए उड़ान भरी। यह एक अलग प्रकार की यात्रा थी, जिसमें वी-पावर-एसएआर100 की कई अन्य साथी मेरे संग फ्लाइट में मौजूद थीं।

कुछ घंटों की उड़ान के बाद हमने बैंकॉक-थाइलैंड की धरती पर कदम रखा, यह एक अविस्मरणीय पल था। 4 मार्च 2024 की सुबह कैपस्टोन प्रोजेक्ट और पुरस्कार समारोह के लिए हम सभी एशियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एआईटी) के यूनुस सेंटर पर एकत्रित हुए। कैपस्टोन प्रोजेक्ट का उद्देश्य सभी प्रतिभागियों को थाईलैंड में वास्तविक दुनिया का अनुभव प्रदान करना था, इसके साथ-साथ यहां हमने नई प्रौद्योगिकियों के बारे में जाना और उन्हें सीखा भी। 4 से 8 मार्च 2024 तक चले अकादमिक क्रेडिट वाले इस 5 दिवसीय कार्यक्रम में सार्क देशों की सभी महिला

इंजीनियरों ने पारस्परिक रूप से इंटरेक्टिव सत्रों में अपनी उपलब्धियों का जश्न मनाया, जो विद्युत एवं ऊर्जा क्षेत्र में महिलाओं के सशक्तिकरण को भी रेखांकित करता है। इस दौरान हमने दक्षिण एशिया क्षेत्रीय अवसंरचना कनेक्टिविटी (एसएआरआईसी) की पहल को नजदीक से जाना। इसमें शिक्षण मॉड्यूल और व्यावहारिक अनुभवों को भी साझा करने का मौका मिला। सभी सहयोगियों ने एआईटी के ऊर्जा विकास, प्रणाली प्रबंधन और प्रौद्योगिकी की बारीकियों को भी जाना। कार्यक्रम के समापन पर प्रतिष्ठित लेखिका और समाजसेवी डॉ. सुधा मूर्ति ने न केवल अपनी उपस्थिति से, बल्कि हमें प्रोफेशनल प्रमाण-पत्र प्रदान कर इस अवसर को भव्य बनाया और वे हमारी प्रेरणास्रोत भी बनीं। इसके उपरांत हम सभी 10 मार्च 2024 को अपने वतन वापस लौट आए।

अंत में, मैं अपनी महानिदेशक डॉ. तृप्ता ठाकुर महोदया का शुक्रिया करना चाहूंगी, जिन्होंने मुझे इस चिंतनशील कार्यक्रम के लिए नामित किया। इस कार्यक्रम से मुझे जो सीखने को मिला वह वर्तमान में एनपीटीआई तथा भविष्य में समग्र पावर सेक्टर को डिलिवर कर सकूं - यही मेरी आकांक्षा है।

■■■

प्रेरक प्रसंग

सफलता की कुंजी

एक दिन स्वामी विवेकानंद से एक व्यक्ति लगातार प्रश्न पूछ रहा था। उसने कहा कि मैं दिनभर कई काम करता हूँ, खूब प्रयास करता हूँ, लेकिन कोई भी काम पूरा नहीं हो पाता है।

विवेकानंद जी उस व्यक्ति को कुछ समझाते, उससे पहले वह फिर से बोलना शुरू कर देता। स्वामी जी ने उस व्यक्ति से कहा कि क्या आप मेरा एक काम कर सकते हैं?

व्यक्ति ने कहा कि बताइए, क्या काम है?

स्वामी जी ने कहा कि आश्रम में एक कुत्ता है, उसे आप घुमा लाइए।

स्वामी जी की बात मानकर वह व्यक्ति कुत्ते को घुमाने ले गया। एक घंटे बाद जब वह व्यक्ति कुत्ते को घुमाकर लौटा।

व्यक्ति कम थका हुआ था, लेकिन कुत्ता बहुत ज्यादा थक गया था।

विवेकानंद जी ने उस व्यक्ति से पूछा कि आप दोनों साथ गए और साथ लौटे, लेकिन ये कुत्ता बहुत अधिक थका हुआ है और आप कम थके हैं। ऐसा क्यों हुआ?

उस व्यक्ति ने कहा कि ये कुत्ता इधर-उधर दौड़ रहा था। दूसरे कुत्तों पर भौंक रहा था, इस वजह से ये थक गया है। मैंने ज्यादा भाग-दौड़ नहीं की, इसलिए मैं नहीं थका।

स्वामी जी ने कहा कि आपकी परेशानी का हल भी यही है। आप दिनभर कई काम एक साथ करते हैं, भागदौड़ करते हैं। एक साथ कई कामों में आपकी ऊर्जा नष्ट होती है। इस वजह से आपको सफलता नहीं मिलती है। आपको किसी एक लक्ष्य को तय करके उस पर काम करना चाहिए, तभी सफलता मिल सकती है।

– साभार

मखाना की उत्पत्ति

सुन्दर सहनी, वरिष्ठ कार्यालय अधीक्षक
एनएचपीसी लिमिटेड, फरीदाबाद

फूल मखाना, जिसे सामान्यत: मखाना या कमल का बीज कहा जाता है, एक अत्यंत महत्वपूर्ण और लोकप्रिय खाद्य पदार्थ है, जिसका उपयोग भारतीय उपमहाद्वीप और एशिया के अन्य हिस्सों में किया जाता है। इसके बीज मुख्यत: तालाब या जलाशयों में उगाए जाते हैं, और यह पौष्टिकता के साथ ही आयुर्वेदिक गुणों के लिए भी प्रसिद्ध है। फूल मखाना का सेवन भोजन के रूप में हजारों वर्षों से किया जाता रहा है और इसकी उत्पत्ति और उपयोग का इतिहास अत्यंत समृद्ध और महत्वपूर्ण है। इस लेख में, हम फूल मखाना की उत्पत्ति, इसके इतिहास, पारंपरिक उपयोग और आज के आधुनिक युग में इसके महत्व को समझेंगे।

मखाना का उत्पत्ति और इतिहास

मखाना की उत्पत्ति एशिया में हुई मानी जाती है, विशेष रूप से भारत और चीन में। मखाना कमल के पौधे '*Euryale fero*' के बीजों से प्राप्त होता है, जो मुख्यत: तालाबों, झीलों और स्थिर जलाशयों में उगता है। मखाना की खेती का इतिहास हजारों वर्षों पुराना है और इसका उपयोग प्राचीन काल से धार्मिक, औषधीय, और खाद्य उद्देश्यों के लिए होता रहा है।

मखाना की सबसे पहले खेती कहां और कैसे शुरू हुई, इसके बारे में स्पष्ट प्रमाण नहीं हैं, लेकिन इसका उल्लेख प्राचीन चीनी और भारतीय ग्रंथों में मिलता है। चीन में इसे औषधीय गुणों के लिए अत्यधिक मूल्यवान माना जाता था और इसका उपयोग पारंपरिक चीनी चिकित्सा में किया जाता था। इसी प्रकार, भारत में मखाना का उपयोग न केवल भोजन के रूप में, बल्कि धार्मिक अनुष्ठानों और आयुर्वेदिक उपचारों में भी किया जाता था।

भारत में मखाना की खेती

भारत में मखाना की खेती का सबसे बड़ा केंद्र बिहार राज्य है, खासकर मिथिला क्षेत्र में। बिहार के मिथिला क्षेत्र को मखाना उत्पादन के लिए प्रसिद्ध माना जाता है। बिहार के कुछ प्रमुख जिले जहां मखाना की व्यापक खेती होती है। मखाना का उत्पादन मुख्य रूप से मधुबनी, दरभंगा, सुपौल, सीतामढ़ी और पूर्णिया जिलों में किया जाता है। इनमें से मधुबनी और दरभंगा जिलों को मखाना उत्पादन के लिए सबसे अधिक प्रसिद्ध माना जाता है, जहां की जलवायु और जल स्रोत मखाना की खेती के लिए उपयुक्त हैं। इन जिलों में

मखाना की खेती एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है और यह ग्रामीण समुदायों की आजीविका का मुख्य स्रोत है और यहां की जलवायु और भूगोल मखाना की खेती के लिए आदर्श मानी जाती है। इस क्षेत्र में मखाना की खेती की पारंपरिक विधियों का पालन किया जाता है और यहां के किसान मखाना की खेती और उत्पादन में विशेषज्ञ होते हैं।

मखाना की खेती आमतौर पर तालाबों या जलाशयों में की जाती है। यह पौधा पानी में उगता है और इसके बीज तालाब

की सतह पर तैरते रहते हैं। मखाना के बीजों को एकत्र करने की प्रक्रिया कठिन होती है क्योंकि इन्हें तालाब की सतह से हाथों से एकत्र किया जाता है। इसके बाद, इन बीजों को सुखाया जाता है और फिर भूनकर इनका उपयोग किया जाता है।

फूल मखाना का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व

भारत में मखाना का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व अत्यधिक है। हिंदू धर्म में मखाना का उपयोग कई धार्मिक अनुष्ठानों में किया जाता है। विशेष रूप से व्रत या उपवास के समय मखाना का सेवन किया जाता है क्योंकि यह शुद्ध और सात्विक भोजन माना जाता है। मखाना का उपयोग विशेष रूप से व्रत के दौरान इसलिए किया जाता है क्योंकि यह हल्का होता है, फिर भी इसमें आवश्यक पोषक तत्व होते हैं जो उपवास के दौरान शरीर को ऊर्जा प्रदान करते हैं।

इसके अलावा, मखाना का उपयोग कई भारतीय त्योहारों और धार्मिक समारोहों में प्रसाद के रूप में किया जाता है। इसे देवताओं को अर्पित किया जाता है और भक्तों में वितरित किया जाता है। इसके धार्मिक महत्व के कारण, मखाना को एक पवित्र और शुद्ध भोजन के रूप में देखा जाता है।

मखाना के आयुर्वेदिक गुण

मखाना को आयुर्वेद में एक महत्वपूर्ण औषधीय पौधा माना गया है। आयुर्वेदिक ग्रंथों में इसका उल्लेख शरीर को ठंडक पहुंचाने, पाचन में सुधार करने और शरीर की ऊर्जा को बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थ के रूप में किया गया है। मखाना में प्रचुर मात्रा में प्रोटीन, फाइबर, एंटीऑक्सिडेंट और खनिज पाए जाते हैं, जो इसे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी बनाते हैं।

आयुर्वेद के अनुसार, मखाना का सेवन शरीर को संतुलित करता है और तीनों दोषों - वात, पित्त और कफ को नियंत्रित करता है। यह पाचन तंत्र को मजबूत करता है, हृदय को स्वस्थ रखता है और रक्तचाप को नियंत्रित करता है। इसके अलावा, मखाना का सेवन मानसिक शांति और स्थिरता प्रदान करता है और यह तनाव को कम करने में सहायक होता है।

मखाना के पोषक तत्व

फूल मखाना को एक 'सुपरफूड' कहा जा सकता है, क्योंकि इसमें कई पोषक तत्व होते हैं जो शरीर के समग्र स्वास्थ्य के लिए आवश्यक होते हैं। मखाना में निम्नलिखित पोषक तत्व पाए जाते हैं-

प्रोटीन	मखाना में प्रोटीन की मात्रा प्रचुर होती है, जो इसे शाकाहारियों के लिए एक उत्कृष्ट प्रोटीन स्रोत बनाती है। प्रोटीन शरीर की मांसपेशियों की वृद्धि और पुनर्निर्माण में मदद करता है।
फाइबर	मखाना में उच्च मात्रा में फाइबर पाया जाता है, जो पाचन को बेहतर बनाता है और कब्ज की समस्या को दूर करता है।
एंटी-ऑक्सिडेंट	मखाना में कई प्रकार के एंटीऑक्सिडेंट होते हैं, जो शरीर में मुक्त कणों के प्रभाव को कम करते हैं और कोशिकाओं की सुरक्षा करते हैं।
खनिज	मखाना में कैल्शियम, मैग्नीशियम, फॉस्फोरस, और पोटेशियम जैसे महत्वपूर्ण खनिज पाए जाते हैं, जो हड्डियों की मजबूती, हृदय स्वास्थ्य, और मांसपेशियों के कार्य के लिए आवश्यक होते हैं।

मखाना का आधुनिक उपयोग और महत्व

आज के समय में मखाना न केवल पारंपरिक रूप से, बल्कि एक आधुनिक और स्वस्थ स्नैक के रूप में भी अत्यधिक लोकप्रिय हो गया है। मखाना की बढ़ती लोकप्रियता का कारण यह है कि यह कम कैलोरी और उच्च पोषण वाला खाद्य पदार्थ है, जो वजन घटाने और स्वस्थ जीवनशैली के लिए आदर्श है। इसके अलावा, मखाना ग्लूटेन-फ्री होता है, जिससे यह उन लोगों के लिए भी सुरक्षित होता है जिन्हें ग्लूटेन से एलर्जी होती है।

मखाना को भूनकर हल्का और कुरकुरा स्नैक बनाया जा सकता है, जिसे मसालों के साथ या सादे रूप में खाया जा सकता है। आजकल बाजार में मखाना के कई फ्लेवर भी उपलब्ध हैं, जो इसे आधुनिक युवाओं के बीच एक लोकप्रिय विकल्प बनाते हैं। इसके अलावा, मखाना का उपयोग कई प्रकार के व्यंजनों में भी किया जाता है।

मखाना की खेती के साथ चुनौतियां

हालांकि मखाना का उत्पादन और खपत बढ़ रही है, लेकिन इसकी खेती से जुड़ी कई चुनौतियां भी हैं। मखाना की खेती श्रम-प्रधान होती है और इसमें बहुत अधिक मेहनत और समय लगता है। मखाना के बीजों को एकत्र करना और फिर उन्हें तैयार करना एक लंबी और कठिन प्रक्रिया है। इसके अलावा, जलवायु परिवर्तन और जल स्रोतों की कमी के कारण मखाना की खेती पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

बिहार में, जहां मखाना की सबसे अधिक खेती होती है, किसानों को मखाना की खेती से संबंधित कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जैसे कि तालाबों का सूखना, उपज की कमी, और उचित मूल्य न मिलना। हालांकि सरकार और कृषि वैज्ञानिकों द्वारा मखाना की खेती में सुधार लाने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं, फिर भी किसानों को इन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

निष्कर्ष:

फूल मखाना एक अद्वितीय खाद्य पदार्थ है, जिसका इतिहास, सांस्कृतिक महत्व और स्वास्थ्य संबंधी लाभ अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। इसका उत्पादन मुख्य रूप से भारत के बिहार राज्य में होता है, जहां इसे पारंपरिक विधियों से तैयार किया जाता है। मखाना का उपयोग न केवल भोजन के रूप में, बल्कि धार्मिक और औषधीय उद्देश्यों के लिए भी किया जाता है।

आज के समय में मखाना एक आधुनिक और स्वस्थ स्नैक के रूप में लोकप्रिय हो रहा है और इसके पोषक गुण इसे एक आदर्श स्वास्थ्यवर्धक खाद्य पदार्थ बनाते हैं। हालांकि मखाना की खेती में कई चुनौतियां हैं, लेकिन इसका भविष्य उज्ज्वल है, और यह एक महत्वपूर्ण खाद्य स्रोत बना रहेगा।

हरित ऊर्जा और नवीकरणीय ऊर्जा

प्रीति जैन, सहायक प्रबंधक (सचिव)
एनएचपीसी लिमिटेड, फरीदाबाद

हरित ऊर्जा की परिभाषा क्या है?

हरित ऊर्जा वह ऊर्जा है जिसे ऐसी विधि से और ऐसे स्रोत से उत्पादित किया जा सकता है, जिससे प्राकृतिक पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं पहुंचता।

हरित ऊर्जा और नवीकरणीय ऊर्जा में क्या अंतर है?

'हरित ऊर्जा' और 'नवीकरणीय ऊर्जा' शब्दों का अक्सर एक-दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन उनके बीच एक अहम (कभी-कभी भ्रमित करने वाला) (अंतर) होता है। जबकि ज्यादातर हरित ऊर्जा स्रोत नवीकरणीय भी होते हैं, लेकिन सभी नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को पूरी तरह से हरित नहीं माना जाता है।

अक्षय ऊर्जा ऐसे स्रोतों से आती है जो लगातार और प्राकृतिक रूप से नवीनीकृत होते रहते हैं (इसलिए इसका नाम ऐसा है), जैसे पवन ऊर्जा और सौर ऊर्जा। अक्षय ऊर्जा को अक्सर संधारणीय ऊर्जा भी कहा जाता है।

एक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत को 'हरित' नहीं माना जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि कुछ कार्बन उत्सर्जन ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए प्रयुक्त प्रक्रियाओं से जुड़ा हो - जैसे कि बुनियादी ढांचे का निर्माण।

नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के कुछ उदाहरणों में शामिल हैं:

बायोमास

पौधों और जानवरों से प्राप्त कार्बनिक पदार्थ, जैसे लकड़ी, कृषि फसलें या नगरपालिका का ठोस कचरा। बायोमास को इमारतों को गर्म करने या बिजली पैदा करने के लिए भाप टर्बाइनों को चलाने के लिए जलाया जा सकता है।

भूतापीय

रेडियोधर्मी कणों के क्षय से पृथ्वी के कोर से निकलने वाली गर्मी। भूतापीय ऊर्जा का उपयोग बिजली उत्पन्न करने या प्रत्यक्ष ऊष्मा स्रोत के रूप में किया जा सकता है।

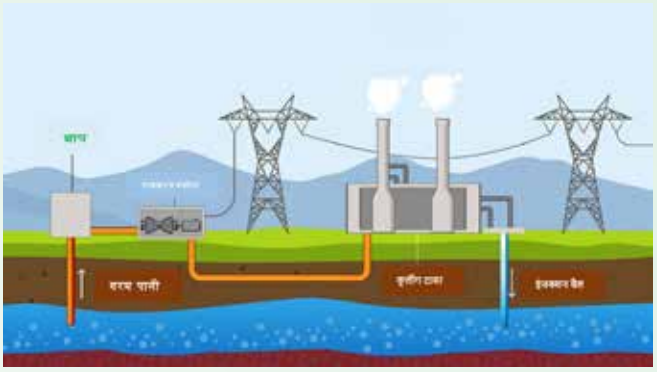

जलविद्युत

हाइड्रो पावर प्लांट या जलविद्युत संयंत्र, नदी या पानी के किसी अन्य प्राकृतिक स्रोत से बिजली बनाने का एक तरीका है। यह नवीकरणीय ऊर्जा का एक रूप है। हाइड्रो पावर प्लांट, पानी की गतिज ऊर्जा का इस्तेमाल करके बिजली पैदा करते हैं। इस प्रक्रिया में, पानी को बाँध या डायवर्सन संरचना के जरिए ऊपर उठाया जाता है और फिर टरबाइन से गुजारा जाता है। इससे टरबाइन घूमता है और बिजली पैदा होती है।

हाइड्रो पावर प्लांट से जुड़ी कुछ और बातें:

- हाइड्रो पावर प्लांट को पनबिजली के नाम से भी जाना जाता है।
- यह एक स्वच्छ और नवीकरणीय ऊर्जा का स्रोत है क्योंकि इससे ग्रीन हाउस गैस या अन्य वायु प्रदूषक नहीं बनते।

एनएचपीसी लिमिटेड का सलाल पावर स्टेशन

- दुनिया में बिजली उत्पादन का एक तिहाई हिस्सा हाइड्रो पावर से ही आता है।
- हाइड्रो पावर प्लांट तीन तरह के होते हैं: नदी-प्रवाह, जलाशय या भंडारण।
- पंप स्टोरेज हाइड्रोपावर एक तरह का हाइड्रो पावर प्लांट है। यह एक विशाल बैटरी की तरह काम करता है। यह अन्य ऊर्जा स्रोतों से पैदा होने वाली बिजली को संग्रहीत करता है।

सौर ऊर्जा

एक पसंदीदा हरित विकल्प है, लेकिन इसके लिए बड़े सतह क्षेत्र और लगातार सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता होती है।

सौलर पैनल

पवन ऊर्जा

हवा की गतिज ऊर्जा को यांत्रिक ऊर्जा में बदलने के लिए टर्बाइनों का उपयोग करता है, जिसका उपयोग बिजली उत्पादन के लिए किया जा सकता है।

नराकास (का.) फरीदाबाद के तत्वावधान में आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण की झलकियां

नराकास (का.) फरीदाबाद के तत्वावधान में आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण की झलकियां

राजभाषा शील्ड पुरस्कार विजेता कार्यालय

राजभाषा शील्ड पुरस्कार विजेता कार्यालय

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), फरीदाबाद की गतिविधियां (वर्ष 2024-25)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनांक 31.12.2009 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) फरीदाबाद की अध्यक्षता एनएचपीसी लिमिटेड को सौंपी गई थी । नराकास (का.), फरीदाबाद की अध्यक्षता हमारे निगम को सौंपे जाने के बाद से एनएचपीसी लिमिटेड द्वारा नराकास संबंधी गतिविधियां नियमित रूप से संचालित की जा रही हैं। वर्ष 2024-25 के दौरान नराकास (का.), फरीदाबाद के तत्वावधान में निम्नांकित कार्यकलापों का आयोजन किया गया :

छमाही बैठकों का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय द्वारा निर्धारित कैलेंडर के अनुसार नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), फरीदाबाद की प्रति वर्ष 02 छमाही बैठकों का आयोजन किया जा रहा है। इन बैठकों में नराकास (का.) फरीदाबाद के सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों तथा राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य देख रहे अधिकारियों द्वारा प्रतिभागिता की जाती है। वर्ष 2024-25 के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), फरीदाबाद की प्रथम छमाही बैठक दिनांक 28.05.2024 को आयोजित की गई। इस अवसर पर नराकास (का.) फरीदाबाद की राजभाषा पत्रिका 'नगर सौरभ' के 14वें अंक का भी विमोचन किया गया। बैठक में सदस्य कार्यालयों से प्राप्त राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी छमाही रिपोर्टों की भी समीक्षा की गई। दिनांक 17.12.2024 को नराकास (का.) फरीदाबाद की द्वितीय छमाही बैठक आयोजित की गई। इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय के कर कमलों से नराकास राजभाषा शील्ड योजना वर्ष 2023-24 के तहत राजभाषा में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु सदस्य कार्यालयों को राजभाषा शील्ड प्रदान की गई तथा नराकास (का.), फरीदाबाद के सदस्य कार्यालयों की राजभाषा प्रगति की समीक्षा की गई।

हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन

नराकास (का.), फरीदाबाद के सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों के लिए दिनांक 11 नवंबर से 14 नवंबर 2024 तक 5 विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं यथा हिंदी नोटिंग/ड्राफ्टिंग, हिंदी वर्ग पहेली, हिंदी भाषा ज्ञान एवं शब्द ज्ञान, हिंदी निबंध तथा हिंदी

काव्य पाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में विभिन्न सदस्य कार्यालयों के प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। हिंदी भाषा ज्ञान एवं शब्द ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन आईओसीएल, अनुसंधान एवं विकास केन्द्र, फरीदाबाद के कार्यालय में तथा हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद, फरीदाबाद में आयोजित की गई। शेष प्रतियोगिताएं एनएचपीसी, निगम मुख्यालय परिसर, फरीदाबाद में आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को दिनांक 16.01.2025 का आयोजित राजभाषा हीरक जयंती एवं पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर पुरस्कृत किया गया।

नराकास राजभाषा शील्ड प्रोत्साहन योजना (वर्ष 2023-24) का संचालन

नराकास के सदस्य कार्यालयों में राजभाषा का प्रचार-प्रसार करने एवं प्रतिस्पर्धात्मक भावना जागृत करने की दृष्टि से राजभाषा शील्ड योजना लागू की गई है। इस योजना के तहत वर्ष 2023-24 के लिए प्रविष्टियां आमंत्रित की गईं तथा तीन श्रेणियों (1) केंद्रीय कार्यालय वर्ग (40 कार्मिकों से अधिक), (2)केंद्रीय कार्यालय वर्ग (40 कार्मिकों से कम कार्मिक) एवं (3)केंद्रीय सरकार के उपक्रम वर्ग के अंतर्गत पुरस्कार दिए गए। द्वितीय छमाही बैठक के दौरान अध्यक्ष महोदय के कर कमलों से नराकास राजभाषा शील्ड पुरस्कारों को प्रदान किया गया।

राजभाषा शील्ड पुरस्कार (2023-24) विजेता कार्यालय

(क) केंद्रीय कार्यालय वर्ग (40 से अधिक कार्मिकों वाले)

1.	राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण प्रतिष्ठान	प्रथम
2.	राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, कृषि सांख्यिकी मुख्यालय	द्वितीय
3.	केंद्रीय भूमि जल बोर्ड	तृतीय
4.	पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नं-3	प्रोत्साहन
5.	राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद	प्रोत्साहन

(ख) केंद्रीय कार्यालय वर्ग (40 से कम कार्मिकों वाले)

1.	योजना परिमंडल, केन्द्रीय जल आयोग	प्रथम
2.	भारतीय मानक ब्यूरो	द्वितीय
3.	पेट्रोलियम एवं विस्फोटक सुरक्षा संगठन	तृतीय
4.	जवाहर नवोदय विद्यालय	प्रोत्साहन
5.	दत्तोपंत ठेंगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड	प्रोत्साहन

(ग) केंद्रीय सरकार के उपक्रम वर्ग

1.	इंडियन आयल कारपोरेशन लिमिटेड, अनुसंधान एवं विकास केन्द्र, फरीदाबाद	प्रथम
2.	ईसीजीसी लिमिटेड, फरीदाबाद	द्वितीय
3.	पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, फरीदाबाद	तृतीय
4.	एनटीपीसी लिमिटेड, गैस पावर स्टेशन, फरीदाबाद	प्रोत्साहन
5.	महाप्रबंधक कार्यालय, भारत संचार निगम लिमिटेड, फरीदाबाद	प्रोत्साहन

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के साथ-साथ, कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने में आने वाली समस्याओं के निराकरण के उद्देश्य से नराकास (का.), फरीदाबाद द्वारा समय-समय पर सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों के लिए हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। वर्ष 2024-25 के दौरान नराकास के सदस्य कार्यालयों के

कार्मिकों के लिए दिनांक 23.08.2024, 14.11.2024 एवं 04.12.2024 (ऑनलाइन कार्यशाला) को हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन तीनों हिंदी कार्यशालाओं में नराकास (का.), फरीदाबाद के सदस्य कार्यालयों के 96 कार्मिको ने भाग लिया। इन कार्यशालाओं में प्रतिभागियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति व उसका कार्यान्वयन, राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधानों, देवनागरी लिपि के मानकीकरण संबंधी विषयों की महत्वपूर्ण जानकारी के साथ-साथ टिप्पण एवं प्रारूपण का भी अभ्यास कराया गया। साथ ही 'हिंदी में उपलब्ध अधुनातन सॉफ्टवेयरों एवं हिंदी टूल्स के अनुप्रयोग' पर महत्वपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक जानकारी दी गई।

'नगर सौरभ' पत्रिका का प्रकाशन

राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करने और उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक जानकारी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 'नगर सौरभ' वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है । वर्ष 2024 में 'नगर सौरभ' पत्रिका के 14वें अंक का प्रकाशन किया गया । इस पत्रिका में नराकास (का.), फरीदाबाद के विभिन्न सदस्य कार्यालयों से प्राप्त लेखों के साथ-साथ ज्ञानवर्धक जानकारी संबंधी लेख प्रकाशित किए गए एवं सभी लेखकों को एवं सदस्य कार्यालयों को प्रतियां भेजी गईं। नराकास की प्रथम छमाही बैठक के अवसर पर अध्यक्ष महोदय के कर कमलों से 'नगर सौरभ' पत्रिका के 14वें अंक का विमोचन किया गया।

हिंदी संगोष्ठी का आयोजन

एनएचपीसी द्वारा नराकास (का.), फरीदाबाद के विभिन्न सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों के लिए दिनांक 16.01.2025 को 'हिंदी भाषा के प्रसार में हिंदी सिनेमा एवं मीडिया का योगदान' विषय पर हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। बेस्ट हिंदी क्रिटिक के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार विजेता एवं जाने माने हिंदी फिल्म समीक्षक श्री दीपक दुआ ने इस संगोष्ठी में अपने विचार रखे एवं कई रोचक जानकारियां साझा कीं। इस संगोष्ठी में नराकास के विभिन्न सदस्य कार्यालयों के कुल 40 कार्मिकों ने भाग लिया।

राजभाषा हीरक जयंती समारोह का आयोजन एवं पुरस्कार वितरण

हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकृत किए जाने के 75 वर्ष पूरे होने के अवसर पर वर्ष 2024 को राजभाषा हीरक जयंती के रूप में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर नराकास (का.) फरीदाबाद द्वारा दिनांक 16.01.2025 को एनएचपीसी लिमिटेड, निगम मुख्यालय, फरीदाबाद के सभागार में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के संगीत एवं नाटक प्रभाग द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। नराकास (का.) फरीदाबाद द्वारा सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों के लिए दिनांक 11-14 नवंबर, 2024 की अवधि में आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी इस अवसर पर पुरस्कृत किया गया।

हस्तलिपि – अंतर्मन की अभिव्यक्ति

उमेश कुमार साहू, पुस्तकालय अधिकारी,
एनएचपीसी लिमिटेड, फरीदाबाद

जीवन में सफलता के लिए तथा अनावश्यक हानियों से बचने के लिए हमें अपने संपर्क में आने वाले व्यक्तियों के व्यक्तित्व का अवलोकन करने की आवश्यकता पड़ती है। अक्सर हम लोगों को पहचानने में चूक कर जाते हैं, जिसका खामियाजा हमें आगे चलकर किसी न किसी रूप में उठाना ही पड़ता है। ज्योतिष, मनोविज्ञान जैसे विषयों में व्यक्ति के व्यक्तित्व का सहज रूप से अवलोकन करने के लिए अनेक विधियों का वर्णन किया जाता है। व्यक्ति की कुंडली में ग्रहों की स्थिति अथवा उसकी परिस्थिति, व्यक्ति के हाथ की रेखाएं, व्यक्ति की लिखावट व्यक्ति के बारे में बहुत कुछ बताती हैं। जब कोई व्यक्ति कागज पर लिखता है तो उसकी लिखावट का हर अक्षर कुछ न कुछ बोलता नजर आता है, सिर्फ उसे देखने और समझने की निगाहें होनी चाहिए। लिखने का तरीका, लिखावट की गति, अक्षरों की बनावट, अक्षरों का संयोजन, दिशा, दबाव और अक्षरों को जोड़ने के तरीके की बारीक जांच व अध्ययन करके किसी भी व्यक्ति की मानसिक क्षमता सहित उसके व्यक्तित्व की रूपरेखा जानी जा सकती है।

कहा जाता है कि व्यक्ति का चेहरा उसके दिल का आइना होता है और व्यक्ति की लिखावट उसके दिल, दिमाग, शरीर यानि पूरे व्यक्तित्व का प्रतिबिंब है। हम जो कुछ भी लिखते हैं, वह हमारे बारे में बहुत कुछ बताता है। लिखावट के अध्ययन से व्यक्ति के चिंतन का स्तर एवं उसके सभी गुणों-दोषों का आंकलन एवं अवलोकन किया जा सकता है। आइए जानते हैं कि किसी व्यक्ति की लिखावट से उस व्यक्ति के बारे में क्या-क्या और कैसे जाना जाता है:-

बार-बार लिखकर काटना

बार-बार लिखकर काटने वाले व्यक्ति ढुलमुल अभिव्यक्ति के मालिक होते हैं। उसमें निर्णय क्षमता का अभाव होता है। ऐसे लोग जीवन में भी अपने द्वारा लिए गए निर्णयों के प्रति असमंजस में रहते हैं और उन्हें यह लगता रहता है कि उनके द्वारा लिया गया निर्णय गलत था। ऐसे व्यक्ति स्वभाव से अपनी गलती तुरंत स्वीकार कर लेने का गुण रखते हैं। कुछ लोग अपने द्वारा लिखी गई गलती को काटने से इसलिए कतराते हैं कि इससे लिखावट की खूबसूरती कम हो जाएगी। ऐसे लोग जिद्दी मनोवृति के होते हैं।

गहरे अक्षर लिखना

कागज पर अधिक जोर देकर गहरे अक्षर लिखने वाले व्यक्ति प्रायः आत्म-केंद्रित और स्वार्थी मनोवृत्ति के होते हैं। ऐसे व्यक्ति रक्तचाप व मानसिक तनाव से भी ग्रस्त होते हैं। यदि दबाव के साथ लिखावट मोटी और अक्षरों का आकार बड़ा हो तो यह लेखक की धूम प्रतिशोधी प्रवृति की ओर इंगित करता है। बिल्कुल हल्के हाथ से कागज पर दबाव दिए बिना लिखने वाले व्यक्ति प्रायः संवेदनशील, भावुक और कलात्मक अभिरुचि के होते हैं।

मध्यम दबाब से लिखना

मध्यम दबाव से लिखने वाले व्यक्ति आमतौर पर व्यावहारिक और यथार्थवादी होते हैं। लिखावट में अक्षरों का बाईं ओर झुकाव आत्म-केंद्रित, उदार व्यक्तित्व का होना प्रकट करता है, यदि झुकाव अत्यधिक है तो वह व्यक्ति अति कल्पनाशील और वास्तविक जीवन में सर्वाधिक अव्यावहारिक होगा।

किसी व्यक्ति की दाई ओर झुकती लिखावट उसके भावुक, आशावादी व मिलनसार स्वभाव को दर्शाती है। बिलकुल सीधे अक्षरों वाली लिखावट वाला व्यक्ति स्पष्टवादी, धैर्यवान और मृदुभाषी होता है। ऐसे व्यक्ति प्रायः भावुक नहीं होते तथा वह दिल के स्थान पर दिमाग से काम लेते हैं। ऐसे लोग जीवन में समझौतों को पर्याप्त सम्मान देते हैं।

शब्दों के बीच अंतराल

शब्दों के बीच नियमित अंतराल छोड़ने वाले व्यक्ति तार्किक, विवेकशील तथा न्यायप्रिय होते हैं। ऐसे लोग तथ्य की समुचित छानबीन के बाद ही अपनी धारणा बनाते हैं इसके विपरीत, पंक्तियों और शब्दों के बीच असमान अंतर वाली लिखावट, व्यक्ति में निर्णय क्षमता के अभाव, फिजूलखर्ची के स्वभाव, बिना योजना के कार्य करने तथा दूसरों पर आश्रित रहने की प्रवृति को रेखांकित करती है। लिखावट में घुमावदार अक्षरों का होना एक सहानुभूतिपूर्ण प्रेममय स्वभाव का परिचायक है। इस लिखावट वाले व्यक्ति प्रायः प्रबुद्ध वर्ग के होते हैं। बेतरतीब और एक दूसरे को छूती हुई पंक्तियों की लिखावट असंतुलित व्यक्तित्व और सहमेंपन की प्रतीक है।

छोटे-बड़े अक्षर

छोटे-छोटे अक्षरों की लिखावट आदमी के अंतर्मुखी एवं स्वार्थी स्वभाव की द्योतक होती है। जबकि आकार में बडे अक्षर का होना दूसरों के प्रति सहानुभूति के भाव को प्रकट करता है। अक्षरों की शुरु से आखरी तक एक जैसी बनावट, आदमी के व्यक्तित्व के उदास स्वरूप को प्रकट करती है। अंतिम अक्षर को साधारण से बड़ा लिखने वाला व्यक्ति दयालु व उदार स्वभाव का होता है।

खराब हस्तलिपि

कागज के छोटे-छोटे टुकड़ों पर गिचपिच लिखने वाले व्यक्ति अनुदार स्वभाव के होते हैं। ऐसे लोगों को अपने कंजूस या कृपण कहलाने में कोई ऐतराज भी नहीं होता, क्योंकि जो व्यक्ति मूलस्वरुप से कंजूस हो, लेकिन स्वयं को कंजूस दिखाना या कहलाना पसंद नहीं करता हो, वह सामान्य से अधिक बड़े कागज पर भी गिचपिच लिखेगा और शेष बड़ा हाशिया खाली छोड़ देगा।

हाशिया या मार्जिन

हाशिया या मार्जिन भी व्यक्ति के बारे में बहुत कुछ बताता है। पृष्ठ के दोनों और बराबर पर्याप्त हाशिया लिखने वाले व्यक्ति स्वभावतः कलाकार व रसिक प्रवृति के होते हैं। बाई तरफ का हथिया प्रारंभ में चौड़ा और अंत में कम हो जाए तो ऐसे व्यक्ति फिजूल खर्ची होते हैं। इसके विपरीत प्रारंभ में हाशिया कम हो तथा अंत में क्रमशः बढ़ता चला जाए तो वह व्यक्ति की बचत की आदत को दर्शाता है।

विराम चिह्नों का प्रयोग

लिखावट में आवश्यक विराम चिह्नों आदि की गैर मौजूदगी व्यक्ति की विचारहीनता और अविश्वसनीयता को दर्शाती है। विस्मयादिबोधक चिह्नों आदि का अधिक इस्तेमाल करने वाले लोग सौंदर्यवादी और रोमांटिक प्रवृति के होते हैं। अक्षरों को जोड़ने वाली ऊपर की लकीर नहीं खीचने वाले लोग कुछ आलसी स्वभाव के होते हैं या जरूरत से ज्यादा काम करना पसंद नहीं करते।

लिखावट के विश्लेषण का यह विज्ञान केवल व्यक्ति तक सीमित नहीं है। इसके द्वारा व्यक्ति की मानसिक व्याग्रता, भावनात्मक स्थिति और स्वास्थ्य तक को पढ़ा जा सकता है। उपरोक्त जानकारी विश्लेषण के आधार पर यह भी संभव है कि निकट भविष्य में शायद विवाह से पूर्व ज्योतिषी को जन्मपत्री मिलान के साथ-साथ भावी वर और वधू की लिखावट का विश्लेषण हस्तलेख विशेषज्ञों से कराया जाने लगे।

ग्राउण्ड पेनीट्रेटिंग राडार (जीपीआर) एक त्वरित भूभौतिकीय अन्वेषण विकल्प

विपुल नागर, उप महाप्रबंधक (भूभौतिकी)
नवीन कुमार पाण्डेय, वरिष्ठ प्रबंधक (भूभौतिकी)
एनएचपीसी लिमिटेड, फरीदाबाद

आधारभूत सिविल संरचनाओं के डिजाइन एवं तत्संबंधी आवश्यक आंकड़ो का प्राक्कलन करने के पूर्व संरचना क्षेत्र का वृहद भूसतहीय अन्वेषण अत्यन्त आवश्यक होता है। परियोजना के अन्वेषण स्तर के साथ-साथ, निर्माण स्तर पर अक्सर आने वाली भूसतहीय समस्याओं के निदान के लिए भी तात्कालिक रूप से अन्वेषण की आवश्यकता बनी रहती है। किसी भी सिविल संरचना का निर्माण व्यापक, त्वरित एवं किफायती भूसतहीय अन्वेषण के बिना संभव नही होता है। सिविल संरचनाओं के अतिरिक्त भूगर्भ में दबे हुए प्राकृतिक एवं मानव निर्मित कृत्रिम वस्तुओं की खोज भी भूसतहीय अन्वेषण के माध्यम से की जाती है। इन अन्वेषणों के अंतर्गत खनिज पदार्थ की खोज, पुरातात्विक अवशेषों की खोज, मिलिट्री अनुप्रयोग के अंतर्गत दबी हुई मिलिट्री सुरंगों तथा नष्ट न हो पाए गोला बारूद की खोज, प्राचीन कब्रगाहों की खोज, ग्लेशियर अध्ययन, कंक्रीट स्कैनिंग तथा पाइप आदि यूटिलिटी की खोज प्रमुख है। इस प्रकार के अन्वेषण एवं खोज में भूभौतिकी तकनीकों का विशेष महत्व है। माइक्रोकंप्यूटर तथा साफ्टवेयर के क्षेत्र में हुए व्यापक एवं तीव्र विकास ने भूभौतिकी तकनीकों को और भी उन्नत तथा भरोसेमंद बना दिया है। इन भूभौतिकी तकनीकों के अंतर्गत ग्राउण्ड पेनीट्रेटिंग राडार (जीपीआर) भूभौतिकी तकनीक का विशेष स्थान है।

ग्राउण्ड पेनीट्रेटिंग राडार (जीपीआर) एक अविनाशकारी (नानडिस्ट्रक्टिव) भूभौतिकीय अन्वेषण विधि है, जो विद्युतचुम्बकीय तरंगों के संचरण तथा उपसतहीय लक्ष्य से परावर्तन के सिद्धान्त पर कार्य करता है। मृदा, चट्टान, बर्फ, कंक्रीट, धातु, पाइप, पुरातात्विक अवशेष, केबल, सुरंग तथा इसी प्रकार के अन्य उपसतहीय संरचनाओं के भौतिक गुणों में व्यतिरेक (कंट्रास्ट) के आधार पर जीपाआर द्वारा इनकी खोज की जा सकती है। ग्राउण्ड पेनीट्रेटिंग राडार अन्य स्थापित परंपरागत भूभौतिकी तकनीकों की तुलना में आंकड़ों के त्वरित अभिग्रहण में सक्षम है तथा इसका अनुप्रयोग भी अपेक्षाकृत काफी सरल होता है। इस प्रकार की खोजों एवं अन्वेषण कार्यों के लिए ग्राउण्ड पेनीट्रेटिंग राडार भूभौतिकी तकनीकी ने एक त्वरित अन्वेषण विकल्प के रूप में स्वयं को स्थापित किया है।

ग्राउण्ड पेनीट्रेटिंग राडार - सिद्धान्त

ग्राउण्ड पेनेट्रेटिंग राडार भू-सतह की गवेषणा करने हेतु विद्युत चुम्बकीय सिद्धान्त पर कार्य करने वाली उच्च विभेदन क्षमता की भूभौतिकी तकनीक है। जीपीआर तकनीक का मुख्य उद्देश्य रेडियोफ्रीक्वेंसी और माइक्रोवेव का उपयोग करके दबे हुए या छिपे हुए लक्ष्यों की ज्यामिति के बारे में जानकारी प्राप्त करना है। एक ओर

चित्र-1: ग्राउण्ड पेनीट्रेटिंग राडार (जीपीआर) तकनीक

जहां पारंपरिक राडार तकनीक का उपयोग ज्यादातर नेविगेशन और निगरानी के लिए किया जाता है, वहीं जीपीआर को भूगर्भीय पदार्थों अथवा वस्तुओं की खोज करने जैसे अधिक चुनौतीपूर्ण कार्यों के लिए डिजाइन किया गया है।

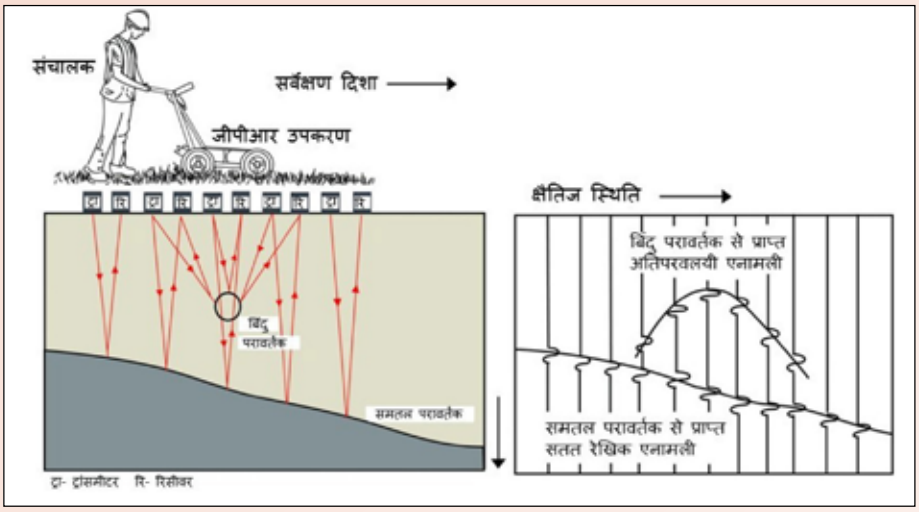

चित्र-2: ग्राउण्ड पेनीट्रेटिंग राडार द्वारा फील्ड सर्वेक्षण का रेखाचित्र

एक प्रारूप जीपीआर उपकरण के मुख्यत: तीन अवयव होते हैं- ट्रांसमीटर ऐंटीना तथा रिसीवर ऐंटीना, पावर सप्लाई यूनिट एवं माइक्रोकंप्यूटर युक्त नियंत्रक (कंट्रोल) यूनिट। दोनो ही ऐंटीना कंट्रोल यूनिट द्वारा जुड़े होते हैं जिसे उपकरण में उपलब्ध डिस्प्ले अथवा लैपटॉप द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। सर्वेक्षण लाइन का निर्देशांक पारंपरिक सर्वेक्षण उपकरण द्वारा सर्वेक्षण पूर्व सर्वेक्षण ग्रिड तैयार करके प्राप्त किया जा सकता है अथवा जीपीआर उपकरण के साथ आंतरिक अथवा वाह्य जीपीएस द्वारा भी लिया जा सकता है। जीपीआर उपकरण के ऐंटीना दो प्रकार के हो सकते हैं, पहला मोनोस्टेटिक ऐंटीना जिसमें ट्रांसमीटर तथा रिसीवर ऐंटीना एक ही यूनिट में नियत होते हैं, दूसरा बाईस्टेटिक ऐंटीना जिसमें ट्रांसमीटर तथा रिसीवर ऐंटीना अलग-अलग होते हैं।

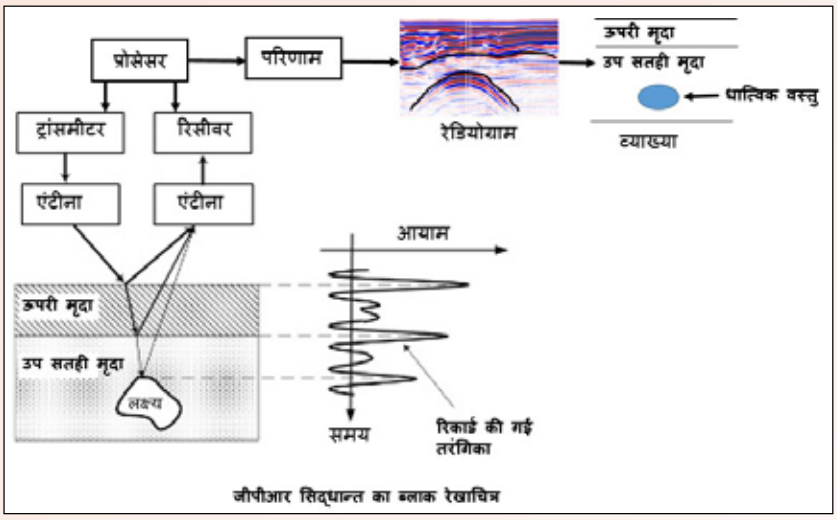

चित्र-3: ग्राउण्ड पेनीट्रेटिंग राडार सिद्धान्त का ब्लाक रेखाचित्र

अन्वेषण लक्ष्य के अनुरूप ऐंटीना के प्रकार का चुनाव किया जाता है। सर्वेक्षण के दौरान कंट्रोल यूनिट के माध्यम से ट्रांसमीटर ऐंटीना द्वारा उच्च आवृत्ति के विद्युतचुम्बकीय तरंग पल्स को भूसतह पर प्रवाहित किया जाता है। यह प्रेषित विद्युत-चुम्बकीय तरंग पल्स उपसतह की अलग-अलग पर्तों के पराविद्युतांक (परमिटीविटी) तथा विद्युत चालकता (इलेक्ट्रिकल कंडक्टिविटी) में अंतर के कारण इन पर्तों से अपवर्तित, परावर्तित तथा विकरित होकर वापस आती हैं, जिनमें से परावर्तित तरंगों को रिसीवर ऐंटीना द्वारा कंट्रोल यूनिट में रिकार्ड कर लिया जाता है तथा जिसका प्रोसेस किया जाता है। इन सतत रिकार्ड किए गए परावर्तित विद्युत-चुम्बकीय तरंगों को वास्तविक समय में कंट्रोल यूनिट के डिस्प्ले में देखा जा सकता है। इस प्रकार से उपसतह की गहराई एवं दूरी के निर्देशांकों में प्राप्त द्विआयामी सेक्शन को राडारग्राम कहा जाता है। राडारग्राम ही वास्तव में उपसतह में अवस्थित विभिन्न प्रकार के मृदा, चट्टान, कंक्रीट या अन्य लक्षित पदार्थों

का भौतिक गुणधर्मों में अंतर के आधार पर चित्रण होता है, जिसका भूभौतिकीविद द्वारा समझे जाने योग्य रूप में व्याख्या की जाती है।

ग्राउण्ड पेनीट्रेटिंग राडार उपकरण

जैसा कि जीपीआर सिद्धान्त के अंतर्गत बताया गया है कि जीपीआर उपकरण के मुख्यत: तीन अवयव होते हैं- ट्रांसमीटर ऐंटीना तथा रिसीवर ऐंटीना, पावर सप्लाई यूनिट एवं माइक्रोकंप्यूटर युक्त नियंत्रक (कंट्रोल) यूनिट।

इन तीन अवयवों में जीपीआर उपकरण का सबसे प्रमुख अवयव जीपीआर ऐंटीना होता है। सर्वेक्षण में सहजता को ध्यान में रखते हुए ज्यादातर आधुनिक जीपीआर उपरकरणों में एक ही ऐंटीना यूनिट में ट्रांसमीटर तथा रिसीवर दोनो प्रकार के ऐंटीना एक साथ एक ही उपकरण एसेंबली में लगे होते हैं अथवा एक ही ऐंटीना ट्रांसमीटर तथा रिसीवर का काम करता है। इस प्रकार के जीपीआर ऐंटीना को मोनोस्टेटिक ऐंटीना कहा जाता है। जिन राडार उपकरणों में ट्रांसमीटर तथा रिसीवर अलग-अलग ऐंटीना यूनिटों में स्थित होते हैं उन्हें बाई-स्टेटिक ऐंटीना कहा जाता है। आम तौर पर बाई-स्टेटिक ऐंटीना आकार में बड़े होते हैं इनका प्रयोग एक स्थान पर ज्यादा गहराई तक साउंडिंग करने के लिए किया जाता है। दूसरी ओर मोनोस्टेटिक ऐंटीना अल्प समय में प्रोफाइलिंग अनुप्रयोग में ज्यादा उपयोगी होते हैं। जीपीआर ऐंटीना की भौतिक संरचना, अनुप्रयोग, राडार सिग्नल के प्रेषण की दिशा, मापन का डोमेन आदि के आधार पर आज कल कई प्रकार के जीपीआर उपकरण तैयार किए जा रहे हैं। जीपीआर के अनुप्रयोग को ध्यान में रखते हुए परंपरागत टाइम डोमेन पल्स सिस्टम तथा फ्रीक्वेंसी डोमेन जीपीआर ज्यादा प्रचलित हैं। दोनो ही प्रकार के जीपीआर में रेडियो तरंगों के छोटे पल्स को भूमि, कंक्रीट अथवा अन्य लक्षित माध्यम में प्रेषित किया जाता है। यह पल्स परागमन माध्यम में विद्युत-चुम्बकीय गुणधर्म में मौजूद परिवर्तन होने की दशा में परावर्तित होकर रिसीवर ऐंटीना द्वारा रिकार्ड कर लिए जाते हैं। जीपीआर ऐंटीना का चुनाव उसकी आवृति को ध्यान में रखकर किया जाता है। आवश्यकता के अनुरूप लक्षित माध्यम की गहराई (depth of target) तथा विभेदन (resolution) के आधार पर जीपीआर ऐंटीना की केंद्रीय आवृत्ति सबसे प्रमुख कारक होती है। अधिक आवृत्ति के ऐंटीना का लक्षित माध्यम की खोजी गहराई कम होती परंतु विभेदन क्षमता ज्यादा होती है इसके विपरीत कम आवृत्ति के ऐंटीना की खोजी गहराई तो ज्यादा होती है परंतु विभेदन क्षमता कम। अत: ऐंटीना को चुनने से पूर्व अभियांत्रिक आवश्यकता को ध्यान में रखना अत्यन्त आवश्यक होता है। सामान्यत: व्यावसायिक रूप से

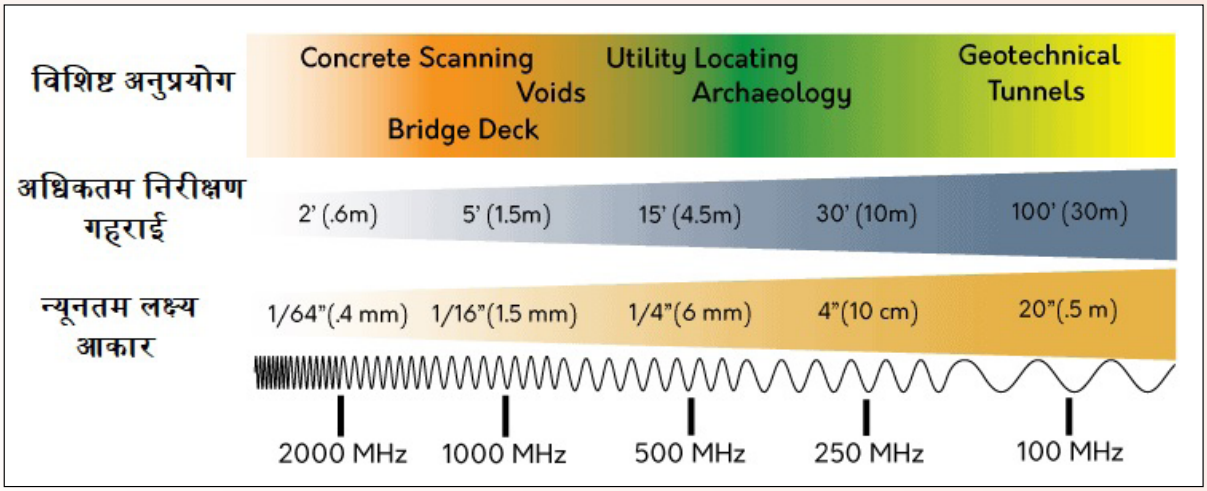

चित्र-4: ग्राउन्ड पेनिट्रेटिंग राडार के अनुप्रयोग, ऐंटीना यूनिट आवृत्ति तथा अधिकतम निरीक्षण गहराई का

उपलब्ध जीपीआर ऐंटीना की केंद्रीय आवृत्ति 10 मेगाहर्ट्ज से 2.6 मेगाहर्ट्ज के मध्य होती है।

ऐंटीना यूनिट के अतिरिक्त जीपीआर उपकरण में कंट्रोल यूनिट भी एक प्रमुख अवयव होता है। ट्रांसमीटर तथा रिसीवर दोनो ही ऐंटीना इलेक्ट्रॉनिक कंट्रोल यूनिट द्वारा जुड़े होते हैं जिसे एक विशिष्ट सॉफ्टवेयर की सहायता से उपकरण में उपलब्ध डिस्प्ले, लैपटॉप कंप्यूटर अथवा स्मार्ट मोबाइल फोन द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। कंट्रोल यूनिट के माध्यम से राडार ऊर्जा की पल्स को ऐंटीना द्वारा भेजने के निर्देश प्रेषित किए जाते हैं तथा प्राप्त परावर्तनों को दर्ज किया जाता है। इस प्रकार से कंट्रोल यूनिट की मेमोरी में रिकॉर्ड किया गया डाटा पूरे सर्वेक्षण के दौरान दर्ज होता रहता है। इसके अतिरिक्त उपकरण में लगे आंतरिक अथवा बाह्य जीपीएस डिवाइस के इनपुट को कंट्रोल यूनिट में भेजा जाता है जिसके द्वारा स्थल के निर्देशांकों को भी सर्वेक्षण के साथ-साथ दर्ज कर लिया जाता है। दर्ज किए गए डाटा का प्रसंस्करण तथा व्याख्या भी कंट्रोल यूनिट से जुड़े कंप्यूटर द्वारा किया जाता है।

इसके अतिरिक्त, आंतरिक अथवा बाह्य पावर सप्लाई द्वारा ऐंटीना यूनिट तथा कंट्रोल यूनिट को प्रचालन हेतु पावर प्रदान की जाती है। आमतौर पर पावर सप्लाई पुनः चार्ज किए जाने योग्य बैटरी का युग्म होता है जिससे जीपीआर उपकरण कार्य करने योग्य शक्ति प्राप्त करता है।

एनएचपीसी में जीपीआर

एनएचपीसी का भूभौतिकीय अनुभाग अभियांत्रिक भूभौतिकी में प्रयोग किए जाने वाले कई परंपरागत भूभौतिकीय उपकरणों से सुसज्जित है। एनएचपीसी द्वारा अपनी भूतकनीकी अन्वेषण क्षमताओं को बढ़ाते हुए जनवरी 2024 में आधुनिक जीपीआर उपकरण का प्रापण किया गया। एनएचपीसी के पास मैसर्स जियोटेक, रूस निर्मित अत्याधुनिक ओको-3 जीपीआर सिस्टम है। इस उपकरण के साथ 25 मेगाहर्ट्ज, 50 मेगाहर्ट्ज, 100 मेगाहर्ट्ज तथा 250 मेगाहर्ट्ज का मोनोस्टेटिक ऐंटीना तथा 90 मेगाहर्ट्ज का बाईस्टेटिक ऐंटीना उपलब्ध है।

उपकरण का कंट्रोल यूनिट लैपटॉप, टैबलेट एवं स्मार्ट मोबाइल फोन के साथ भी कार्य करने में सक्षम है जिसे एक अलग कर सकने योग्य रिचार्जिएबल बैटरी के माध्यम से ऊर्जा प्रदान की जाती है। प्रापण के बाद से अब तक इस उपकरण द्वारा एनएचपीसी तथा परामर्शी सेवाओं के अंतर्गत तीन परियोजनाओं का सफलतापूर्वक भूगर्भीय सर्वेक्षण किया जा चुका है।

सारांश

तकनीकी क्षेत्र में हुए व्यापक एवं तीव्र विकास ने जीपीआर तकनीक को उन्नत तथा भरोसेमंद बना दिया है। जीपीआर सर्वेक्षण का एक बेहद किफायती और non-invasive तरीका है। यह रिक्त स्थानों और भूमिगत अनियमितताओं का भी पता लगाता है। यह आंकड़ो को शीघ्रता से एकत्र करता है तथा कम समय में यह एक बड़े क्षेत्र में सर्वेक्षण कर सकता है। इसके परिणाम रियल टाइम में देखे जा सकते हैं। यह सार्वजनिक स्थानों और विभिन्न प्रकार के परियोजना स्थलों पर उपयोग के लिए सबसे सुरक्षित तकनीक है।

चित्र-5: एनएचपीसी में उपलब्ध ग्राउण्ड पेनीट्रेटिंग राडार (जीपीआर) उपकरण, जियोटेक. रशिया

क्रिप्टोकरेंसी

विभोर, महाप्रबंधक (आईटी)
एनएचपीसी लिमिटेड, फरीदाबाद

क्रिप्टोकरेंसी, या क्रिप्टो मुद्रा का वह रूप है जो डिजिटल या वर्चुअल रूप से मौजूद होता है और लेनदेन को सुरक्षित करने के लिए क्रिप्टोग्राफी का उपयोग करता है। क्रिप्टोकरेंसी में जारी या विनियमन करने हेतु कोई केंद्रीय प्राधिकरण नहीं होता है, इसके बजाय लेनदेन रिकॉर्ड करने और नई इकाइयां जारी करने के लिए एक विकेंद्रीकृत प्रणाली का उपयोग किया जाता है।

क्रिप्टोकरेंसी क्या है?

क्रिप्टोकरेंसी एक डिजिटल भुगतान प्रणाली है जो लेन-देन को सत्यापित करने के लिए बैंकों पर निर्भर नहीं करती है। यह एक पीयर-टू-पीयर सिस्टम है जो किसी को भी कहीं भी भुगतान भेजने और प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। वास्तविक दुनिया में धन को भौतिक रूप में ले जाने और आदान-प्रदान करने के बजाय, क्रिप्टोकरेंसी भुगतान विशुद्ध रूप से एक ऑनलाइन डेटाबेस में डिजिटल प्रविष्टियों के रूप में मौजूद होते हैं जो विशिष्ट लेनदेन का वर्णन करते हैं। जब आप क्रिप्टोकरेंसी फंड ट्रांसफर करते हैं, तो लेन-देन एक सार्वजनिक खाता बही में दर्ज किए जाते हैं। क्रिप्टोकरेंसी डिजिटल वॉलेट में संग्रहीत होती है।

क्रिप्टोकरेंसी को इसका नाम इसलिए मिला क्योंकि यह लेन-देन को सत्यापित करने के लिए एन्क्रिप्शन का उपयोग करती है। इसका मतलब है कि वॉलेट और सार्वजनिक खातों के बीच क्रिप्टोकरेंसी डेटा को संग्रहीत करने और संचारित करने में उन्नत कोडिंग शामिल है। एन्क्रिप्शन का उद्देश्य सुरक्षा और संरक्षा प्रदान करना है।

पहली क्रिप्टोकरेंसी बिटकॉइन थी, जिसे 2009 में स्थापित किया गया था और आज भी यह सबसे अधिक प्रसिद्ध है। क्रिप्टोकरेंसी में ज्यादातर दिलचस्पी मुनाफे के लिए व्यापार करने की होती है, जिसमें कई बार सट्टेबाज कीमतों को बहुत बढ़ा देते हैं।

क्रिप्टोकरेंसी कैसे काम करती है?

क्रिप्टोकरेंसी ब्लॉकचेन नामक एक वितरित सार्वजनिक खाता बही पर चलती है, जो मुद्रा धारकों द्वारा रखे गए सभी लेन-देन का अपडेट रिकॉर्ड है।

क्रिप्टोकरेंसी की इकाइयां माइनिंग नामक एक प्रक्रिया के माध्यम से बनाई जाती हैं, जिसमें जटिल गणितीय समस्याओं को हल करने के लिए कंप्यूटर पावर का उपयोग करना शामिल है जो सिक्के उत्पन्न करते हैं। उपयोगकर्ता ब्रोकर से मुद्राएं भी खरीद सकते हैं, फिर उन्हें क्रिप्टोग्राफिक वॉलेट का उपयोग करके संग्रहीत और खर्च कर सकते हैं। यदि आपके पास क्रिप्टोकरेंसी है, तो आपके पास कोई ठोस चीज नहीं है। आपके पास जो है वह एक कुंजी है जो आपको किसी विश्वसनीय तीसरे पक्ष के बिना एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को रिकॉर्ड या माप की इकाई स्थानांतरित करने की अनुमति देती है।

हालांकि बिटकॉइन 2009 से ही मौजूद है, लेकिन क्रिप्टोकरेंसी और ब्लॉकचेन तकनीक के अनुप्रयोग अभी भी वित्तीय दृष्टि से उभर रहे हैं और भविष्य में और अधिक उपयोग की उम्मीद है। बॉन्ड, स्टॉक और अन्य वित्तीय परिसंपत्तियों सहित लेन-देन अंततः तकनीक का उपयोग करके कारोबार किए जा सकते हैं।

क्रिप्टोकरेंसी के उदाहरण

इस समय कई प्रकार की क्रिप्टोकरेंसी चलन में हैं। इनमें से कुछ सबसे प्रसिद्ध क्रिप्टोकरेंसी निम्न हैं-

बिटकॉइन:

2009 में स्थापित, बिटकॉइन पहली क्रिप्टोकरेंसी थी और अभी भी सबसे अधिक कारोबार की जाने वाली क्रिप्टोकरेंसी है। इस मुद्रा को सातोशी नाकामोटो द्वारा विकसित किया गया था- जिसे व्यापक रूप से किसी व्यक्ति या लोगों के समूह के लिए छद्म नाम माना जाता है, जिसकी सटीक पहचान अज्ञात है।

एथेरियम:

2015 में विकसित, एथेरियम एक ब्लॉकचेन प्लेटफॉर्म है जिसकी अपनी क्रिप्टोकरेंसी है, जिसे ईथर या एथेरियम कहा जाता है। यह बिटकॉइन के बाद सबसे लोकप्रिय क्रिप्टोकरेंसी है।

लाइटकॉइन:

यह मुद्रा बिटकॉइन से सबसे अधिक मिलती-जुलती है, लेकिन अधिक लेन-देन की अनुमति देने के लिए तेज भुगतान और प्रक्रियाओं सहित नए नवाचारों को विकसित करने के लिए अधिक तेजी से आगे बढ़ी है।

रिपल:

रिपल एक वितरित खाता प्रणाली है जिसकी स्थापना 2012 में की गई थी। रिपल का उपयोग केवल क्रिप्टोकरेंसी ही नहीं, बल्कि विभिन्न प्रकार के लेन-देन को ट्रैक करने के लिए किया जा सकता है। इसके पीछे की कंपनी ने विभिन्न बैंकों और वित्तीय संस्थानों के साथ काम किया है।

क्रिप्टोकरेंसी कैसे खरीदें

आप सोच रहे होंगे कि क्रिप्टोकरेंसी को सुरक्षित तरीके से कैसे खरीदा जाए। इसमें आमतौर पर निम्न तीन चरण शामिल होते हैं। ये हैं:

चरण 1: प्लेटफॉर्म चुनना

पहला चरण यह तय करना है कि किस प्लेटफॉर्म का उपयोग करना है। आम तौर पर, आप पारंपरिक ब्रोकर या समर्पित क्रिप्टोकरेंसी एक्सचेंज के बीच चयन कर सकते हैं:

- **पारंपरिक ब्रोकर**- ये ऑनलाइन ब्रोकर हैं जो क्रिप्टोकरेंसी खरीदने और बेचने के तरीके प्रदान करते हैं, साथ ही स्टॉक, बॉन्ड और ईटीएफ जैसी अन्य वित्तीय संपत्तियां भी। ये प्लेटफॉर्म कम ट्रेडिंग लागत लेकिन कम क्रिप्टो सुविधाएं प्रदान करते हैं।

- **क्रिप्टोकरेंसी एक्सचेंज**- चुनने के लिए कई क्रिप्टोकरेंसी एक्सचेंज हैं, जिनमें से प्रत्येक अलग-अलग क्रिप्टोकरेंसी, वॉलेट स्टोरेज, ब्याज-असर वाले खाता विकल्प और बहुत कुछ प्रदान करता है। कई एक्सचेंज एसेट आधारित शुल्क लेते हैं।

चरण 2: अपने खाते में धनराशि जमा करना

एक बार जब आप अपना प्लेटफॉर्म चुन लेते हैं, तो अगला कदम अपने खाते में धनराशि जमा करना है ताकि आप ट्रेडिंग शुरू कर सकें। अधिकांश क्रिप्टो एक्सचेंज उपयोगकर्ताओं को अपने डेबिट या क्रेडिट कार्ड का उपयोग करके यूएस डॉलर, ब्रिटिश पाउंड या यूरो जैसी फिएट (यानी, सरकार द्वारा जारी) मुद्राओं का उपयोग करके क्रिप्टो खरीदने की अनुमति देते हैं- हालांकि यह प्लेटफॉर्म के अनुसार अलग-अलग होता है।

चरण 3: ऑर्डर देना

आप अपने ब्रोकर या एक्सचेंज के वेब या मोबाइल प्लेटफॉर्म के माध्यम से ऑर्डर दे सकते हैं। यदि आप क्रिप्टोकरेंसी खरीदने की योजना बना रहे हैं, तो आप 'खरीदें' का चयन करके, ऑर्डर प्रकार चुनकर, आपके द्वारा खरीदी जाने वाली क्रिप्टोकरेंसी की मात्रा दर्ज करके और ऑर्डर की पुष्टि करके ऐसा कर सकते हैं। यही प्रक्रिया 'बेचने' के ऑर्डर पर भी लागू होती है।

क्रिप्टो में निवेश करने के अन्य तरीके भी हैं। इनमें पेपाल, कैश ऐप और वेनमो जैसी भुगतान सेवाएं शामिल हैं, जो उपयोगकर्ताओं को क्रिप्टोकरेंसी खरीदने, बेचने या रखने की अनुमति देती हैं।

क्रिप्टोकरेंसी कैसे स्टोर करें

क्रिप्टोकरेंसी खरीदने के बाद, आपको इसे हैक होने या चोरी से बचाने के लिए इसे सुरक्षित तरीके से स्टोर करना होगा। आमतौर पर, क्रिप्टोकरेंसी को क्रिप्टो वॉलेट में स्टोर किया जाता है, जो कि भौतिक डिवाइस या ऑनलाइन सॉफ्टवेयर होते हैं जिनका उपयोग आपकी क्रिप्टोकरेंसी की निजी कुंजियों को सुरक्षित रूप से स्टोर करने के लिए किया जाता है। कुछ एक्सचेंज वॉलेट सेवाएं प्रदान करते हैं, जिससे आपके लिए सीधे प्लेटफॉर्म के माध्यम से स्टोर करना आसान हो जाता है। हालांकि, सभी एक्सचेंज या ब्रोकर स्वचालित रूप से आपके लिए वॉलेट सेवाएं प्रदान नहीं करते हैं। इन वॉलेट के लिए 'हॉट वॉलेट' और 'कोल्ड वॉलेट' शब्दों का उपयोग किया जाता है:

- **हॉट वॉलेट स्टोरेज:** 'हॉट वॉलेट' क्रिप्टो स्टोरेज को संदर्भित करता है जो आपकी संपत्तियों की निजी कुंजियों की सुरक्षा के लिए ऑनलाइन सॉफ्टवेयर का उपयोग करता है।
- **कोल्ड वॉलेट स्टोरेज:** हॉट वॉलेट के विपरीत, कोल्ड वॉलेट (जिसे हार्डवेयर वॉलेट भी कहा जाता है) आपकी निजी कुंजियों को सुरक्षित रूप से स्टोर करने के लिए ऑफलाइन इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस पर निर्भर करता है।

आमतौर पर, कोल्ड वॉलेट शुल्क लेते हैं, जबकि हॉट वॉलेट नहीं लेते हैं।

क्रिप्टोकरेंसी से क्या खरीदा जा सकता है

जब इसे पहली बार लॉन्च किया गया था, तो बिटकॉइन को दैनिक लेन-देन का माध्यम बनाने का इरादा था, जिससे एक कप कॉफी से लेकर कंप्यूटर या यहां तक कि रियल एस्टेट जैसी बड़ी-बड़ी चीजें खरीदना संभव हो सके। यह अभी तक पूरी तरह से साकार नहीं हुआ है और जबकि क्रिप्टोकरेंसी स्वीकार करने वाले संस्थानों की संख्या बढ़ रही है, इसमें शामिल बड़े लेन-देन दुर्लभ हैं। फिर भी, क्रिप्टो का उपयोग करके ई-कॉमर्स वेबसाइटों से कई तरह के उत्पाद खरीदना संभव है। कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं:

प्रौद्योगिकी और ई-कॉमर्स साइट: तकनीकी उत्पाद बेचने वाली कई कंपनियां अपनी वेबसाइटों पर क्रिप्टो स्वीकार करती हैं, जैसे newegg.com, AT&T और Microsoft। ओवरस्टॉक, बिटकॉइन स्वीकार करने वाली पहली साइटों में से एक था। Shopify, Rakuten और Home Depot भी इसे स्वीकार करते हैं।

लक्जरी सामान: कुछ लग्जरी रिटेलर भुगतान के रूप में क्रिप्टो स्वीकार करते हैं। उदाहरण के लिए, ऑनलाइन लग्जरी रिटेलर बिटडायल्स बिटकॉइन के बदले में रोलेक्स, पैटेक फिलिप और अन्य हाई-एंड घड़ियां प्रदान करता है।

कारें: कुछ कार डीलर - बड़े पैमाने पर बिकने वाले ब्रांड से लेकर हाई-एंड लग्जरी डीलर तक - पहले से ही भुगतान के रूप में क्रिप्टोकरेंसी स्वीकार करते हैं।

बीमा: अप्रैल 2021 में, स्विस बीमाकर्ता AXA ने घोषणा की कि उसने जीवन बीमा (नियामक मुद्दों के कारण) को छोड़कर अपने सभी बीमा लाइनों के लिए भुगतान के तरीके के रूप में बिटकॉइन स्वीकार करना शुरू कर दिया है। प्रीमियर शील्ड इंश्योरेंस, जो अमेरिका में घर और ऑटो बीमा पॉलिसियां करता है, प्रीमियम भुगतान के लिए भी बिटकॉइन स्वीकार करता है।

क्या क्रिप्टोकरेंसी सुरक्षित है?

क्रिप्टोकरेंसी अभी भी अपेक्षाकृत नई है और इन डिजिटल मुद्राओं का बाजार बहुत अस्थिर है। चूंकि क्रिप्टोकरेंसी को उन्हें विनियमित करने के लिए बैंकों या किसी अन्य तीसरे पक्ष की आवश्यकता नहीं होती है; वे बीमाकृत नहीं होते हैं और उन्हें मूर्त मुद्रा (जैसे यूएस डॉलर या यूरो) के रूप में परिवर्तित करना कठिन होता है।

क्रिप्टोकरेंसी आमतौर पर ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग करके बनाई जाती है। ब्लॉकचेन उस तरीके का वर्णन करता है जिससे लेन-देन को 'ब्लॉक' में रिकॉर्ड किया जाता है और समय अंकित किया जाता है। यह एक काफी जटिल, तकनीकी प्रक्रिया है, लेकिन इसका परिणाम क्रिप्टोकरेंसी लेन-देन का एक डिजिटल खाता है जिसे हैकर्स के लिए छेड़छाड़ करना मुश्किल है। क्रिप्टोकरेंसी लेन-देन में सुरक्षा मौजूद है, इसका मतलब यह नहीं है कि क्रिप्टोकरेंसी को हैक नहीं किया जा सकता है। कई उच्च-डॉलर हैक ने क्रिप्टोकरेंसी स्टार्ट-अप को भारी नुकसान पहुंचाया है। हैकर्स ने कॉइनचेक को $534 मिलियन और बिटग्रेल को $195 मिलियन का नुकसान पहुंचाया।

इसके अलावा, लेन-देन के लिए दो-कारक प्रमाणीकरण प्रक्रिया की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, लेन-देन शुरू करने के लिए आपसे उपयोगकर्ता नाम और पासवर्ड दर्ज करने के लिए कहा जा सकता है। फिर, आपको अपने व्यक्तिगत सेल फोन पर टेक्स्ट के माध्यम से भेजा गया प्रमाणीकरण कोड दर्ज करना पड़ सकता है।

सरकार द्वारा समर्थित धन के विपरीत, आभासी मुद्राओं का मूल्य पूरी तरह से आपूर्ति और मांग से संचालित होता है। इससे बहुत ज्यादा उतार-चढ़ाव हो सकते हैं जो निवेशकों के लिए महत्वपूर्ण लाभ या बड़ा नुकसान पैदा करते हैं। और क्रिप्टोकरेंसी निवेश स्टॉक, बॉन्ड और म्यूचुअल फंड जैसे पारंपरिक वित्तीय उत्पादों की तुलना में बहुत कम विनियामक संरक्षण के अधीन हैं।

अस्थिरता:

क्रिप्टोकरेंसी बाजार अत्यधिक अस्थिर है, इसलिए उतार-चढ़ाव के लिए तैयार रहें। आप कीमतों में नाटकीय उतार-चढ़ाव देखेंगे। यदि आपका निवेश पोर्टफोलियो या मानसिक स्वास्थ्य इसे संभाल नहीं सकता है, तो क्रिप्टोकरेंसी आपके लिए एक बुद्धिमान विकल्प नहीं हो सकता है।

क्रिप्टोकरेंसी काफी लोकप्रिय है, लेकिन याद रखें यह अभी भी अपनी प्रारंभिक अवस्था में है और इसे अत्यधिक सट्टा माना जाता है। किसी नई चीज में निवेश करना चुनौतियों के साथ आता है इसलिए तैयार रहें, यदि आप भाग लेने की योजना बनाते हैं, तो अपना शोध करें और शुरू करने के लिए रूढ़िवादी तरीके से निवेश करें।

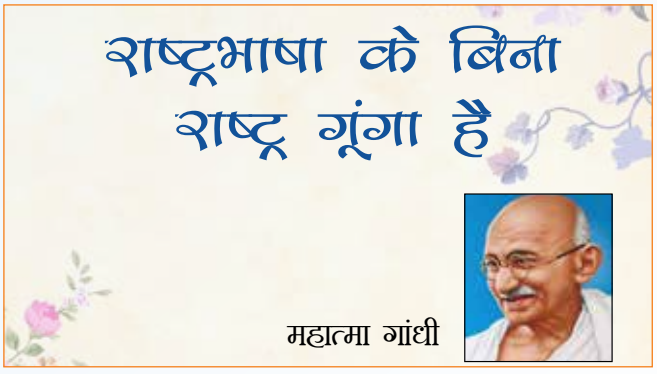

एनएचपीसी लिमिटेड के गुणवत्ता आश्वासन एवं निरीक्षण विभाग की पहल

विजय सिंह मीणा, समूह वरिष्ठ प्रबंधक (सिविल)
एनएचपीसी लिमिटेड, फरीदाबाद

एनएचपीसी लिमिटेड भारत का सबसे बड़ा जल विद्युत विकास संगठन है। एनएचपीसी के 30 पावर स्टेशन, जिनकी कुल क्षमता-8140 मेगावाट है। एनएचपीसी जल विद्युत, सौर और पवन ऊर्जा विकास की 15 परियोजनाओं के निर्माण में लगी हुई है। जिसमें सुबनसिरी लोअर जलविद्युत परियोजना (2000 मेगावाट), दिबांग बहुउद्देशीय परियोजना (2880 मेगावाट) तथा उसकी सहायक कंपनियों अर्थात् सीवीपीपीएल द्वारा केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में पकल दुल जलविद्युत परियोजना (1000 मेगावाट), कीरू जलविद्युत परियोजना (624 मेगावाट) और क्वार जलविद्युत परियोजना (540 मेगावाट), आरएचपीसीएल द्वारा केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में रतले जलविद्युत परियोजना (850 मेगावाट), एलटीएचपीएल द्वारा सिक्किम में तीस्ता-VI जलविद्युत परियोजना (500 मेगावाट) जेपीसीएल द्वारा सिक्किम में रंगित-IV जलविद्युत परियोजना (120 मेगावाट) सीपीएसयू योजना के तहत कुल 1000 मेगावाट सौर परियोजनाएं जिसमे गुजरात (600 मेगावाट), राजस्थान (300 मेगावाट) और आंध्र प्रदेश (100 मेगावाट) में तथा 40 मेगावाट गंजम उड़ीसा तथा केंद्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान, अजमेर में ग्राउंड माउंटेड सौर ऊर्जा परियोजना (0.70 मेगावाट) एनएचपीसी द्वारा निष्पादित की जा रही हैं। एनएचडीसी द्वारा 88 मेगावाट फ्लोटिंग सोलर पीवी परियोजना ओंकारेश्वर परियोजना के जलाशय में निष्पादित की जा रही है।

एनएचपीसी की निर्माणाधीन परियोजनाओं में विभिन्न प्रकार के निर्माण सामग्रियों का प्रयोग किया जाता है, जिसमें विभिन्न प्रकार के टीएमटी बार एक प्रमुख निर्माण सामग्री है। निर्माणाधीन परियोजनाओं द्वारा विभिन्न प्रकार के टीएमटी बार का गुणवत्ता परीक्षण एन. ए. बी. एल. द्वारा मान्यता प्राप्त लैब सेंटर में त्रिपक्षीय परीक्षण द्वारा कराया जाता है ताकि निर्मित संरचना की मजबूती और गुणवत्ता बेहतर और दीर्घ काल तक के लिए कायम रह सकें। इन परीक्षणों मे सरियों का यांत्रिक जांच और रासायनिक विश्लेषण जांच प्रमुख रूप से कराई जाती है।

एनएचपीसी के निगम मुख्यालय में भी गुणवत्ता आश्वासन एवं निरीक्षण विभाग ने अपना एक गुणवत्ता लैब स्थापित और संचालित किया हुआ है। इस निरीक्षण केंद्र में 1000 किलो न्यूटन क्षमता के एक डिजिटल यूनिवर्सल टेस्टिंग मशीन और एक ऑप्टिकल एमिशन स्पेक्ट्रोमीटर संयंत्र की स्थापना की गई है। निगम मुख्यालय में स्थापित ऑप्टिकल एमिशन स्पेक्ट्रोमीटर मशीन के द्वारा रासायनिक विश्लेषण और यूनिवर्सल टेस्टिंग मशीन के द्वारा यांत्रिक परीक्षण किया जाता है।

यूनिवर्सल टेस्टिंग मशीन

ऑप्टिकल एमिशन स्पेक्ट्रोमीटर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), फरीदाबाद के सदस्य कार्यालयों का विवरण

1. **एनएचपीसी लिमिटेड**
   एनएचपीसी कार्यालय परिसर, सैक्टर -33,
   फरीदाबाद-121003
   cmd@nhpc.nic.in
   01292275920

2. **केंद्रीय भूमि जल बोर्ड**
   भूजल भवन, एनएच-4, फरीदाबाद
   hindi-cgwb@nic.in
   01292477125

3. **केंद्रीय विद्यालय-II**
   केंद्रीय विद्यालय नं.2, एनएच-4, फरीदाबाद
   kvfbd02@yahoo.co.in
   01292415656

4. **राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड**
   एससीओ - 3 प्रथम तल, हुडा काम्प्लेक्स,
   सैक्टर-19, मथुरा रोड, एनएच -4,
   फरीदाबाद- 121002
   rinl.faridabad@gmail.com
   01292280011

5. **विपणन एवं निरीक्षण निदेशालय**
   सी जी,ओ, परिसर, एनएच-4,
   फरीदाबाद-121001
   hindidmi@gmail.com
   01292427047

6. **भारतीय मानक ब्यूरो**
   एस.सी.ओ. 21, सैक्टर-12, फरीदाबाद-121007
   hfdo@bis.org.in
   01292292175

7. **कर्मचारी राज्य बीमा निगम**
   क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
   पंचदीप भवन, सैक्टर-16, फरीदाबाद-121002
   rd-haryana@esic.in
   01292222981

8. **पेट्रोलियम एवं विस्फोटक सुरक्षा संगठन**
   उत्तरी अंचल, हॉल संख्या 502 एवं 50,
   लेवल 5 ब्लॉक बी, ओल्ड सीजीओ परिसर,
   एनएच-4, फरीदाबाद-121001
   jtccefaridabad@explosives.gov.in
   01292410730

9. **ट्रांसलेशनल स्वास्थ्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान**
   तृत्तीय माइलस्टोन, फरीदाबाद गुरुग्राम एक्स्प्रेसवे,
   पीओ बॉक्स नं°4, फरीदाबाद-121001
   raj.kumar@thsti.res.in

10. **भारत संचार निगम लिमिटेड**
    कार्यालय महाप्रबंधक दूरसंचार,
    सैक्टर-15ए, फरीदाबाद
    gmtdfaridabad@gmail.com
    01292280033

11. राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण प्रतिष्ठान
एनपीटीआई परिसर, सैक्टर-33,
फरीदाबाद-121003
rkmishra@npti.in
01292275475

12. केंद्रीय विद्यालय नं.I
एन एच-4, एन.आई.टी., फरीदाबाद 121001
kvfbd1@rediffmail.com
01292416889

13. एनटीपीसी लिमिटेड गैस पावर स्टेशन
स्टेशन, गांव मुझैड़ी,पो.ऑ.-निमका,
तिगांव रोड, फरीदाबाद-121004
dnandi@ntpc.co.in
01292401809

14. दिल्ली आंचलिक प्रशिक्षण संस्थान,
राष्ट्रीय सीमा शुल्क, अप्रत्यक्ष कर एवं नार्कोटिक्स अकादमी, नासिन परिसर, सैक्टर -29,
फरीदाबाद-121008
nacin.ztidelhi@gov.in
01292504652

15. राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय
क्षेत्रीय संकार्य प्रभाग,
केंद्रीय सरकारी कार्यालय परिसर, ब्लाक-2,
एनएच-4, फरीदाबाद-121001
fodhq.as.fbd@gmail.com
01292427992

16. पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
उत्तरी क्षेत्रीय-1 मुख्यालय, एस.सी.ओ. बे सं. 5 से 10 सैक्टर 16ए, फरीदाबाद- 121002
satyendra@powergridindia.com
01292666301

17. इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड,
अनुसंधान एवं विकास केन्द्र
सैक्टर-13, फरीदाबाद-121007
saxenad@indianoil.com
01292294342

18. भारतीय भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण
एनएच-5 पी, एनआईटी, फरीदाबाद- 121001
rajbhashasuhar@gmail.com
01292423128

19. भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड
गांव पियाला टैरीटरी, पो.ऑ.-असावटी,
तहसील- बल्लभगढ़,
फरीदाबाद, 121102
khorwaldk@bharatepetroleum.in
01292205219

20. ईसीजीसी लिमिटेड
एससीओ- 149, दूसरी मंजिल,
सैक्टर- 21 सी, फरीदाबाद- 121001
faridabad@ecgc.in
01294315114

21. फरीदाबाद मण्डल, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग
एनएच-4, सीजीओ काम्प्लैक्स,
फरीदाबाद-121001
fcd_cpwd@yahoo.com
01292982316

22. गेल इंडिया लिमिटेड
छायंसा कम्प्रेसर स्टेशन,
बल्लभगढ़ , फरीदाबाद - 121004
subodh.mahto@gail.co.in
01292209066

23. भारतीय खाद्य निगम
एनएच- 2, एनआईटी, फरीदाबाद-121001
gurgahr.fci@nic.in
01294175905

24. फरीदाबाद विद्त मंडल, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग
एनएच- 4, सी.जी.ओ. कॉम्प्लैक्स, फरीदाबाद
aepfced@rediffmail.com
01292412993

25. दत्तोपंत ठेंगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड
द्वितीय तल, भड़ाना भवन, नीलम बाटा रोड,
एनआईटी, फरीदाबाद- 121001
rd-faridabad@cbwe.nic.in
012924422566

26. जवाहर नवोदय विद्यालय
ग्राम-मोठूका, पोस्ट- चांदपुर,
तहसील- बल्लबगढ़, फरीदाबाद-121001
jnvfbd2015@gmail.com
01292209228

27. केंदीय विद्यालय नं.-।।।
एन एच-IV, फरीदाबाद-121001
kv3faridabad@gmail.com
01292410325

28. वनस्पति संरक्षण, संगरोध एवं संग्रह निदेशालय
सी.जी.ओ. काम्प्लैक्स, एनएच-4,
फरीदाबाद-121001
ppa@nic.in
01292413985

29. योजना एवं अन्वेषण मंडल, केंद्रीय जल आयोग
क्वार्टर नं.1064, एनएच- 4, फरीदाबाद-121001
pi-cwc@nic.in
01292412576

30. योजना परिमंडल, केन्द्रीय जल आयोग
क्वार्टर नं.1065-68, टाइप-V, एनएच-IV,
फरीदाबाद-121001
seplanning-cwc@nic.in
01292412956

31. कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय
भविष्य निधि भवन, सैक्टर-15 ए ,
फरीदाबाद-121007
ro.faridabad@epfindia.gov.in
01292288068

32. केन्द्रीय उर्वरक गुण नियंत्रण एवं प्रशिक्षण संस्थान
एनएच-4, फरीदाबाद- 121001
cfqcti@nic.in
01292414712

33. कार्यालय आयकर आयुक्त (अपील)
न्यू सीजीओ कॉम्प्लैक्स, बी-ब्लॉक, एनएच-4,
फरीदाबाद-121001
faridabad.cit.apl@incometax.gov.in
01292423817

34. राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद
34 कि.मी. स्टोर, दिल्ली-मथुरा रोड, एनएच-2,
बल्लबगढ़-121004
nccbm@ncbindia.com
01294192410

35. आयकर अपर निदेशक (अन्वेक्षण)
न्यू सी.जी.ओ. परिसर, प्रथम तल, ब्लॉक-बी,
एनएच- IV, एनआईटी, फरीदाबाद
addlditinvfaridabad@gmail.com
01292415981

36. केन्द्रीय एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन केन्द्र
मशीनरी स्टोर बिल्डिंग, एनएच-IV,
फरीदाबाद-121001
ipmhr07@nic.in
01292421599

37. केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय
जीएसटी भवन, ब्लॉक-सी, एवं डी, न्यू सीजीओ
कॉम्प्लैक्स, एनएच-IV, फरीदाबाद-121001
commr-cexfbd2@nic.in
01292429219

38. क्षेत्रीय जैव प्रौद्योगिकी केन्द्र
एनसीआर बायोटेक साइंस क्लस्टर, तृतीय मील
पत्थर, फरीदाबाद-गुरूग्राम एक्सप्रैसवे
फरीदाबाद हरियाणा-121001
director@rcb.res.in
01292848800

39. प्रधान आयकर आयुक्त कार्यालय
बी-ब्लॉक, द्वितीय तल, न्यू सीजीओ कॉम्प्लैक्स,
एनएच-4, फरीदाबाद-121001
cit-fbd-hry@gov.in
01292420710

40. सहायक सम्पदा प्रबंधक कार्यालय
ओल्ड सीजीओ कॉम्प्लैक्स, लेवल-3, एनएच-IV,
फरीदाबाद-121001
aemfbd@gmail.com
01292412670

41. भारतीय डाकघर, फरीदाबाद
भारतीय डाकघर एवं अधीक्षक डाकघर कार्यालय,
फरीदाबाद मंडल, फरीदाबाद-121001
sposfaridabad@gmail.com
01292416597

42. रेलवे स्टेशन
रेलवे स्टेशन कार्यालय, फरीदाबाद-121001
kcmeena481@gmail.com
01292418811

43. स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड
गोविन्द भवन, नीलम चौक, एनआईटी,
फरीदाबाद-121001
bmfarfp@sail-steel.com
01292416646

44. अरूण जेटली राष्ट्रीय वित्तीय प्रबंधन संस्थान
सैक्टर-48, पाली रोड, फरीदाबाद
jai30bhagwan@gmail.com
01292465205

45. परिचालन एवं अनुरक्षण मण्डल
भाखडा ब्यास प्रबंध बोर्ड (बी.बी.एम.बी.)
बल्लभगढ़, हरियाणा -121004
xenomblb@bbmb.nic.in
01292235511

46. राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय
उप क्षेत्रीय कार्यालय, सीजीओ कॉम्प्लैक्स, ब्लॉक-
2,लेबल-6, एनएच-4, फरीदाबाद
fodsro.fbd@gmail.com
01292980395

47. वायु सेना स्टेशन
56 ए.एस.पी. राजभाषा अनुभाग, फरीदाबाद
mind.scape@gov.in
01292473633

48. कर्मचारी राज्य बीमा निगम चिकित्सा महाविद्यालय एवं अस्पताल
एनएच3 एनआईटी फ़रीदाबाद
dean-faridabad@esic.nic.in
01292970111

49. क्षेत्रीय श्रम संस्थान, फरीदाबाद कारखाना सलाह सेवा एवं श्रम संस्थान, महानिदेशालय
सेक्टर 47, फ़रीदाबाद
rlifaridabad@dgfasli.nic.in
01292468033

50. अपर केंद्रीय भविष्य निधि आयुक्त
आंचलिक कार्यालय कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, सेक्टर 16 ए ओल्ड फ़रीदाबाद
acc.hr@epfindia.gov.in
01292227843

51. भारतीय जीव जन्तु कल्याण बोर्ड
पोस्ट सीकरी, तहसील बल्लभगढ़, जिला फरीदाबाद, हरियाणा 121004
sk.dutta@nic.in
01292555700

प्रेरक प्रसंग

सच बोलने की हिम्मत

स्वामी विवेकानंद एक दिन कक्षा में मित्रों को कहानी सुना रहे थे। सभी इतने मग्न थे कि उन्हें पता ही नहीं चला कि कब मास्टर जी कक्षा में आए और पढ़ाना शुरू कर दिया। मास्टर जी को कुछ फुसफुसाहट सुनाई दी तो उन्होंने पूछा, 'कौन बात कर रहा है?' सभी ने स्वामी जी और उनके साथ बैठे छात्रों की तरफ इशारा कर दिया। मास्टर जी ने तुरंत उन छात्रों को बुलाया और पाठ से संबंधित एक प्रश्न पूछने लगे। जब कोई उत्तर न दे सका, तो मास्टर जी ने स्वामी जी से भी वही प्रश्न किया। उन्होंने उत्तर दे दिया। मास्टर जी को यकीन हो गया कि स्वामी जी पाठ पर ध्यान दे रहे थे और बाकी छात्र बातचीत में लगे थे। उन्होंने स्वामी जी को छोड़ सभी को बेंच पर खड़े होने की सजा दे दी। सभी छात्र बेंच पर खड़े होने लगे, स्वामी जी ने भी यही किया। तब मास्टर जी स्वामी जी से बोले, तुम बैठ जाओ, 'नहीं सर, मुझे भी खड़ा होना होगा क्योंकि मैं ही इन छात्रों से बात कर रहा था।' स्वामी जी ने कहा।

सभी उनकी सच बोलने की हिम्मत देख बहुत प्रभावित हुए।

– साभार

रिपोर्ट

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), फरीदाबाद के सदस्य कार्यालयों में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन

एनएचपीसी लिमिटेड

एनएचपीसी लिमिटेड के फरीदाबाद स्थित निगम मुख्यालय में 14 से 29 सितंबर, 2024 की अवधि में हिंदी पखवाड़े का भव्य आयोजन किया गया। इस अवधि के दौरान निगम मुख्यालय के वातावरण को 'राजभाषामय' बनाने के लिए विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और मुख्यालय के दोनों भवनों के सभी तलों पर हिंदी के प्रचार-प्रसार संबंधी आकर्षक बैनर एवं महापुरूषों के विचार संबंधी आकर्षक पोस्टर लगाए गए।

हिंदी पखवाड़े के अवसर पर निगम के कार्मिकों को हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय की ओर से एक संदेश भी जारी किया गया।

हिंदी पखवाडे के अंतर्गत प्रतियोगिताओं का शुभारंभ हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी से किया गया। इस प्रदर्शनी में 06 प्रतिष्ठित प्रकाशकों ने नवीनतम हिंदी पुस्तकों का प्रदर्शन किया। इसके बाद निगम मुख्यालय में पदस्थ महाप्रबंधकों एवं इससे उच्च स्तर के अधिकारियों के लिए ऑनलाइन राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त निगम मुख्यालय में पदस्थ सभी स्तर के कार्मिकों के लिए हिंदी नोटिंग-ड्राफ्टिंग, हिंदी प्रश्नोत्तरी व अनुवाद, हिंदी सुलेख व श्रुतलेख, कंठस्थ दोहों/चौपाइयों व श्लोकों का वाचन, हिंदी वाद-विवाद तथा हिंदी काव्य पाठ आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्मिकों के परिवार के सदस्यों के बीच हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से 13 सितंबर, 2024 को बच्चों एवं महिलाओं के लिए भी हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें महिलाओं और बच्चों ने पूरे उत्साह से भाग लिया।

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेता कार्मिकों को पुरस्कृत करने एवं हिंदी पखवाड़े के समापन के उपलक्ष्य में दिनांक 15 अक्तूबर 2024 को समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह का पारंपरिक शुभारंभ अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक, एनएचपीसी लिमिटेड के कर-कमलों से दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। कार्यक्रम में निदेशक (वित्त), निदेशक (कार्मिक), निदेशक (परियोजनाएं) तथा मुख्य सतर्कता अधिकारी महोदय की भी विशेष उपस्थिति रही। इस कार्यक्रम के दौरान गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा हिंदी के विषय पर तैयार एक वृतचित्र 'हिंदी का सफरनामा' भी प्रदर्शित की गई। समारोह में संगीत व नाटक प्रभाग, केंद्रीय संचार ब्यूरो, सूचना व प्रसारण मंत्रालय, (भारत सरकार) के कलाकारों की टीम द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इसके बाद हिंदी प्रतियोगिताओं के सभी विजेता प्रतिभागियों को अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय व निदेशकगण के कर-कमलों से पुरस्कार स्वरूप हिंदी पुस्तकें व प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, उत्तरी अंचल

कार्यालय संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक, उत्तरी अंचल, फरीदाबाद में 14 से 28 सितंबर 2024 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े शुभारम्भ कार्यालयाध्यक्ष डॉ. संजना शर्मा, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक द्वारा किया गया। इस अवसर पर कार्यालय में उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस कार्यक्रम में अति उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग, हिंदी में कार्य करने हेतु सुझावों एवं उपायों पर अपने-अपने विचार प्रकट किए।

इस अवसर पर राजभाषा अधिकारी श्री सुनील मनोहर सिंह, उप विस्फोटक नियंत्रक के कुशल संचालन, मार्गदर्शन एवं दिशा निर्देशन में हिंदी सभा, द्वितीय हिंदी कार्यशाला, हिंदी कार्यान्वयन समिति एवं विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पूर्ण उत्साह, लगन एवं मनोयोग से प्रतियोगिताओं में भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में कार्यालयाध्यक्ष महोदया द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण प्रतिष्ठान (एनपीटीआई)

राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण प्रतिष्ठान (एनपीटीआई) के कॉरपोरेट कार्यालय फरीदाबाद में 14 सितंबर से 13 अक्टूबर 2024 तक हिंदी माह के रूप में राजभाषा उत्सव के आयोजन के साथ एनपीटीआई के देशभर में स्थापित अन्य 10 संस्थानों में हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। राजभाषा उत्सव के दौरान नियमित रूप से कार्यरत अधिकारियों, कर्मचारियों तथा कंसल्टेंट एवं आउटसोर्स के सभी कर्मचारियों की सहभागिता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से सुलेख, हिंदी में टिप्पण एवं प्रारूपण तथा अनुवाद, हिंदी में ई-मेल, काव्यपाठ और भाषण, राजभाषा पठन तथा प्रश्नोत्तरी जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिनमें सभी कार्मिकों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

इन प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत करने के लिए दिनांक 21.10.2024 को पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह का आयोजन संस्थान के सभागार में किया गया। इस समारोह में प्रतिष्ठान की महानिदेशक डॉ. तृप्ता ठाकुर ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में एनपीटीआई में कार्यरत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन हमें अपनी भाषा और संस्कृति से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इंडियन ऑयल अनुसंधान एवं विकास केंद्र

इंडियन ऑयल अनुसंधान एवं विकास केंद्र में हिंदी पखवाड़ा 2024 का आयोजन श्री आलोक शर्मा, निदेशक (अनुसंधान एवं विकास) के मार्गदर्शन तथा श्री मुकुल माहेश्वरी, अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रेरणा से हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा 16 से 28 सितंबर 2024 तक आयोजित किया गया। श्री आलोक शर्मा, निदेशक (अनुसंधान एवं विकास) द्वारा दिनांक 16.09.2024 को हिंदी राजभाषा हिंदी में कार्य करने की शपथ दिलाने के साथ हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन किया गया।

हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत कुल बाईस कार्यक्रमों जैसे वाद-विवाद प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी, चित्र-भाव, ई-मेल, निबन्ध, हिंदी विभागीय गतिविधि का प्रस्तुतीकरण, तकनीकी पेपर का प्रस्तुतीकरण, नारा, सुलेख, पत्र-लेखन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें अनुसंधान एवं विकास केंद्र के बच्चे, गृहिणी, एवं सीआईएसएफ के कार्मिकों तथा उनके परिवार के सदस्यों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। हिंदी व इतर हिंदी भाषी प्रतिभागियों के लिए अलग से प्रतियोगिताएं आयोजित की गई और पुरस्कार प्रदान किए गए। सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों को हिंदी साहित्य की पुस्तकें भेंट स्वरूप प्रदान की गई।

कवि सम्मेलन का आयोजन दिनांक 28.09.2024 को किया गया जिसमें देश के विख्यात कवि- डा. सुरेश अवस्थी, डा. सुरेन्द्र दूबे, श्री मंजीत सिंह, श्री अजातशत्रु एवं गजेंद्र सोलंकी की उपस्थिती रही। कवि सम्मेलन में उपस्थित श्रोतागण ने विभिन्न काव्य रसों का भरपूर आनंद लिया।

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (राष्ट्रीय भौमिकी उत्कृष्ट शोध केंद्र)

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, रा.भौ.उ.शो.के., फरीदाबाद कार्यालय में 14 से 30 सितंबर 2024 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम का शुभारंभ दिनांक 17.09.24 को उप महानिदेशक महोदया श्रीमती पुष्प लता के कर कमलों से दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। उप महानिदेशक ने सभा को संबोधित कर सरकारी काम-काज में हिंदी के महत्व को दर्शाया और सभी कार्मिकों को पखवाड़ा में आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

पखवाड़े के दौरान, हिंदी टिप्पण एवं पत्र लेखन, पर्यायवाची एवं श्रुतलेख हिंदी प्रश्नोत्तरी एवं उद्घोष लेखन, आशु-भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमें सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

हिंदी पखवाड़े के दौरान दिनांक 25.09.24 को हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें मुख्य अतिथि एवं वक्ता डॉ एच. एस. सैनी, निदेशक (से.नि.), भा.भू.स. ने व्याख्यान दिया। इस अवसर पर रा.भौ.उ.शो.के., फरीदाबाद कार्यालय की गृह पत्रिका 'मणिका' के प्रथम अंक का विमोचन मुख्य अतिथि एवं उप महानिदेशक महोदया द्वारा किया गया।

दिनांक 30.09.24 को पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह उपमहानिदेशक महोदया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यालय द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगताओं में हिंदी/ हिंदीतर श्रेणी के अनुसार प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

ब्रिक-ट्रांसलेशनल स्वास्थ्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान

संस्थान मे हिंदी पखवाड़ा 14 से 29 सितंबर 2024 को मनाया गया। मुख्य कार्यक्रम 27 सितंबर 2024 को आयोजित किया गया। इस दिन डॉ पूजा त्यागी, हिंदी लेक्चरर, के. एल. मेहता दयानंद महिला कॉलेज, फरीदाबाद को मुख्य अतिथि के रूप मे आमंत्रित किया गया। पखवाड़े के दौरान राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने के लिए विभीन्न हिंदी प्रतियोगिताएं जैसे – हिंदी सुलेख, हिंदी प्रश्नोत्तरी, हिंदी निबंध, वाद विवाद, हिंदी के महत्व को दर्शाती फोटोग्राफी प्रतियोगिता तथा 'शून्य अपशिष्ट/ जीरो वेस्ट' पर वीडियो/ रील बनाने की प्रतियोगिता आयोजित की गई। मुख्य कार्यक्रम के दौरान स्वरचित हिंदी कविता पाठन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमे प्रतिभागियों ने उत्साह के साथ भाग लिया। इन सभी प्रतियोगिताओ के विजेताओ को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

क्षेत्रीय श्रम संस्थान

क्षेत्रीय श्रम संस्थान फरीदाबाद में हिंदी पखवाड़ा 2024 मनाया गया जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता, शब्द ज्ञान एवं अनुवाद प्रतियोगिता, कविता पाठ प्रतियोगिता और राजभाषा नियमो की जानकारी से संबन्धित प्रतियोगिता आयोजित किए गए जिसमें कर्मचारियों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया और हिंदी में अधिकतम कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया।

राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद्

परिषद् में हिंदी पखवाड़ा 17 से 30 सितंबर 2024 के बीच बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पखवाड़े का शुभारंभ 17 सितंबर 2024 को माननीय महानिदेशक महोदय, डॉ लोक प्रताप सिंह के कर कमलों द्वारा किया गया। हिंदी पखवाड़े 2024 के दौरान निबंध, टिप्पणी लेखन, हिंदी प्रश्नोत्तरी, अनुवाद, कविता पाठ तथा श्रुतलेखन/ सुलेख जैसी विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिनमें अधिकारियों/ कर्मचारियों ने बढ़ख़चढ़कर भाग लिया। प्रतियोगिताओं का उद्देश्य प्रतिभागियों की हिंदी भाषा कौशल को उभारना और उन्हें भाषा के विभिन्न आयामों से परिचित कराना था। हिंदी पखवाड़े के दौरान दिनांक 25 सितंबर 2024 को एक हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया।

एनसीबी कार्यालय में दिनांक 30 सितंबर 2024 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह, पूरे उत्साह के साथ डॉ संजीव कुमार चतुर्वेदी, इकाई प्रभारी एवं संयुक्त निदेशक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह के अवसर पर कविता पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई। पखवाड़े के समापन समारोह के दौरान प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले विजेताओं के नामों की घोषणा की गई जिन्हें कार्यालय के वार्षिक दिवस के अवसर पर पुरस्कृत किया जाएगा।

आलसी का कोई वर्तमान और भविष्य नहीं होता।

- चाणक्य

कविताएं

दर्द

दर्द में आवाज नहीं आती,
ना ही दर्द की कोई खुशबू होती है,
दर्द दीवार की तरह खड़ा हो जाता है,
वो पत्थर होने लगता है अंदर ही अंदर,
उसे जानने के लिए,
उस दीवार के सहारे बैठना पड़ता है,
उसकी तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाना पड़ता है,
फिर जाकर कहीं अकेले में,
वो तुम्हे बड़बड़ाता हुआ दिखता है,
उसके सख्त बदन से रूबरू होने का मौका मिलता है,
उसमें पड़ी गांठें मुंह खोल के बैठ जाती है,
दर्द की ऊपरी चादर खींच दो,
तब तुम्हें दिखेगा,
चारों तरफ फैला हुआ पस,
मवाद नाचती हुई मिलेगी चोटों के मुहाने पर,
तब भी दर्द का मर्म नहीं मिलेगा,
उसके लिए हर चोट को दबाकर देखना पड़ेगा,
उसे खींच कर बाहर निकालना पड़ेगा,
दर्द उम्रों तक दबे रहते हैं,
कैंसर बन जाते हैं,
नहीं मिलता तो बस,
हर दर्द के मर्म को ढूंढ के मिटाने वाला,
कंक्रीट के महलों में दर्दों की दीवारें खड़ी हैं,
लोग मर जाते हैं दर्द जिंदा रहता है।

चन्द्र प्रकाश, निरीक्षक
प्रधान आयकर आयुक्त कार्यालय, फरीदाबाद

माँ का अटूट प्रेम

जब आंधियां हमें डराए,
माँ का साहस दीवार बन जाए।
जो भी हम पर आंच लाए,
वह जलजला बन उसे हराए।
वह कठिन राहों को सरल बनाए,
अपने आंचल में आस बसाए।
दुनिया के हर बंधन को तोड़ दे,
हमारे रंगीन सपनों को ऊंचाई दे।

उसकी बाहों में दुनिया सिमट जाए,
हर चिंता उसकी गोद में मिट जाए।
बिन कहे वो हर बात समझ ले,
हमारे दिल की धड़कन पढ़ ले।

भूखी रहे, मगर हमें खिलाए,
हर दुख को खुद में समाए।
उसकी ममता का कोई मोल नहीं,
माँ के बिना जीवन का तोल नहीं।

श्री हिमांशु साहा, समूह महाप्रबंधक (विद्युत)
एनएचपीसी लिमिटेड, फरीदाबाद

रुक जाना नहीं

जीवन गूढ़ है
किसी मोहल्ले की गलियों जैसा
जो हर कदम पर मुड़ जाती हैं
और कहीं अचानक बंद हो जाती है
पर जब तुम हर रोज
उन गलियों से गुजरते हो
तो वो गलियां अपनी सी लगने लगती हैं
और तुम ढूंढ ही लेते हो
वो रास्ते भी
खुलती हैं जिनमें
वो बंद गलियां।
जीवन एक यात्रा है
एक अंतहीन यात्रा
जिसपे चलते–चलते तुम थक जाते हो
निराशा के बादल भी घेरते हैं तुम्हे
और अंधेरा छा जाता है चारों ओर
पर जब कठिन परिश्रम के बाद
तुम्हारे पसीने की बूंदे
जब बरसती हैं धरती पर
तो छंट जाता है तिमिर
और निकलता है उम्मीद का एक सूरज
जिसकी आग में तप कर
सच होते हैं तुम्हारे सपने।
जीवन एक खोज भी तो है
तुम खोजते हो जीवन में खुशियां
ढूंढते हो वो पल
जो ले आए तुम्हारे चेहरे पर मुस्कान
और जिस दिन तुम झांकते हो
अपने मन के भीतर
और मिलते हो अपने आप से
उस दिन तुम समझ जाते हो
जीवन के सारे सुख
छुपे हैं उस मुस्कान में
जो खिली है किसी के चेहरे पर
तुम्हारे कारण।
सच तो ये है कि
जीवन के हर पल में जीवन है
और जब तक तुम इसे जीवंत न बना लो
रुक जाना नहीं।

गुंजन विश्वकर्मा, वरिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी
राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (क्षे.सं.प्र.), फरीदाबाद

मानवी

'मानवी' तुम परम अनुपा हो,
सच्ची शक्ति स्तूपा हो,

'मानवी' तुम्हारें दर्द और पीड़ा को किया गया नजर अंदाज,
हुए है तुम पर अनेक शोषण व अत्याचार,
तुम्हारी आवाज और विचारों को गया है दबाया,
तुम्हारे अधिकारों पर दूसरों ने अपना हक है जताया।

'मानवी' तुम्हारे समर्पण और सेवा को कभी नहीं मिली प्रशंसा,
तुम्हारे इच्छाओं को बार–बार किया गया है अनदेखा,
'मानवी' घर की बंदिशों ने तुम्हें है पकड़ा,
समाज ने तुम्हें अपनी रूढ़ियों में है जकडा।

'मानवी' तुम परम अनुपा हो,
सच्ची शक्ति स्तूपा हो,

'नारी' करना होगा तुम्हें संकल्प दृढ़,
अपने अधिकारों के प्रति होना होगा सजग,
'नारी' तुम्हें छोडनी होगी शरणागत की डगर,
तुम्हें पकड़ना होगा स्वावलंबन का पथ,
'नारी' तुम्हें अब समाज की रूढ़ियों में नहीं जकड़ना,
अपने विचारों के उन्मुक्त आकाश में है उड़ना,
'नारी' सिर्फ रसोई में नहीं देना है तुम्हें चूल्हे का साथ,
करना है तुम्हें समाज में परिवर्तन का शंखनाद।

'मानवी' तुम परम अनुपा हो,
सच्ची शक्ति स्तूपा हो,

'स्त्री' अबला नहीं, सबला भी बन सकती हो तुम,
सिर्फ घर नहीं अर्थव्यवस्था भी कर सकती हो रोशन तुम,
'स्त्री' कर सकती हो तुम सर्जित नए व्यापार,
समाज को दे सकती हो उन्नति के अवसर हजार,
'स्त्री' है तुम में इच्छाशक्ति नित नए 'सृजन' की,
जो लाए इस विश्व में क्रांति 'अर्जन' करने की।

'मानवी' तुम परम अनुपा हो,
सच्ची शक्ति स्तूपा हो,

'वनिता' ऐसा कोई क्षेत्र स्थान नहीं जहां तुम्हारी पहुंच नही,
ऐसा कोई विषय विधान नहीं जहां तुम्हारी सोच नहीं,
'वनिता' आज तुम ज्ञान और विज्ञान में सबको पीछे छोड़ रही हो,
समुंद्र की गहराइयों से लेकर आसमान की ऊंचाइयों तक दौड़ रही हो,

'मानवी' तुम परम अनुपा हो,
सच्ची शक्ति स्तूपा हो,

'नारी' अपनी क्षमता से कर सकती हो कुशल नेतृत्व का संचार,
बन 'लक्ष्मीबाई' अपने दुश्मनों पर कर सकती हो बार–बार प्रहार,
बन 'सावित्रीबाई फुले' शिक्षा से संवार सकती हो जिंदगियां हजार,
तुम बन 'भारत की कोकिला' गाओ विकास का गीत जिससे मिले देश को सफलता का हर्ष,
तुम बन 'मदर टेरेसा' इस समाज को दे सकती हो सेवा और प्रेम का कोमल स्पर्श,

अपने ज्ञान और क्षमता को पहचानो 'नारी',
'बंधनमुक्त' हो विकास, उन्नति, समृद्धि की करो तैयारी,

लखन, कनिष्ठ हिंदी सहायक (अनु.)
राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद, फरीदाबाद

स्त्री

स्त्री होना, इसमें कुछ होने जैसा है?
जब जन्म हुआ कुछ रोने जैसा है?
फिर क्यों रोए? सब नाते रिश्तेदार।
माँ को तो प्रसव पीड़ा थी।
रो कर भी बेटी को सीने से लगा वो खुश हो गई।
ना जाने क्यों खुश हुए पिता भी।
देखा जब माँ की आँख फिर से नम हो गई।
धीरे से जब पिता ने बच्ची को गले लगाया।
माँ ने चुपके से उनका हाथ दबाया।
कहा धीरे से कानों में, अबकी बार बेहोश नहीं हूँ।
बेटी हुई है मुझे।
बाप की आंख आज नम थी।
जी हाँ।
स्त्री होना, जीवन दायनी होना है

प्रीति पाठक, कुशल कार्य सहायक
योजना एवं अन्वेषण मंडल, फरीदाबाद

हर दिन–नई शुरुआत

रात के बाद आती है सुबह की किरण,
सपनों से भरी नई कहानी की तरंग।
सांसों में हो नई उमंग और खुशियों की भरमार,
हर दिन हो एक नई शुरुआत का अवसर।

कल जो बीत गया उसे भूल जाओ,
सपनों की दुनिया में अब खो जाओ।
पलकों में सजे सपनों को हकीकत बनाओ,
हर कदम पर बस आगे बढ़ते जाओ।

आओ मिलकर हम सब ये संकल्प करें,
हर क्षण को जीवन की सुंदरता से भरें।
दिल में हो उमंग और आत्मा में हो नया विश्वास,
हर दिन को बनाएं नया,
अपने जीवन का अनमोल पल।

शिवानी धीमान
वरिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी एवं हिन्दी अधिकारी
राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (क्षे.सं.प्र.), फरीदाबाद

सतीत्व

वो कौन थे जिन्होने स्त्री के लिए गढ़े कुछ महान शब्द।
क्या भय था उन्हें?
स्त्री को रहना होगा मर्यादा में।
करनी होगी अपने सतीत्व की रक्षा।
सेवा उसका मूलभूत कर्तव्य होगा।
वाणी का माधुर्य अनिवार्य गुण होना चाहिए।
लज्जा विहीन नारी स्वीकार्य नहीं होगी।
वो सब लोग जिन्होने ये सब कहा
किस बात से आशंकित थे।
पुरुष बलशाली थे स्त्रियां कोमल थी
तो फिर इस छल की क्या आवश्यकता थी।
संसार के प्राणों का पोषण करने वाले हाथों को
जकड़ दिया गया बेड़ियों में।
नारी मन की स्नेह अभिव्यक्ति की अवहेलना
विधाता की सुंदरतम रचना का अपमान था।
सतीत्व के बोझ तले
नारीत्व का पुष्प पल्लवित न हो सका।
नारी अपने समग्र रूप में स्त्री न हो सकी।
वो जी न सकी अपने उन पलों को
जो वो स्त्री होकर जी सकती थी।
स्त्री का अपने भीतर संपूर्ण रूप से खिल जाना
इतिहास की सबसे सुंदर घटना होती।
उसके ह्रदय की गहराइयों से चुने हुए एहसास के मोती।
जब उड़ेल दिए जाते प्रेम के समंदर में।
तो आलोकित होता पृथ्वी का समस्त जीवन।
स्त्री के प्रेममय पलों की उद्दात अभिव्यक्ति को
पाप की सीमाओं मे बांधना कुत्सित प्रवंचना मात्र है।
स्त्री–पुरुष के छल रहित समर्पण युक्त एकत्व का
नैतिकता के बंधनों से मुक्त होना ही सार्थक है।
प्रेम ही अपने उच्चतम स्वरूप मे ईश्वर हो जाता हैं
स्त्रियां ये सब पहले से ही जानती थीं।
वे इस विषय मे पारंगत थीं।
नारी की ये शक्तियां ही शायद।
पुरुषों मे असुरक्षा का कारण बन गई।
और उन्होंने बचाव के लिए उकेर दिए महान सिंहासन।
जिस पर आसीन कर दिया गया स्त्रियों को।
ताकि प्रेम के बिरवे को पनपने ही न दिया जाए।
और उनसे काम लिया उस तरह जिस तरह वो चाहते थे।
परंतु वे फिर कभी पा न सके प्रेम मे आकंठ डूबी उन ओस की बूंदों को
जो सर्वत्र व्याप्त होकर भी उनके लिए अदृश्य रहीं।
नारी के शुभ्र स्नेह का प्रकाश यदि बिखर गया होता
जीवन का कोना–कोना उजास से भर गया होता।
ये नारी ही हैं जो सतरंगी प्यार हैं
पुरुष के मरुप्रदेश मे वासंती बयार हैं।
रिश्तों की कसमसाहट का जलतरंग हैं।
स्नेहसिंचित नारी गुलाबों का रंग हैं।
अस्तित्व न्योछावर कर देना उसके स्वभाव का हिस्सा हैं।
बाकी नारी सशक्तिकरण तो बस एक झूठा किस्सा है।

चन्द्रशेखर शर्मा
सहायक वनस्पति सरंक्षण अधिकारी
वनस्पति सरंक्षण संगरोध एवं संग्रह निदेशालय
फरीदाबाद

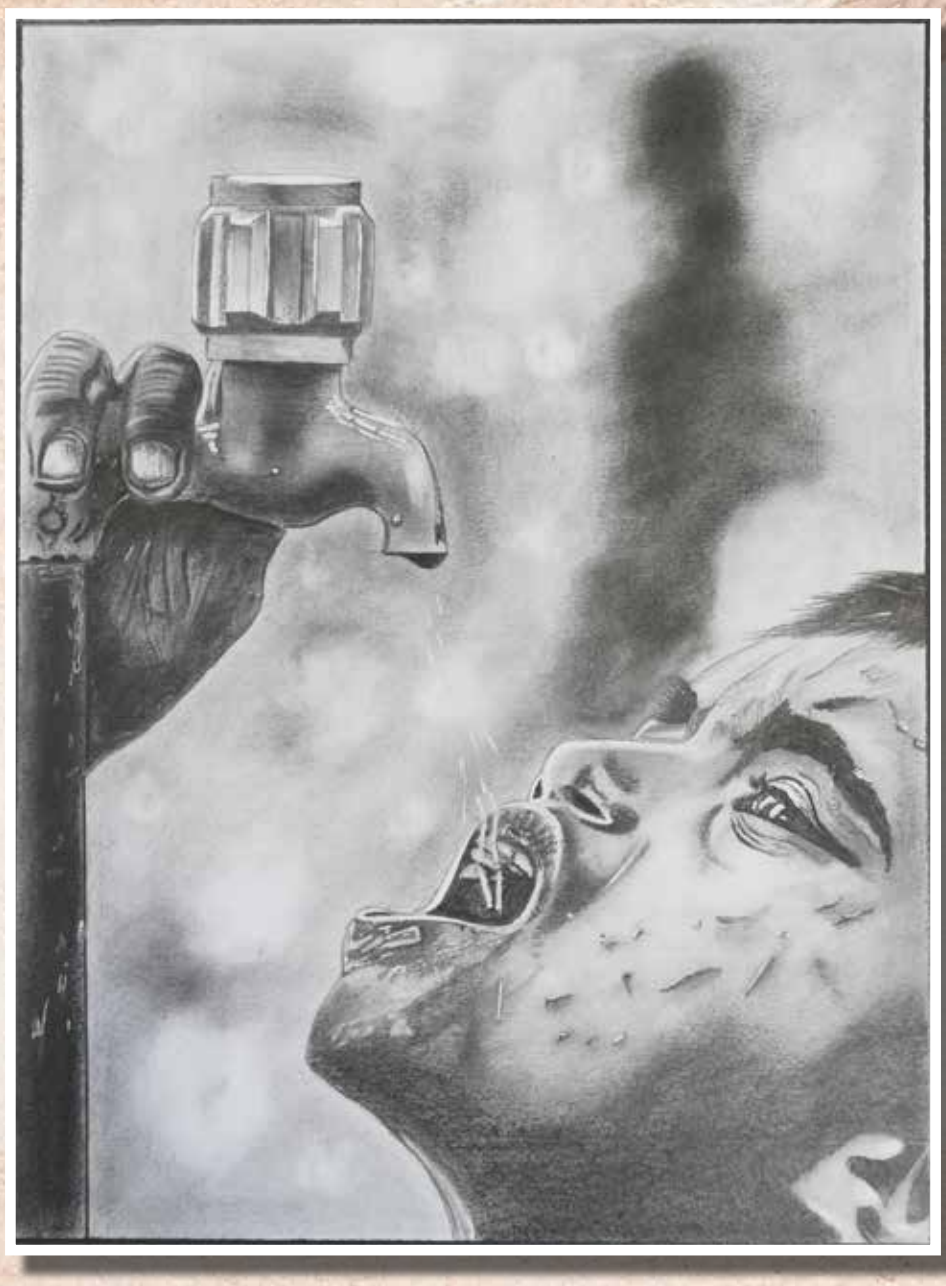

विपणन एवं निरीक्षण निदेशालय, फरीदाबाद में कार्यरत श्री सागर शर्मा द्वारा रचित कलाकृति

जीवन का हर कर्म समर्पण हो जाता है,
आस्था का आप्लवन एक संशय के कल्मष धो जाता है,
क्योंकि तुम हो।

कठिन विषमताओं के जीवन में,
लोकोत्तर सुख का स्पंदन मैं भरता हूँ,
अनुभव की कच्ची मिट्टी को तदाकार कंचन करता हूँ,
क्योंकि तुम हो।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

एनएचपीसी
NHPC
एक नवरत्न कंपनी

स्वहित एवं राष्ट्रहित में ऊर्जा बचाएं / Save Energy for Benefit of Self and Nation
बिजली से संबंधित शिकायतों के लिए 1912 डायल करें / Dial 1912 for Complaints on Electricity

हरित ऊर्जा में निहित शक्ति

www.nhpcindia.com @nhpcltd @NHPCIndiaLimited nhpclimited NHPC Limited NHPC Limited

Designed and Printed by: Viba Press Pvt. Ltd. -9810049515